अनाथ

(मध्य एसियामें सोवियत क्रान्ति की एक झलक)

(मूल ताजिकसे अनूदित)



राहुल सांकृत्यायन

Anath (Novel) Rahul Sankrityayan

प्रथम संस्करण, १९४८
चतुर्थ संस्करण, १९७७

प्रकाशक—किताब महल, १५, थार्नहिल रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक—ईगल आफसेट प्रिन्टर्स, इलाहाबाद।

अनुवादककी ओरसे

'अनाथ' ऐनीका एक छोटा उपन्यास है जिसे उन्होंने बालकोंके लिए मुख्यत ताजिक और उज्बेक बालक-बालिकाओंके लिए लिखा है जिनके प्रजातन्त्र अफगानिस्तानकी सीमा पर पडते है। १९१७ की क्रान्ति से १३-१४ वर्ष बाद तक यह सीमान्त बहुत अशान्त रहा। जब अमीर बुखाराका तख्त डगमगाने लगा और सदियोंके शोषित उत्पीडित अपने निष्ठुर शोषकोंके विरुद्ध उठ खडे हुए तो धर्म डूबा का नाम लेकर देशमें आग लगाई गयी, बच्चा बूढ़ोंकी निर्मम हत्यायें की गयी, गाँवके-गाँव जला दिये गये धर्म-योद्धा और गाजी बनकर अत्याचारियों ने धर्मके नाम पर जनता पर हर तरहका जुल्म किया। इन अत्याचारोंका विस्तृत वर्णन एनो ने अपने बड़े उपन्यासों दाखुन्दा "और "जो दास थे' (गुलामों) मे किया है। यहाँ भी उन अत्याचारोंका सक्षिप्त वर्णन आया है। ऐनीकी पुस्तक मुख्यतया सीमान्तके तरुण तरुणियोंको यह हृदयस्थ करानेके लिए लिखी गयी है कि मातृभूमिकी सीमा रक्षाके लिए उन्हे कितना सजग रहनेकी आवश्यकता है। लेखकको कभी ख्याल भी नही आया होगा कि उसकी यह पुस्तिका स्वतन्त्र-भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दीमे अनूदित होगी।

हमारे पाठकोंका इस पुस्तिका द्वारा कितना मनोरजन होगा इसे तो पाठक ही बतलायेंगे, लेकिन उनकी आँख इससे जरूर खुलेगी और वह समझेंगे कि शोषक-वर्ग धर्मान्धताका कहाँ तक आश्रय ले सकता है।

अमीर और उसके पिट्ठुओंको देश छोडकर अफगानिस्तान भागना पडा। अफगानिस्तानका एक तटस्थ देशके तौर पर कर्तव्य था कि वह अपनी भूमिको मध्य एशियाकी नयी शक्तिके विरुद्ध युद्धकी तैयारी का अखाडा न बनने देता, लेकिन यह नही हुआ। सोवियत मध्य एशिया के भगोडे हथियार जमा करते थे आदमी तैयार करते थे और

कि ऐनो सोवियत मध्य-एशियाके प्रेमचन्द है। विशेष जिज्ञासा रखने वालोंके लिए यहाँ उनके बारेमें हम कुछ और देते हैं। मेरे कहने पर उन्होंने अत्यन्त संक्षेपमें अपनी जीवन-घटनायें लिख भेजी थीं जिन्हें मैं यहाँ उद्धृत करता हूँ—

'मैं १८७८ में बुखारा जिलेके गिजदुवान तहसीलके साक्तारी गाँवमें एक गरीब किसानके घर पैदा हुआ। बारह सालकी आयुमें अनाथ हो गया। बड़ा भाई (हाजी सिराजुद्दीन ख्वोजा) बुखारामें पढ़ रहा था। उसने मुझे अपने साथ कर लिया। मैं वहाँ पढ़नेके लिए काम करता और पढ़ता रहा। मदरसा आलिमजानमें एक साल चौकीदारीका भी काम किया। १९०५ में अध्यापकी करते समय मकतबोंके लिये पाठ्य पुस्तकें लिखता रहा। १९१५-१६ में एक साल किजिल तप्पाके कपासके कारखानेके कटाईके आफिसमें काम किया।

"१९१६ में बुखाराके एक मदरसेमें मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) नियुक्त हुआ। १९१७ के राष्ट्रीय आन्दोलन या फरवरी क्रान्तिमें अमीरके विरुद्ध भाग लिया। १६ अप्रैलको गिरफ्तारकर मुझे ७५ कोड़े मारे गये और "आबखाना" नामक जेलमें डाल दिया गया। रूसी क्रान्तिकारी सेनाने मुझे जेलसे निकालकर कगानके अस्पतालमें रख दिया, जहाँ ५२ दिन रहकर स्वस्थ हुआ। १७ जून (१९१७) को समरकन्द आया। तबसे आजतक समरकन्द नगर मेरा निवास स्थान है।

'मार्च १९१८ में कोलिसोफके सैनिक आक्रमणके समय मेरे छोटे भाईको—जोकि मुदर्रिस था—पकड़वाकर अमीरने मरवा दिया। १९१८ से सोवियतके कालेजमें पढ़ने लगा। साथ ही १९१७-२१ तक समरकन्दके दैनिक और मासिक पत्रोंमें साहित्यिक सम्पादकका भी काम करता रहा। बुखाराकी क्रान्तिमें भाग लिया और अमीरके विरुद्ध जनताको भड़काया। १९२२ में मेरे बड़े भाई (सिराजुद्दीन) को साक्तारी गाँवमें बासमचियों (मजहबी डाकुओं) ने मार डाला। १९२१ के

अन्तस १९२३ तक सोवियत जन-प्रजातन्त्र बुखाराके वकील (गवर्नर) के नायबके तौरपर समरकन्दमे काम करता रहा ।

'१९२३ के अन्तसे १९२५ तक समरकन्दमे सरकारी व्यापारका डायरेक्टर (सचालक) रहा । फिर १९२६-३३ तक तिर्मिज मे साहित्यिक और आनुसधानिक डायरेक्टरका काम करता रहा । सितम्बर १९३३ मे ताजिक सरकारने मुझे पेन्शन देकर कामसे छुट्टी दे दी, ताकि मैं घरपर रहकर स्वतन्त्रतापूर्वक अपना साहित्य और अनुसधान सम्बन्धी काम कर सकूँ ।

१९३५ से मैं उज्वेकिस्तानके ऊँचे शिक्षणालयों—उज्वेक सरकारी यूनिवर्सिटी (समरकन्द), समरकन्द ट्रेनिंग कालेज, ताशकन्द ट्रेनिंग कालेज ताशकन्द ला-कालेज, मध्य-एशिया यूनिवर्सिटी (ताशकन्द) के एम ए डाक्टर-उम्मीदवार और डाक्टरकी परीक्षाओंका परीक्षक तथा सलाहकार होता हूँ । इस वक्त मध्य-एशिया यूनिवर्सिटीके डाक्टर-विद्यार्थी इब्राहीम मोमिनोफ उज्वेक यूनिवर्सिटी के डाक्टर-विद्यार्थी वाहिद अब्दुल्ला, डाक्टर उम्मीदवारके विद्यार्थी मिर्जाजादा तथा ताशकन्द ट्रेनिंग कालेजके एम ए विद्यार्थी मरदन शरीफजादा और सदारत अयूबजानोफ मेरी देख-रेखमे अपने निबन्धोंके बारेमे अनुसन्धान कर रहे हैं ।

'१९२३ मे मैं ताजिक सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्रकी केन्द्रीय समितिका मेम्बर चुना गया । १९२९-३८ तक मैं उसका मेम्बर रहा । १९३१ म ताजिक सरकारने मुझे 'लाल श्रम ध्वज" का पदक प्रदान किया । १९३५ मे ताजिक सरकारने एक मोटर और एक निवास गृह प्रदान किया । इसी समय उज्वेक सरकारने सनद और रेडियो दिया ।

"१९२३ मे अखिल सोवियत-लेखक-सघका मेम्बर चुना गया । १९३४-४४ तक अखिल सोवियत-लेखक सघके प्रधान-मण्डल (प्रेसीदियम्) और ताजिकिस्तान तथा उज्वेकिस्तानके लेखक-सघोंकी ऊपरी समितियोंका भी मेम्बर रहा । अप्रैल १९४१ मे सोवियत-सरकारने

"लेनिन-पदक" प्रदान किया। १६४३ मे उज्वेक साइन्स-अकादमी का माननीय-सदस्य निर्वाचित हुआ। (युद्ध समाप्ति के बाद) "हिम्मत-के कामके लिए" पदक मिला। १६३६ मे स्तालिनवादकी तरफसे सोवियत पार्लियामेंटका मेम्बर चुना गया। २६ अक्टूबर १६४० मे "ताजिकिस्तान-सोवियत-समाजवादीप्रजातन्त्रका सम्मानित साइन्सी नेता" की उपाधि मिली। अक्टूबर १६४६ मे उज्वेक यूनिवर्सिटी (समरकन्द) की साहित्य-फ़ेकल्टीका डीन (अध्यक्ष) बनाया गया।"

(समरकन्द) २३ अप्रैल, १६४७ 'ऐनी'

इस संक्षिप्त पत्रसे ऐनीके जीवनके बारेमे कितनी ही बाते मालूम हो जाती है। ऐनीका लड़कपन बहुत कष्टका जीवन था। उस समय स्कूलोंके नामपर मसजिदोमे मकतब हुआ करते थे, जहाँ लड़के पढते कम, और मुल्लाके डंडे ज्यादा खाते थे। ऐनीने अपने मकतबके बारे-मे एक छोटी पुस्तक लिखी है, जिसमे एक जगह बतलाया है—"६ सालकी उम्रमे माँ-बाप मुझे ममजिदके मदरसेमे ले गये—मदरसेका मकान केवल ६ × ६ वर्ग गजका था, जिसे लकडीके कटघरोसे ६ भागो मे बाँट दिया गया था। विद्यार्थी इन्ही ६ कटघरोमे ढोरोकी तरह बैठते थे। मुल्लाका डंडा सदा सिरपर तैयार रहता था। विद्यार्थी बिना-समझे कुरानकी आयतोको जोर-जोर से दुहराया करते थे। मैंने अपने जीवनमे दो स्वतन्त्रताओंका अनुभव किया है, जिसमे एकको ४२ सालकी उम्रमे, जबकि ७५ कोड़े खाकर जेलमे पड़े रहनेपर मुझे छुड़ाया गया, और दूसरी ३६ साल पहले ६ सालकी आयुमे, जबकि मुझे मकतब न जानेकी आज्ञा मिल गयी। मैं नही कह सकता, दोनोमे किसको मैंने अधिक पसन्द किया।"

१२ सालकी उम्रमे ऐनी भाईके साथ बुखारा चले गये। बुखारा सातवी सदी से ही इस्लामी दुनियाका एक बहुत बड़ा शिक्षा-केन्द्र रहता चला आया था, जबकि बनारसको यह सौभाग्य चार सदी बाद मिला। इस्लामी विद्याकी दृष्टिसे बुखाराका वही स्थान था, जो हिन्दुओंके लिए

बनारसका। अमीरकी राजधानी और सरदारों तथा धनियों का निवास-स्थान होनेसे जहाँ एक ओर विलासमें पैसा पानीकी तरह बहाया जाता था तो दूसरी ओर भारी सख्यामें लोग असह्य दरिद्रता भोग रहे थे। एक ओर सैकड़ो वर्षसे स्थापित बड़े-बड़े मदरसोंमें प्राचीन विद्याके कितने ही धुरंधर विद्वान् विद्या-दान कर रहे थे, तो दूसरी ओर घोर अज्ञानान्धकार छाया हुआ था। कुछ नौजवानोंको तुर्कीके "नौजवान तुर्क" की हवा लगी थी और वह अमीरकी निरकुशताको हटानेकी बात सोचने लगे थे लेकिन बुखारा सिर्फ एक निरकुशताके नीचे दबकर कराह नही रहा था। उसके ऊपर सबसे बड़ी निरकुश जारशाहीकी छाया भी फैली हुई थी। तुर्कीकी देखा-देखी बुखारामें भी "जदीद" (नवीनता वादी) आन्दोलन भीतर ही भीतर शुरू हुआ। ऐनी और उसके भाई आन्दोलनके सस्थापकोंमें से थे, इसी कारण दो भाइयोको बलि चढ़ना पड़ा।

बासमची ऐनीका तो कुछ नही बिगाड़ सकते थे, क्योंकि वह सोवियतके इलाके (समरकन्द) में रहते थे। उनके बड़े भाईको जब सातकारी गाँवमें बासमचियोने मारा, तो व चाहते थे कि उनके बाल-बच्चोका भी सफाया कर दे, लेकिन सातकारीके खोजा (सैयद) लोगोंका धार्मिक दुनिया में बहुत सम्मान था। उनके खानदानके बुजुर्गो की समाधियाँ पूजी जाती थी। जब गाँवके खोजा लोगोको मालूम हुआ, तो वे बासमचियोके पास गये और कहा पहले हमें मार दो फिर इन बच्चों और स्त्रियोंको हाथ लगाना। बासमचियोंकी इतनी हिम्मत न हुई। इस तरह खानदान बाल-बाल बच गया।

ऐनी ग्रन्थ ही नही लिखते रहे है, बल्कि पच-वार्षिक योजनाओंके समय जगह-जगह घूमकर वहाँ होते निर्माणके सम्बन्धमें पत्रोंमें लेख लिखते रहे हैं। इन निर्माणोंमें वक्षु-उपत्यकाकी नहर और बिजलीके कारखाने भी सम्मिलित है। ताजिक नौजवानो की दूसरी पीढ़ीके निर्माणमें ऐनीका खास हाथ रहा है। लेखक और कवि अपनी कृतियोंके

हस्तलेखोंको उनके पास भेजते है और वह उन्हें परामर्श देते है
वे चुनावमे ऐनी ताजिक पार्लियामेंटके मेम्बर चुने गये।

ऐनीके उपन्यास 'दाखुन्दा' (हिन्दी अनुवाद छप चुका है) के बारेमे लिखते हुए दयाकोफने कहा है "सदरुद्दीन ऐनीका उपन्यास 'दाखुन्दा' अमीरके जमानेके पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान) जीवनपर पहला सबसे बडा ग्रन्थ है। हमने ऐनीको पहले-पहल उपन्यासकारके रूपमे 'आदीना' मे देखा, लेकिन 'दाखुन्दा' दूसरी चीज है। दाखुन्दा' साहित्य-कलाकी एक बहुमूल्य कृति ही नही है, बल्कि उसका महत्त्व इस बातमे भी है कि इसमे बुखारा और ताजिकिस्तानकी सबसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और वर्गयुद्ध का चित्र खींचा गया है। 'दाखुन्दा' मे वर्णित घटनाएँ सदा अपना राजनीतिक महत्त्व रखेंगी।"

इस उपन्यासका लेखक जदीद-आन्दोलनका एक नामी व्यक्ति और बुखाराके क्रान्तिकारी आन्दोलनमे शुरूसे ही काम करनेवाला रहा है। इसलिए बुखारा-क्रान्तिकी घटनाओंका विवरण उसके मुँहसे सुनना, उसकी कलमसे पढना एक खास महत्त्व रखता है।

'ऐनी यद्यपि उन व्यक्तियोंमेसे है, जिन्होंने बुखारामे जदीद-आन्दोलनकी नीव डाली, लेकिन वह जदीदो और उनके आदर्शोंका रंगीन चित्र नही खीचता, बल्कि जदीदोंके असली चित्रको बिलकुल तटस्थताके साथ घटनाओंके आधारपर पाठकोंके सामने रखता है। ऐनीने 'दाखुन्दा' मे कलापूर्ण किन्तु सीधी-सादी भाषामे बतलाया है जदीद मध्यमवर्गके सुधारक-समुदायके प्रतिनिधि थे। कष्टोंसे पीडित साधारण जनतासे उनका कोई सम्बन्ध न था और न वे उनके हकोंकी हिमायत करते थे। 'दाखुन्दा' मे पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान) मे बासमचियोंका पैदा होना, अनवर पाशाका आकर उनमे मिल जाना तथा जदीदोंके अनवर तथा बासमचियोंसे सम्बन्ध को बडे विस्तारके साथ बतलाया गया है। इसलिए 'दाखुन्दा' को सिर्फ एक साहित्यिक-कलाकी कृति ही नही

समझना चाहिए, बल्कि मध्य-एशियाकी एक बहुत महत्वपूर्ण क्रान्ति की ऐतिहासिक कृतिके तौरपर देखना चाहिए।"

१६ नवम्बर १९३५ को स्तालिनवाद और दूसरी जगहोंमें ऐनीकी लेखक-जीवनकी तीससाला जुबली मनायी गयी। उसमें ताजिक सरकारके एक मन्त्रीने भाषण देते हुए कहा

'सामन्तशाही प्राचीमें रूदकी, फिरदौसी, सादी, उमर-खैयाम, हाफिज—जैसे कितने ही महान् विचारक और साहित्यकार पैदा हुए, लेकिन यद्यपि वे फाँसीपर चढ़नेसे बच पाये, तो भी हमेशा उन्हें कष्ट दिया जाता रहा या वे देश-निर्वासित रहे। विश्व-कवि और दार्शनिक नासिर खुसरोकी एक जीवन-घटना इस प्रकार है। एक दिन वह नेशापुर नगरमें पहुँचे। दूरसे पैदल चलकर आये थे, इसलिये जूते फट गये थे। उन्होंने उन्हें सीनेके लिए मोचीको दे दिया। इसी समय शहरमें हो-हल्ला मचा। मोची अपने हथियारोंके साथ उस तरफ भागा। घंटा भर बाद अपने रक्त-रंजित उदर-आवरकके साथ लौट आया। 'वहाँ क्या बात थी।—नासिर खुसरोने पूछा। मोचीने जवाब दिया—'एक अधर्मी अनीश्वरवादी आदमी—जिसका नाम भी लेनेसे पाप होता है—का शिष्य हमारे नगरमें आया है।' कविने आग्रहपूर्वक पूछा—'जैसे भी हो, उसका नाम बताओ।' मोचीने जवाब दिया—'उस पापी का नाम नासिर खुसरो है। अभी धर्म-युद्ध घोषित हुआ और उसके शिष्यकी बोटियाँ-बोटियाँ उड़ा दी गयी। मैं जरा देरसे पहुँचा और सिर्फ अपने उदर-आवरकको ही उसके खूनसे तर कर पाया। इसमें भी पुण्य है, मगर उतना नहीं।' 'बहुत ठीक'—कविने उत्तर दिया, किन्तु इस घटनाको सुनकर उसका दिल काँप गया। वह सोचने लगा, यदि लोग मेरे शिष्यके साथ ऐसा कर सकते है, तो जान पानेपर मेरी क्या गत बनायेंगे? वह एका-एक अपनी जगहसे उठा और चिल्लाकर बोला, 'नहीं, मैं इस नगरमें नहीं ठहर सकता, जहाँ ऐसे पतितके शिष्य रहते है।' और वह बिना जूते लिये

नगरसे नगे पाँव चला गया। यह था सामतशाही प्राचीन महान कलाकारोंके साथ बर्ताव।

आदीना" (ऐनीका प्रथम उपन्यास) ताजिक साहित्यका यदि पहला उपन्यास है, तो सनरुद्दीनका दूसरा उपन्यास दाखुन्दा' निश्चय सवश्रेष्ठ ग्रथ है। एनीका नया उपन्यास जो दास थे' (गुलामान) इतिहासके एक भागका बहुतही ज्ञानपूर्ण चित्रण है और शुरूसे लेकर प्रजातन्त्रमे कनखोजोकी स्थापना और नये जीवनके निर्माणतक पाठक को ले जाता है। ऐनीकी क्या विशेषता है? ऐनी किस तरह का श्रेष्ठ लेखक है? सबसे पहला और बडा काम ऐनीका है लम्बे ऐतिहासिक काल मे भीतर आ घुसे अरबीके शब्दोसे ताजिक भाषाको शुद्ध करना। इसीलिए सर्व-साधारणके लिए सरल उनकी पुस्तकोसे जनताने भारी सख्यामे लाभ उठाया।

ताजिक सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्रकी केन्द्रीय कार्यसमितिके स्थायी सदस्यके तौरपर एनीने हमारे प्रजातन्त्रकी संस्कृतिके निर्माण और स्कूलोकी समस्याको हल करनेके क्षेत्रमे भारी काम किया है। हमारे माननीय गुरु सदरुद्दीन ऐनी अधिक वर्षोतक हममे रहे और शत्रुओको भयभीत कर हमारी समाजवादी जन्म भूमिकी भलाईके कायम दत्तचित रहे।"

ऐनीके जीवन का देखनेसे मालूम हो रहा है कि सोवियत शासनमे लेखको और कलाकारोके लिये कितना ऊँचा स्थान है।

राहुल साकृत्यायन

द्वितीय संस्करण

'आदीना' का यह दूसरा संस्करण ८ वर्ष बाद छप रहा है।

राहुल साकृत्यायन

प्रथम भाग

१

सन् १८२१ फरवरीका महीना था। आमू (वक्षु) दरियाके किनारे-का वृक्ष-वनस्पतिहीन समतल बयाबान निर्जीव-सा दिखलायी पड़ता था। सिर्फ दक्षिणसे अफगानी हवा सनसनाहट करती आ रही थी, जो इस निर्जीव भूमिमें मृत्युकालकी गति-सी जान पड़ती थी। हवाके साथ उड़ती धूलने काले बादलकी तरह सूर्यको आच्छादित कर रखा था और दिन-रातकी तरह जान पड़ता था। वहाँ कोई चीज दिखलायी नहीं पड़ रही थी।

अनाथकी आयु अभी बारह वर्ष भी पूरी नहीं हुई थी। उसने आँधीके आरम्भ होते ही हौज-जैसे बने भेड़खाने में बाय (मालिक) की भेड़ोंको लाकर रखा और स्वयं द्वारपर पहरा देने लगा। उस आँधीमें बाहर खड़े बच्चेकी आँख-मुँहमें बालू भर गयी। वह आँखोको हाथसे मजबूतीके साथ ढाँककर मुँहको नीचेकी ओर करके जमीनपर लेट गया।

अभी आँधी शान्त न हुई थी कि हिममिश्रित वर्षा पड़ने लगी और बच्चेके पतले और चगदा-चगदा हुई कंचुकसे होकर बूँदें उसके बदनको बेधने लगीं।

बच्चा इस यातनाको न सह सका और अपने शिरको जमीनसे उठाकर सीधे बैठ गया। बयाबानके एक किनारे, जहाँकि वर्षाके कारण गर्द और धूल साफ हो गयी थी, भेड़-बकरियोंके गिरोह, घोड़ों और पशुओंके गल्ले दिखलायी पड़े। जानवर उत्तरसे दक्षिणकी ओर, आमू

नदीकी तरफ दौडे आ रहे थे। भेडखानेमें बंद भेडोंने इन भागते मालोंके खुरोंकी आवाज सुनी तो उनमें भी हलचल मच गयी।

बच्चा डरने लगा। उसका शरीर सर्दीसे सूज गया था और अब वह भयसे काँपने लगा। वह सोचने लगा "यदि मेरे हाथमें सौंपी भेडें तूफानमें तावडतोड भागते इन जानवरोंके साथ भाग चली, तो मालिक मुझे मारे बिना न छोडेगा।"

बच्चा मदार और दूसरी झाडियोंको लेकर कूरा (भेडखाना) के मुँहको मजबूतीसे बाँधकर हाथमें चरवाहोंकी लाठी लेकर रखवाली करते हुए घूमने लगा।

भागकर आये जानवर कूराके सामने आकर उसके दोनों ओरसे निकले। कूराके भीतरकी भेडें उन्हें देखकर बाहर आनेका प्रयत्न करने लगीं, लेकिन लडकेने डंडा मार मारकर उन्हें बाहर नहीं आने दिया।

जानवरोंके निकल जानेपर उनके पीछे, भाला हाथोंमें लिये पचीस-तीस घोडसवार आये। उनमें से एक सवारने कूराके पास पहुँच घोडेसे उतरकर उसके मुँहपर रखी शाखाओं और झाडियोंको बाहर फेंक दिया और भेडोंके बाहर निकलनेका रास्ता खोल दिया। यह देखकर लडकेने उस आदमीकी तरफ निगाह करके कहा—चचा! क्या कर रहे हो! क्यों हमारी भेडोंको भगा रहे हो! यदि इनमें से एक भी गुम हो गयी, तो बाय मुझे मार बिना न छोडेगा।

आदमीने जवाब दिया—जनाब-आली (बुखाराके अमीर) बोलशेविकों (के डर) से भागकर नदी पार हो गये हैं। उनके पीछे-पीछे बाय (सेठ-जमीदार) अपने घरके निर्जीव-सजीव मालको लेकर नदी (वक्षु) पार कर गये। हम बयाबानमें रह गये जानवरोंको नदीपार करानेके लिए यहाँ थे। अब तेरी भेडोंको भी उन्हीं प्राणियोंके साथ नदी पार करायेंगे। तू क्यों डर रहा है?

भेडोंके कूरासे निकल दूसरे जानवरोंके साथ हो जानेके बाद आदमी अपने घोडेपर सवार होकर पीछे पीछे चलने लगा।

—मेरी माँका क्या हुआ होगा ? हाय मेरी मादरजान ! वह बायके पास थी। कहाँ है मेरी मैया—कहकर बच्चा रोने लगा।

तेरी माँभी नदी पार हो गयी—वहाँ पहुँचे दूसरे सवारने बच्चेसे कहा। लड़केने इस सवारकी ओर देखकर उसे पहचान लिया। वह उसके मालिकका साला शाकुल था। बच्चेको निश्चय हो गया कि उसकी माँ भी नदी पार हो गयी। उसके मन में भी नदी पार होकर माँके पास पहुँचनेकी इच्छा हुई और वह भी पशुओंको हाँककर ले जानेवाले आदमियों के पीछे पीछे चल पड़ा।

२

आमू नदीके पासवाले एक गाँवमें एशानकुल नामका एक बाय रहता था। उसके पास बहुत धरती-पानी था और उसकी खेतीमें बहुतसे मजूर काम करते थे, लेकिन उसकी आमदनीका सबसे अधिक साधन पशुपालन था। बायके नौकरों में एक मुराद भी था, जो चरवाही करता था। वह चालीसके करीब पहुँच चुका था, लेकिन अभी तक उसने ब्याह नहीं किया था—या कहना चाहिए, कि वह ब्याह नहीं कर सका था। वह बायके घरमें २५ सालसे काम करता आ रहा था, लेकिन मजूरीमें से कुछ भी बचा नहीं सका था। बायसे जो कुछ उसे मिलता था, उससे वह कठिनाईसे ही अपनी दादी फातिमा बीबी और उसकी अनाथा पोती साराके हर रोजके खानेको जुटा पाता था। फातिमा बीबी अपने पोतेकी नेकी को नहीं भूली। बायोंके खरीदकर अपनी बीबी बनानेकी इच्छा प्रगट करने पर भी उसने अपनी पाती साराको एक कटोरा पानीके बदले मुरादको ब्याहकर उसे घर-जमाई बनाया।

ब्याह होनेके बाद कभी-कभी ही वह बायका काम छोड़कर अपने घर जाता। जानेपर भी रात भर वहाँ रहकर सूर्योदयसे पहले ही स्वामीकी सेवामें आ पहुँचता।

ब्याह होनेके एक-आध साल बाद फातिमा बीबी मर गयी। उस वक्त मालिककी भेडोंको वह बयाबानमें चरा रहा था। उसे दादीके मरने की खबर मिली, लेकिन मुर्देके पास वह नहीं पहुँच सका, जिसने उसे यह खबर दी थी, उस आदमी से मालिकके पास किसी दूसरे आदमीके भेजने के लिये कहकर बहुत विनती की, ताकि वह भेडोंको सौंपकर मुर्देके पास जा सके लेकिन बायकी ओरसे कोई नहीं आया। लाचार मुराद भेडोंको हाँके बायके घर की ओर चला और सूर्यास्तसे एक घंटा पहले, अर्थात् प्रतिदिनके घर आनेके समयसे एक घण्टा पहले वह बायकी हवेलीमें पहुँचा। रशानकुल बाय हवेलीसे निकलकर शामकी नमाजके लिए मस्जिद जा रहा था। उसने चरवाहेको आता देखकर पूछा—क्यों, इतने सबेरे मालोंको लौटा लाया ?

—क्या आपको नहीं मालूम कि मेरी दादी दुनियासे चल बसी ? —मुरादने बायके जवाबमें पूछा।

—मालूम है, लेकिन इससे क्या हुआ ? एक बुढिया मर गयी, मर गयी क्या तेरे जल्दी आनेसे वह जी जायगी ? क्या उसके मरनेके कारण मेरी भेडोंको भी भूखा मारना चाहता है ?—बायने गर्म होकर कहा—मेरी एक-एक भेड तेरी दस-दस बुढियों से बढकर है।

मुरादने बायकी इन बातोंका जवाब नहीं दिया, लेकिन भेडोंको हवेलीके भीतर करते समय वह बुदबुदाया—तेरी भेडें तो दूर, तेरे जैसे बायोंके मां सिरोंको भी अपनी मृत दादीके एक केश के बदले नहीं लूँगा।

मुरादने भेडोंको उनकी जगह कर दिया और प्रतिदिन जो बायके घर रोटी-पानी मिलता था, उसे भी खाये बिना दादीके घरकी ओर दौड पडा।

फातिमा बीबी को दफनानेके बाद दूसरे दिन मुरादने उस गाँव को बिलकुल छोड देनेका निश्चय किया, क्योंकि उसका मन नहीं मानता था कि वह अपनी जवान बीबीको मालिकके घरसे दूसरे एक

गाँवमें रख छोड़े। उसे अपनी स्त्रीपर पूरा विश्वास था, लेकिन लुटेरोंसे डरता था। इसलिये दादीके जमा किये कपड़े-लत्ते और सामानकी पोटरी बाँधे, अपनी स्त्रीको लिये बायके गाँवमें आया। वहाँ गाँवके एक कोनेमें एक बेमालिकका टूटा फूटा घर था। उसे कुछ ठीक-ठाक कर, मेहरियाको वहाँ रखकर फिर पहलेकी तरह मुराद बायकी सेवामें जाने लगा।

× × ×

बायको अपने मध्यमवयस्क नौकरकी तरुण स्त्रीको देखनेकी इच्छा हुई। उसने उससे कहा—तेरी स्त्री मेरी बहू-जैसी है। बहूके स्वागत के लिये मुझे कुछ करना चाहिये। मैं उसका आतिथ्य करूँगा।

दूसरे दिन सबेरे मुराद अपनी स्त्रीको मालिकके घरमें रखकर भेड़ोंको चराने ले गया।

बायकी स्त्रियोंने साराको घरमें लाकर बड़ा भोज भाज किया। जिस घरमें उसे बैठाया गया, वह बायकी छोटी स्त्रीकी कोठरी थी किन्तु उसके स्वागतके लिये सबसे अधिक कोशिश बायकी बड़ी स्त्री कर रही थी। पाहुनीके सामने तरह-तरहकी चीज रखकर उसे खिलाया गया। बायकी बड़ी स्त्रीने अपने हाथसे मासखंडको लेकर उसके हाथमें दिया, रोटीके ऊपर मक्खन डाला, और ठंडी चायको फेंककर गरम चाय भरकर प्याला उसके सामने रखा।

लेकिन सारा इस सारी आवभगत और सम्मानसे अलग रही, मानो सचमुच ही वह नयी नवेली बहू हो। वह सिर नीचा किये बैठी रही। हाँ, नयी बहुओंकी तरह घरके मालकिनोंको हर एक बातमें अपनी जगहसे उठकर सलाम नहीं करती थी। उसने बहुत कम खाया। स्वामि-पत्नीके मासखंडको भी सम्मान प्रदर्शनके लिये उसने हाथ से लेकर शिर झुकाकर धन्यवाद दिया, किन्तु उसे खाये बिना रोटीके ऊपर रख

दिया। स्वामि-पत्नीने तीसरी बार ठडी हुई चायको फेंककर प्यालेमे फिर गरम चाय डाली, लेकिन साराने एक भी प्याला ओठसे नही लगाया और भोजनके अंतमे दस्तरखानके कोनेमे रखे पानीके कटोरेसे दो घूंट पिया।

भोजन समाप्त होनेके बाद दस्तरखान (परोसनेकी चादर) के लिये फातिहा (कुरानका एक मत्र) पढा जाने लगा। इसी समय "हमदम!" की आवाज आयी।

यह आवाज बायकी थी। जिस समय बीवियाँ छोटी बीवीकी कोठरीमे साराका आतिथ्य कर रही थी, उस वक्त बाय बडी बीवीकी कोठरीमे बच्चेके साथ खाना खा रहा था। आवाज सुनते ही बडी बीवी "जी हाँ, अभी आयी" कहकर अपनी जगहसे उठकर पतिकी ओर दौडी।

हमदम बायकी बडी बीवीका नाम न था। उस समय पति अपनी स्त्रियोका नाम लेकर नही पुकारते थे, क्योंकि स्त्रीके मुँहकी तरह उसके नामको भी छिपाना जरूरी समझा जाता था। यदि नाम पुकारा जाता, तो बेगाना आदमी सुन लेता। इतना ही नही, वह दीवार और घरको भी बेगाना समझकर वहाँ भी बीवीका नाम नही पुकारते थे। स्त्रीका नाम केवल दो बार लिया जाता था और वह भी दमुल्ला इमाम (पुरोहितजी) की ओरसे एक बार निकाह (ब्याह) की रातको, और दूसरी बार उसके मरनेके दिन जब कि मुल्लोको दान देकर जिन्दगी भरके पापोको बेचा जाता था।

"हमदम" बायके लडकेका नाम था, जो बडी बीवीके ब्याहके आनेपर पैदा हुआ और बचपन हीमे मर गया था। बायइसी नामसे हमदमकी माँको पुकारा करता था। पीछे जब छोटी बीवीसे शादीकी, तो उससे अलग करनेके लिये भी वह उसे उस नामसे पुकारने लगा। छोटी मेहरियाको जब बेटवा पैदा हुआ, तो उसका नाम इस्तम् रखा और तबसे छोटी बीवीको "इस्तम्" कहकर पुकारने लगा।

बायकी बडी बीबी हमदम पतिके हाथमे मिठाई देखकर उसे ले लौट आयी और सारासे बोली—"तेरे चचाने अब तक किसीको अपनी मिठाईमे से नही दिया था। उन्होने कहा है कि इसे बहूको देकर मेरे सामने ले आ कि मैं उसकी मुँहदिखाई करूँ।"

साराने बायकी इस अकारण कृपाके बारेमे कुछ नही कहा और न उसके चेहरेपर प्रसन्नता या अप्रसन्नताका कोई भाव ही दिखलाई पडा, किन्तु बायकी छोटी बीबीकी अवस्था दूसरी हो गयी, वह तिरछी निगाह किये अपनी सौतकी ओर देखने लगी। बडी बीबी इसका अर्थ समझती थी, तो भी अनजान बनकर उसने मिठाई डाल दी प्यालोमे और चाय बनाकर एक प्याला सौतके सामने और दूसरा साराके सामने रखा।

—मैं चाय नही पीती—छोटी बीबीने गर्म होकर कहा—बहूको दो —चचाने मिठाई इसके लिए भेजी है।

—अच्छा, तुम पीती नही हो तो मैं पीती हूँ—कहकर बडी बीबीने सौतके सामने से मीठी चाय लेकर और भी कहा—चचाने बहूके लिये मिठाई भले ही भेजी हो, किन्तु कहावत नही सुनी है "शालीकी बदौलत घास भी पानी पा जाती है।"

—लेकिन मैं तुम्हारी तरह घास नही हूँ, मैं धान हूँ, "फले फूले धानकी तरह खडी हूँ" —कहते छोटी बीबीने गुस्सा होकर अपने मुँहको दीवारकी तरफ फेर लिया और दीवारपर लटकते दर्पणपर दृष्टि डाल अपने अश्रुपूर्ण मुखको निहारती आँखकी कोरसे साराकी ओर देखने लगी, लेकिन सारा उससे अधिक अल्पवयस्का और सुन्दरी दीख पडी, इससे उसका क्रोध चिन्तामे बदल गया। वह साराकी ओरसे दृष्टि हटाकर चिन्तित भावसे नाखूनकी नोकसे घरमे बिछे गिलमलकी कुरेदने लगी।

—ख्याल रखना कि फलते-फूलते मडगिल्ला न बन जाना—बडी बीबीने सौतके क्रोधपर व्यग्य करते हुए कहा।

दोनों सौतोंका मौखिक द्वन्द्व बढ़ते-बढ़ते हाथापायीपर पहुँच रहा था। इसी समय "हमदम, बहूको जल्दी से ला" कहकर बायने आवाज दी और झगड़ा वहीं खतम हो गया।

"अच्छा, आती हूँ" कहकर बड़ी बीबीने अपनी जगहसे उठकर फिर जरा झुककर साराके सामने ठंडी पड़ी चायको एक घूँटमें पी डाला और "उठो बहू, अपने चचाको बहुत प्रतीक्षा न कराओ" कहकर साराका हाथ पकड़ जबर्दस्ती घसेलते हुए अपने पतिके सामने ले गई।

उन दोनोंके चले जानेके बाद "मुझे दबाना चाहती है" कहते हुए छोटी बीबीने उठकर दर्पणके पास जाकर अपने मुख, केश, आँख और भौंहको एक बार अच्छी तरह देखा और अपनेको तसल्ली देते हुए कहा—ये नहीं कर सकती।

इसी समय इस्तम्ने "आचा! दादाके पास जगा (भाभी) बैठी है" कहते हुए घरमें आकर छोटी बीबीके ध्यानको दर्पणसे हटा दिया। उसने इस्तम्की ओर निगाह करके कहा—वह जगा नहीं है, वह भी तेरी आचा बनेगी।

—वह गन्दी है, वह मेरी माँ नहीं बनेगी—इस्तम्ने नाराज होकर कहा।

अपने बेटेके मुँहसे साराके लिए "गंदी" शब्द सुनकर छोटी बीबीको कुछ संतोष हुआ और इस्तम्को गोदमें लेकर मीठी चायकी चायनिकके पास बैठकर उसे प्यार करते हुए सोचने लगी "मैं ब्याहता बीबी हूँ। मेरा पुत्र उसकी प्रिय संतान है। चाहे वह कैसा भी कामान्ध हो, किन्तु मेरे सामने भुक्खड़की लड़कीसे कैसे प्रेम कर सकता है?"

छोटी बीबीने इन बातोंसे अपने दिलको तसल्ली देकर चायनिक (चायदानी) में बची मीठी चायको दो प्यालोंमें डालकर एकको स्वयं लेकर दूसरेको इस्तम्के हाथमें दिया।

बड़ी बीबीने साराको बायके सामने लाकर कहा—अपने चचा बायको सलाम करो।

सारानें अपनें शिरको झुकाकर, मुंहको अपनी आस्तीनसे छिपाकर शिर हिलाने के सकेतसे बायको सलाम किया।

बायने मुस्कुराते हुए साराकी ओर निगाह करके कहा—विराजो, मेरी वहू !

बायके इस कहनेपर भी सारा अचल रही, किन्तु बायकी बीबीने उसे जोरसे दवाकर बैठा दिया। बैठते वक्त सारा, जहां तक हो सका, बायसे दूर दीवारके पास बैठी और दाहिनी जानुको भूमिपर रखकर बायें जानुको उसके ऊपर झुकाया और दाहिने हाथको लिलारपर रखकर मुंहको दीवारकी तरफ आधा झुकाये बैठ रही। बायने बहुत देखनेकी कोशिश की, किन्तु वह साराके मुंहको ठीकसे नही देख सका, क्योंकि उसने मुंहका एक भाग दीवारकी तरफ था और दूसरा हाथ की आस्तीन से छिपा हुआ था।

बायने पास मे बैठे अपने तीनसाला पुत्र इस्तम्को उठाकर साराकी ओर निगाह करके कहा, "जा जगाके पास, वह तुझे चुम्बन देगी।"

बच्चा शर्माते शर्माते साराके पास गया, किन्तु उसने उसे चुम्बन न दिया, न उसे हाथमे लिया, न ही उसकी ओर ताका। बच्चा बापकी ओर निगाह करके खड़ा रहा, मानो वह पूछना चाहता था कि उसकी इस हरकतपर अब उसे क्या करना चाहिए।

—जा मेरे बच्चे ! अपनी माँके पास। वह तुझे अपना चुम्बन देगी —बायने कहा। बच्चा दौडकर घरसे बाहर चला गया।

बायने एक चौपर्त गुलनारी रूमालको बालिशपरसे उठाकर साराकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "ले, बेटी, इस रूमालको। यह मेरी ओरसे तेरी मुंह-दिखाई है।"

साराने मानो बापकी बात ही नही सुनी। वह न बोली, न हिली, न डुली।

बाय अपनी जगहपर जानुके बल हुआ और अपने ऊर्ध्वकायको साराकी ओर झुकाकर हाथके रूमालको उसके पास ले जाकर

बोला—"मेरी प्यारी बिटिया, मधुर-प्राण ! ले इस रुमलियाको, ले मुँह-देखाई।"

अबकी बार साराने मुँहको दीवारके और भी नजदीक करके शरीर को दीवारसे चिपकाकर आँखोंसे बायको ओर देखा। वह सियारदेखे मुर्गेकी तरह वैसे ही निश्चल खडा रहा।

बाय किंकर्तव्यविमूढ हो गया। यदि अब भी साराके और नजदीक होकर उसके हाथमे या बगलमे जबर्दस्ती रूमाल रखें और वह खडी हो-कर भाग जाय, तो क्या होगा ? बाय स्वय उसके पास जाकर और मिन्नत करनेके लिये तैयार न था, क्योंकि नौकरकी बीबी और किसी मुक्खडकी लडकीसे तिरस्कृत होनेको वह अपमान समझता था।

लेकिन बाय-पत्नी ने इस कठिन समयमे सहायता की। उसने सारा को अपनी जगह से उठाकर कहा

—जा अपने चचा बायके हाथसे रूमाल लेकर धन्यवाद दे और उसे अपने घर ले जाकर होनेवाले अपने पुत्रके लिये 'मेरा पुत्रभी बाय चचाकी तरह धनी होवे' की अभिलाषा कर।

साराने लज्जासे लाल होकर बायके हाथसे रूमाल ले लिया और घरसे निकलकर उस कोठरीमे गयी, जिसमे उसकी मेहमानी की गयी थी।

पहले तो बायने साराको ठीकसे नही देखा था, किन्तु हाथसे रूमाल लेते वक्त उसने उसे ध्यानसे देखा उसकी आँखें और भौहे काली, पलकें लम्बी और ऊपरकी ओर कुंचित बाल, लम्बे काले, बारीक मीढोंमे बँटे, और सेब जैसा लाल मुख देखकर बाय चकित रह गया। अपने पुराने वस्त्रोमे सारा उसे बालू मिटटीके भीतर पडे सुवर्ण-खडकी तरह चमकती जान पडी। उसका प्रकाशपूर्ण मुख काले बालोके भीतर अधसे अर्ध-आच्छादित पूर्ण चन्द्रकी तरह शोभित था। काली भौंहोके नीचे उसकी चमकीली आँखें भिनसारके अँधेरेमें चमकते शुक्र तारेकी तरह थी और देखनेवालेको मुग्ध किये बिना नहीं रह सकती थी।

× × × ×

स्वागतके दिनसे ही बाय साराको हाथमें करनेके लिए प्रयत्न करने लगा। इस काममें जौवियोकी प्रतिद्वन्द्विताने सहायता की। जबसे बायने छोटी बीबीसे व्याह किया था, तबसे बडी बीबी उसके मनसे उतर गयी थी। अपने रूप-सौन्दर्यसे आकृष्टकर छोटी बीबी अपने पति द्वारा सौतको खूब कष्ट दिलाती और स्वयं भी झगडती रहती। लडने-भिडनेमें बडी बीबी अपनी सौतसे पीछे नही थी, लेकिन छोटी बीबी पति से शिकायत करती और वह उसकी ओरसे बडी बीबीको फटकारता और कभी-कभी मारता भी।

अब बडी बीबीको सौतसे बदला लेनेका मौका मिला। वह किसी दूसरी तरुणीके बीचमे पडकर बायसे सम्बन्ध कराना चाहती थी, ताकि वह स्त्री उसकी सौतको पीडा दे, अपनी तरह शत्रुके दिलको भी जलाये। बडी बीबीकी इच्छा-पूर्तिके लिये साराका आना बहुत अच्छा था। उसने बायकी दुष्ट इच्छापूर्तिका भार अपने ऊपर लिया और स्वागतके दिन साराके हाथमे रूमाल दिलाना उसका पहला कारनामा था। उसके बाद पतिसे सलाह करके साराको फँसानेका प्रयत्न उसने फिर शुरू किया।

वह प्रतिदिन साराको बुलवाकर घरके कामोमे मदद लेती। बीच मे चाय पीनेकी छुट्टीके समय मौका पाकर बायकी प्रशंसा करती—बाय शुद्ध हृदयसे स्त्रियो और लडकियोंसे स्नेह रखता है। विशेषकर साराके प्रति वह पैतृक वात्सल्य रखता है। यह कहते हुए वह साराको नसीहत देती कि वह बायसे न शरमाये। वह उसके हृदयको जाननेकी कोशिश करती। इसी तरह वह एक दिन नसीहत दे रही थी।

—यदि बाय तेरे साथ कोई दूसरी इच्छा रखता तो क्या मैं अपने घर में तुझे आने देती? कौन ऐसी स्त्री है, जो अपने पतिसे अनुचित सम्बन्ध स्थापित करने का दूसरी स्त्रीको मौका देगी?

बडी बीबी जो रास्ता तैयार कर रही थी, उसीके अनुसार बाय दोस्ती और मेहरबानी करके बातचीत करता और बातको कभी-कभी

हँसी-मजाक तक पहुँचा देता। बड़ी बीबीकी बातोंको सुनकर सारा बायकी ओरसे कुछ-कुछ शंकारहित हो चली थी, लेकिन छोटी बीबीके व्यवहार से उसका सदेह दूर नहीं होने पाता था। वह हर समय सारा-पर व्यग्य करती और बायके घरमें आने-जानेके लिये उसे कभी-कभी सीधे-सीधे फटकारती। सचमुच छोटी बीबीका बर्ताव साराके साथ एक सौत-जैसा था।

कुछ समयतक सकेतसे बातचीत करते बायने अपने भावको सीधे खोलकर रखना चाहा। एक दिन सारा बायके घरसे निकलकर अपने घरकी ओर जा रही थी। बाय भीतरी हवेलीके बीचमे एकाएक उससे मिला और उसने अपने एक हाथसे उसके हाथको पकड़कर दूसरे हाथसे उसकी अँगुलीमे एक चाँदीकी अँगूठी पहनानी चाही। साराने कुपित हो अपने हाथको खीचकर बायसे कहा—यह बुरी है बाय! अफ़सोस है! शर्म कीजिये।

साराने यह बात ऊँची आवाजमे कही। बड़ी बीबीने यद्यपि सुनीको अनसुनी कर दिया, लेकिन छोटी बीबी सुनकर "क्या बात है, क्या बात है" कहती वहाँ पहुँच गयी, लेकिन मेहरियाके वहाँ पहुँचनेके पहले ही सारा बायके घरसे निकलकर चली गयी थी।

साराने अपने घरमे जाकर मुँह-देखाईके लिये बायके दिये हुए रूमालको—जिसे उसने अबतक इस्तेमाल नही किया था—उठा लिया और लौटकर बायकी बाहरी हवेलीके सामने फेंक आयी। उस दिन जो साराने बायके घरको छोड़ा, तो फिर उसने उधर पैर नही रखा।

× × ×

यद्यपि साराने बायके घरकी ओर पैर रखना बिल्कुल छोड़ दिया था, लेकिन बायने अब भी आशा नही छोड़ी थी। वह अब सारा-को सोलहो आना अपने हाथमे करनेका दाँव सोच रहा था, लेकिन

इसके लिये मुरादको संतुष्ट करने और मधुर व्यवहारसे अपनी ओर खींचनेकी जरूरत थी।

उस दिन जब शामको मुराद भेडोंको लेकर लौटा तो बायने मेहमानखानेमें अपने और साराके बीच जो घटना उस दिन हुई थी उसे उसी तरह दोहराया।

—मैं तेरी बीबीको अपनी बेटी अपनी बहू-जैसी समझता हूँ और उसीके अनुसार व्यवहार करता हूँ। आज उसे पैतृक स्मृतिके तौरपर एक चाँदीकी अंगूठी देना चाहता था। नही जानता कि उसे क्या सन्देह हुआ। उसने मुझे खरी-खोटी सुनाई और तेरी भाभियोंके सामने मुझे अपमानित किया।

मुराद इस घटनाको सुनकर अपने विचारोंमे डूब गया। बायने उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते हुए फिर कहा—साराकी बातोको सुनकर कही तू मुझसे नाराज न हो जाय इसीलिये मैंने तुझसे सीधे बातकी। उसको समझा दे कि वह फिर मेरी हवेलीमे न आये-जाये।

मुरादको कही यह ख्याल न हो जाय कि बाय उसे नौकरीसे छुडा देगा इसलिये बाय बहुत नर्मीसे बोला—मेरी इस बातसे तू यह न समझ कि मैं तुझसे या सारासे नाराज हो गया। उसके आन-जानेके लिये मना करनेका मेरा मतलब यही है कि कही औरतोके बीच बेकार कहा-सुनी न हो जाये अन्यथा मैं उसके व्यवहारको बच्चेकी बात समझकर दिलमे नही लाता। आगे भी तेरी जो कुछ भी भलाई कर सकता हूँ उसे उठा न रखूँगा। पहले अब तू एक शिर और एक शरीर था, उस वक्त तुझे क्या पैसा-कौडी चाहिये पूछकर मैंने तेरी ठीकसे सहायता नही की लेकिन अब तू गृहस्थ है। एक दूसरे आदमीकी रोटी भी तेरे शिरपर है। मैं अब इसका ख्याल रखूँगा।

बाय चुप हो गया। मुरादने समझा कि बायकी बात समाप्त हो गयी और वह अपनी जगहसे उठने लगा। बायने फिर मुँह खोला। मुराद बैठकर फिर सुनने लगा।

—जो सुना है—बायने कहा—उससे जान पडता है कि जल्दी ही तुम तीन सिर होनेवाले हो। इस बातको सुनते ही, मैंने एक दुधार बकरी तेरे होनेवाले पुत्रका ख्यालकरके रखली है। जिस दिन गदेला (बच्चा) प्रगट होगा, उसी दिन इस बकरीको तुझे दूँगा कि घर ले जा बच्चेको दूध पिला। मेरी नेकियाँ यदि सारा नही मानती, तो कोई बात नही। "वह नहीं जानती तो न सही, खुदा तो जानता है।"

थोडी देर रुककर बायनें फिर कहा—अच्छा, अब अपने घर जा, विश्राम कर और साराके सदेहको दूर कर।

मुराद अपनें घरकी ओर चला। उसके दिलमे हजारो सदेह और विचार आ रहे थे, लेकिन घर आकर सारे सदेह दूर हो गये। इससे पहले साराने बायकी सारी बातें मुरादसे नही कही थी। आज उसने अपनें और बायके बीच हुई सारी बातोको आदिसे अततक कह सुनाया। सुनकर मुराद बायकी बुरी नीयतको अच्छी तरह समझ गया।

जिसने उसकी इज्जत बर्बाद करना चाहा, उस आदमीके घरमे काम न करनेका सकल्प उसने कर लिया, लेकिन उसे जल्दी कार्यरूपमे परिणत करनेमे वह सफल न हुआ। बायका काम छोडनेपर किसी दूसरी जगह काम पकडनेकी जरूरत थी, लेकिन एक बायके घरसे काम छोडनेवाले नौकरको दूसरे बाय अपने घर नौकर न रखते थे। गाँवके दूसरे गरीब किसान खुद दूसरेके द्वार पर चाकरी करते थे। उनके पास काम कहाँसे मिलता। दूरके गाँवमे काम ढूंढने के लिये जाना मुरादको ठीक नही लगा, क्योकि तब उसे अपनी बीबीको अकेले छोड-कर जाना पडता और यह भयावह चीज थी, क्योकि गाँवका सबसे बडा बाय उसके ऊपर आँख गडाए हुए था। उसने सोचा, चाहे झूठही क्यो न हो, किन्तु बायनें कहा था "मैं तेरी स्त्रीपर कुदृष्टि नही रखता, उसे अपनी बेटी और बहूकी तरह समझता हूँ।" इसी बहाने अनजान बन अभी बायके पास ही काम करना ठीक है। जब कोई दूसरा अनुकूल

स्थान मिल जायगा तो यहाँसे चल दूँगा। इस तरह मुराद फिर पहलेकी तरह बायके घर में काम करने लगा।

३

अँगूठीवाली घटनाके चार-पाँच मास बाद सारा एक पुतवाकी माँ बनी। नवजात पुत्रके पधारनेके कारण माँ-बापके आनन्दका कोई ठिकाना नही था। इसी आनन्द या शादीका ख्याल करके उन्होने बच्चे का नाम "शादी" रखा।

पुत्र प्रसवके समय साराको जो कष्ट हुआ और जो कि हर माता-को प्रथम प्रसवके समय होना स्वाभाविक है, उससे त्रास और भय खाते हुए भी एक फूलकी तरह बेटवा प्राप्तकर सारा सारे कष्ट भूल गयी। इसके साथ ही सारा एशानकुल बायके उस दुर्व्यवहार को भी करीब-करीब भूल गयी; विशेषकर बायने जब उसके बाद फिर कोई दुश्चेष्टा नही की और ऊपरसे हर तरह की मदद देनेमे कोई कोर-कसर नही उठा रखी। इससे मुरादका भाव बायके प्रति बदल गया और उसके प्रयत्नसे साराने भी खिचाव दूर कर दिया। दोनो समझने लगे थे, कि बाय की वह चेष्टा शैतान का क्षणिक बहकावा था, उसके बाद बायने अपने कामको नापसन्द कर तोबा कर लिया। बच्चेके जन्मको सुनकर बायने उसी दिन जनी एक बकरीको मुरादके घर भेजा, तो मुरादका विश्वास और दिलपूरी और भी दृढ हो गयी।

बायकी बडी बीबी बच्चेको देखनेके लिए साराके घर आयी और रवाजके अनुसार सूफ[1] की सिली हुई एक कुर्ती लायी। वह बच्चेके लिये आयु और धन, साराके लिए स्वास्थ्य और बलकी कामना करके अपने घर लौट गयी। इस बार उसने बाय या उसकी नेकी या मेहर-बानीकी बात नही कही। उसने ऐसा दिखलाया जैसे कि बायके सम्बन्धमे

[1]मूल्यवान वस्त्र

जो प्रशसा और दूसरी बातें सारासे की थी, उसके लिये वह लज्जित है और शैतानके बहकावेमे पडकर ही बायतें उसे साराके सामने लज्जित कराया।

बाय-पत्नीके इस व्यवहारने भी बायकी दुश्चेष्टाको शैतानकी बहकावा समझनेमे सहायता दी और साराने बहुत कुछ बायको क्षमा भी कर दिया।

× × ×

प्रसव-पीडाके उन दिनोंके बीत जानेपर साराकी भूख बहुत बढ गयी। जो चीज भी खाती मानो वह सब दूध और मास बन जाता—दूध उसके प्राण-प्रिय बच्चेको तृप्त और पुष्ट करता और मास उसके शरीरमे मिलकर उसे और पीवर तथा कमनीय बनाता।

सारा प्रतिदिन बच्चेको कपड़ेमे लपेटकर स्वच्छ खुली हवामे घुमाने ले जाती। नवजात बयाबानमे खिली लाली और खेतोंके किनारेकी हरियालीको देखकर आनन्दित होता। जब साराके पास आनेपर तितलियाँ हरियाली और फूलासे उडाती तो शादी भी मानो उनके साथ उडनेके लिए अपनी माँके गोदमे उछलने लगता, न जाने क्यो गुलाब और लालाके फूलो हरियाली और तितलियोको देखकर नवजात इतना उल्लसित होता कि अध-विकसित कलीकी भाँति अधखुले अधरोंसे हँसने लगता।

करुणामयी माँ सारा अपने प्राण-प्रिय बच्चेपर जी-जानसे न्यौछावर थी और नवजातके लिलारको फूलपर बैठी मधु-मक्खीकी तरह चूमते न अघाती थी, जैसे मधु-मक्खी फूलपर बैठी अपने दोनो सूँडोंसे फूलको पकडकर चूसती है वैसे ही सारा भी बच्चेके मुँहकी दोनो ओर अपनी दोनों अँगुलियोंको बडी कोमलताके साथ लगाकर उसके हासको और भी मधुर, और भी लावण्यमय बना देती।

अपने नवजातको देख-देखकर साराका हर्ष इतना बढता गया कि उसने इसे इस प्रकार पद्योमे बाँध दिया

शादी-जान मेरा मेहरबान मेरा।
तुझे न दुख हो कभी जान मेरा।
लाला बढा है हरितावली है।
गुलाब सा हँसता शादी-जान मेरा।
बसन्ती हवाएँ जगत में चली।
है जान मेरा शादी-जान मेरा।

जब शादी कुछ और बडा हुआ और अपने हाथ-पैरोंको स्वतन्त्रता पूर्वक घुमा सकता था तो साराकी शादी (प्रसन्नता) और भी अधिक हुई, कभी-कभी सारा घासके ऊपर अपने पैरोको फैलाकर बैठती और शादीको भी अपने सामने जानुआपर बैठाती। उस वक्त सारा बच्चोके लायक छोटे छोटे गीत अलग-अलग अक्षरोके उच्चारणके समय गाती

शादी-जान मेरा, मेहरबान मेरा।
तुझे न दुख हो, कभी जान मेरा।

शादी गीतके साथ-साथ हाथ पैर और सारे शरीरको हिलाकर उसे गतिमे दुहराता। वह अपने पजोको फैलाए हाथोको ऊपर उठाए ऐसे ताली बजाता कि ताली स्वरके अनुरूप पडती। वह शिरको उठाकर हिलाता मानो उठकर नाचना चाहता। सारा शादीको प्रसन्न देखकर और भी खुश हो जाती

तेरी काली आँख काकको माँ न देखे दागको।
मेरी आँख मेरी चिराग, प्रकाशित हो तेरा बाग।

साराके गीत गाते वक्त थोडी देर सुस्ताकर शादी भी गीतके अनुसार शरीर को चलाने लगता।

इस तरह बच्चोके सगीतके अन्तमे सारा सदा इन लोरिया का गाया करती

हा दूरसी दूरसी दूरसी[1], जा तू ऊपर कुरसी।
तेरे रूपका है गुलाम गुलाब, तेरी सुन्दरता है कमाल।
कम न हो तेरा मिलन।
हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।
तेरी सुगन्ध बसन्त सी, तेरा मुँह है अनार-सा।
तेरे केश जैसे कस्तूरी।
हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।
तेरा मुख उल्लसित हो, शोक तेरे मनसे दूर हो।
शत्रु तेरा अन्धा हो।
हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।

जिस समय सारा इन लोरियोंको गा रही थी, शादी भी अपने अंगोंको हिलाते हुये अपने बैठने की जगह चक्कर काट रहा था, जिसमें उसका शिर और हाथ ही नहीं, बल्कि अलग-अलग सारे अंग आँख-भौंह-पीठ-मास और नस-नस एक तानमें हिलते थे। साराकी प्रसन्नता और बढ़ी और वह अपनी जगहसे उठ बच्चेको हाथमें उठाकर हवामें उछाल बढ़ती और उसके हाथ पैर-शिर-गर्दन-आँख-मुँह सभी को स्नेहसे चूमती। जान पड़ता, शादीको भी कृपामयी माँ के इस व्यवहारसे हर्ष होता था। इसीलिये वह ख-खाकर हँसता। भाषासे अपरिचित होने पर भी वह अपने भावोंको अङ्-उङ् करके प्रगट करता और दूसरे अज्ञात शब्दों द्वारा भी अपने अन्तरको खोलना चाहता। सारा भी अपने प्राणप्रिय शिशुके गालों पर नरम-नरम अँगुलियोंको लगाकर उसी तरहकी अपरिचित ध्वनियोंमें जवाब देती। ध्वनियोंका अर्थ चाहे माँको न मालूम रहता, लेकिन वाणी-हीन शादी उसे समझता। इसीलिये ऐसी ध्वनियोंके बोलते समय शादी कान देकर सुनता। जब माँ चुप हो जाती, तब वह ख-खाकर हँसता और अव्यक्त ध्वनियोंमें कृपामयी माँको जवाब देता।

× × ×

[1]दूर हो।

बकरी और बकरी का बच्चा भी सारा और शादीके लिये एक भारी मनोरंजनके कारण थे। जब शादी सो जाता, तो सारा खेतो नहरो और मैदानसे हरी घास लाती। उसने बकरीको खिला-पिलाकर खूब मोटा-ताजा और दुधार बना दिया था। जब सारा शादीको उठाये बकरीके पास आती तो वह बकरी, विशेषकर बच्चेको देखकर प्रसन्न होती। बच्चा साराके इशारेपर चारो तरफ दौडता तनूरके ऊपर चढ-कर कबूतरोकी तरह हवामे छलाग मारता और अगले दो पैरोको उठा-कर आदमीकी तरह खडा होता। पेड पानेपर उसपर छलॉग मारता। मुरादके झोपडेकी दीवार तो मानो उसके खेलनेके लिये ही बनायी गयी थी। वह एक कूदानमे ही उसके ऊपर पहुँच जाता और साँपकी तरह उसने ऊपर दौडता।

कूचेमे एक सूतका वृक्ष था, जिसकी शाखायें दीवारके ऊपर फैली थी। वह बच्चेके लिये खेल भी थी और भोजन भी। बच्चा दीवारपरसे उस जगह पहुँचकर पिछले दोनो पैरोपर खडा होकर, अगले दोनो पैरोको उन शाखाओपर रखकर अपन मुँहस मरकत-जैसे हरे पत्ताको चुनता और दाँतासे कुतुर-कुतुर कर खाता।

माँ बकरीके बच्चेकी इस चेष्टासे मानो नाराज होती और नीचे खडी उसी तरह चिल्लाती, जैसे माँ छत या पेडपर चढे अपने बच्चोके गिरनेके भयसे, लेकिन यह बच्चा आदमीके बच्चेकी तरह माँ की बात माननेसे इन्कार न करता। शायद इसका कारण यह भी हो सकता है कि वह इस तरहके खेल बुढ़ापे तक खेल सकता था। थोडी देरमे खेलसे ऊबकर वह अपने चारो पैरोको चारो तरफ फैलाकर पक्षी ऊपरसे गहरे पानीमे कूदता है, उसी तरह छलाग मार-कर जमीनपर कूद माँ के पास दौड जाता और फिर अपने दोनों अगले पैरोको नीचे मोड मुँहको माँके स्तनसे लगाता, लेकिन स्तनमें बँधा थैला उसे दूध पीनेमें बाधा देता। दो-चार बार माँ-

के स्तनमें चला क्षीरसे निराश हो वह माँकी बगलमें लेटकर आराम करने लगता।

अब शादीको बच्चेके साथ खेलनेका अवसर मिलता था। सारा उसे उठाकर बच्चेके सामने दोनों पैरोंपर बैठा देती, अपने पजोंसे बच्चे-के कस्तूरी जैसे काले बालोंमें कघी करती और अपने नखोंसे उसके सिर-मुँह और लिलारको खुजलाती। शादी भी माँकी क्रियाओंका अनुकरण करता और अपने सहजात बच्चेके शरीरको सहलाना चाहता। बच्चेकी इच्छा देखकर सारा उसे मेमनेके नजदीक ले जाती। शादी अपनी लाल कोमल अँगुलियोंसे मेमनेके काले बालोंको खींचता और अपने कोमल नखोंसे उसके ओठों और दाँतोंको छूता। शादी का यह काम बच्चेको भी पसन्द आता। वह बदलेमें शादीकी अँगुलियोंको चाटता, उसकी हथेलीको चूमता और कभी-कभी धन्यवाद-सा देते हुए 'म" भी करता। शादी उसे सुनकर प्रसन्न होकर, झूमकर "अङ उङ' कहता और अपने ओठ और हाथोंको मिलाकर अपने दिलकी बात माँको सुनाता।

माँ मानो दोनोंकी बातों को समझती। वह मेमनेकी बातको शादीको सुनाते हुए कहती वह कहता है—मैं तुझे प्यार करता हूँ। मैं और ॥ एक समय पैदा हुए, मेरी माँ भी तुझसे प्रेम करती है। वह माँकी तरह तुझे क्षीर देती है। हम दोनों सिर्फ जोड़ीदार और साथ खेलनेवाले ही नहीं हैं, बल्कि दोनों एक दूसरेके क्षीरपायी-भाई भी हैं। फिर शादीके मुँहसे मेमने को कहती:

मैं तुझे प्यार करता हूँ, मैं तेरे मुँह, तेरी गन्धको
प्यार करता हूँ।
मैं तेरे लोम, तेरी आँख, तेरी द्वेषरहित आँख और खुरको
प्यार करता हूँ।
मैं तेरे सारे काम, तेरे कारबार ॥ —
तेरी गति और चाल, तेरी मस्त अँखड़ियोंको
प्यार करता-हूँ।

× × ×

मुरादने अपने हाथसे लकडीका एक तख्ता बनाया। तख्ता बहुत सीधा-सादा था। उसने कहींसे तीन-चार मीटर लकडी पाकर उसीको काटकर ऊपरसे छोटा तख्ता काँटीसे जोडकर उसे बच्चोंके तख्तेका रूप दे दिया था। एक दिन जब मेमना दीवारपर खेल रहा था तो साराने तख्तेको घरसे लाकर बाहर रख दिया। हरी घास दिखलानेसे मेमना भी दीवारसे कूदकर चला आया। दो-तीन गाल घास खा लेनेपर साराने मेमने को उठाकर तख्तेपर रख दिया।

साराने ताली बजाकर गाना शुरू किया। शादी अब बैठ सकता था। वह माँके पास बैठ गया और उसीकी तरह ताली बजाने लगा। सारा गा रही थी —

हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।

मेमनेने जरा देर कान देकर सुना, फिर तालीके स्वरके अनुसार तख्तेके ऊपर घूमने लगा, किन्तु वहाँ जगह कम थी, इसलिए अपने खुरोंको जल्दी-जल्दी एक ओर रखते हुए बढने लगा। यह खेल शादीको, साराको और मेमनेको भी बहुत पसन्द आया। पहले सारा बच्चेको तख्तेपर ऊपर रखती, किन्तु पीछे उसे आदत हो गयी और जैसे ही सारा गाने लगती, वह स्वयं तख्तेपर चला जाता।

हा दूरसी दूरसी दूरसी, जा तू ऊपर कुरसी।

मुरादने धीरे-धीरे बायके प्रति अपने पहलेके विचारोंको बिलकुल भुला दिया। बाय हमेशा मुरादके साथ अच्छा बर्ताव करता। वह उसके पुत्र शादीको भी दिलसे नहीं भुलाता और कभी-कभी घीमें पके मास-खडको मुरादके हाथमें देकर कहता "ले इसे बेटवाको देना।" बाजार (हाट) की रात शादीके लिए कटोरा आश-पलाव (पोलाव) देना कभी नही भूलता।

अँगूठीकी घटनाको दो साल बीत गये थे। अब उसकी स्मृति बिलकुल लुप्त हो गयी थी, यहाँतक कि साराके दिलसे भी वह दूर हो गयी थी। अब बाय कभी साराका नाम तक न लेता था।

इन बातोंसे मुरादको दिन प्रतिदिन दृढ विश्वास हो गया कि बायने उस कामको शैतानके बहकावेसे किया था और उसके लिए अब वह लज्जित तथा पश्चात्तप्त है।

४

मुरादको बायके यहाँ सेवा करते ३० साल हो गये थे। उसे सदा सूखी जूठी रोटीके टुकडे और रूखा सूखा बचा-खुचा खाना मिला करता था। गरम भोजनकी जगह ठंडा और देगका धोवन जैसा आश (खिचडी) उसके भाग्यमे बदा था। अब बाय मुरादको गेहूँकी मुलायम रोटी और गम आशसे परितृप्त करता और कभी-कभी चरभूमिमें भी मुरादके लिये गरम रोटी या गरम आश भेजता। मुरादके लिए गरम रोटी और आश बाय का साला—बडी बीबीका भाई—शाकुल ले जाता।

शाकुल एक बाय-बच्चा (जमींदार पुत्र) अपने पिताका एकलौता पुत्र था। शाकुलके पिता सुबहानकुलको माल मिलकियत और धरती-पानी ईशानकुल बायके बराबर न होनेपर भी वह एक गाँवका एक बाय और मुखिया (कलाँ शवँदा) समझा जाता था। उसने अपनी ज्येष्ठ पुत्री सानियाको गाँवके सबसे बडे बाय एशानुकुलको देकर अपने मान-सम्मानको और बढाया था।

सुबहानकुल बाय कुछ नौकरों और चरवाहा द्वारा अपना काम करवाता और अपने एकलौते पुत्र शाकुलसे कोई काम नही लेता था। शाकुल बापके एक घोडपर सवार होकर भोज उडाता और तमाशे देखता फिरता। सुबहानके मरनेपर बायकी सारी मिलकियत शाकुलको मिली। एशानकुल बायने अपनी स्त्री सानियाका दायभाग माँगा, लेकिन शाकुलने कुछ नही दिया। साले-बहनोईमें कुछ दिनातक काजी (मुकदमा-काजी) रही, लेकिन एशानकुल कुछ नहीं पा सका, क्योंकि एक ओर शाकुल

काजी और हाकिमका दरबारी और पैसा खर्च करनेवाला था, और दूसरी तरफ असली दावादार उसकी बहन सानिया सौतके आनेसे अपने पतिपर नाराज थी, इसलिए उसने कह दिया था कि मेरी माल-मीरास मेरे भाईके ही हाथमे रहे।

इसकी वजहसे एशानकुल और शाकुलके बीच अच्छा सम्बन्ध नहीं रह गया था। जब-तब शाकुल बहनको देखने आता भी, तो ऐसे समय जबकि बहनोई घरपर नहीं होता। यदि कभी भेंट भी हो जाती, तो उसे एक सूखा सलाम देकर वह बहनके घरमे चला जाता और फिर वहाँसे लौट जाता।

बापके मरनेसे बाद शाकुलका कारबार और खराब हो गया, क्योंकि बापके वक्त उसे काम देखनेकी आदत नही थी, जो अब भी वैसी ही चल रही थी। उसका सारा समय सैर-तमाशे मे बीतता। वैसे कभी-कभी वह बन्दूक लेकर शिकार खेलने चला जाता।

आज भी उसकी सवारीमे सदा एक घोडा रहता लेकिन वह बापके जमाने जैसा राशका घोडा नही, बल्कि मामूली टट्टू होता, जो न शिकारमे काम आता न कूबकारी[1] मे तो भी जब शाकुल सैर तमाशे से लौटकर गाँव आता तो अपने घोडे, अपनी बन्दूक और अपनी हुनर मन्दी चतुराई) की तारीफ करते न थकता। जिस दिन किसी कूबकारीमे शामिल होता लौटनपर गाँववालोंसे डीगें मारता और दश शिर बकरी छीन निकलनकी बात कहकर अपन घोडेकी तारीफ करता। जब शिकारसे लौटता तो कहता 'मैंने आज बन्दूकसे तीन हरिन मारे और दोको घोडा दौडाकर पकड लिया।

उसकी झूठी गप्पोसे गाँववाले भी परिचित हो गये थे। उस दिन एकने उससे पूछ दिया—तो वह पाँच शिर हरिन कहाँ हैं? एक हम भी

---

१ मध्य एशियाकी घोड-दौड जिसमे हर सवार इनाममे रखी भेड-बकरी या बछडेको छीनकर भागना चाहता है।

पात तो कबाब बनाकर खाते और दुआ देते कि तुम्हारा घोडा इससे भी ज्यादा तेज और तुम्हारी बन्दूक इससे भी ज्यादा निशानेवाली हो।

शाकुलको जवाब देनेमें कोई दिक्कत न हुई। उसने चट से कह दिया अमुक गाँवमें एक दोस्तके घर विश्राम करने लगा। वहाँ मेरे खानेके लिए एक हरिनका कबाब बनाया गया। बाकी को मैं उसी दोस्तको इनाम देकर चला आया। बात समाप्त करते-करते उसने कहा—मेरी आदत है कि हाथमें यदि कोई चीज आई तो जो कोई पहले सामने आया, उसी को दे दी लौटाकर घर लाना मुझे पसन्द नही।

लेकिन असल आदत दूसरी थी।

एक दिन शाकुलने अपने नौकरको हुकुम दिया कि कुदाल लेकर दरीचीके सामनेके थूनुच्काको कोड दे, लेकिन इस बातका ख्याल रख कि नये उगे थूनुच्का (घास) की जड उधर न आये, कि मुर्गियाँ उसे खाकर खराब कर दें। नौकरने कोडाई की लेकिन मौका पाकर बायकी मुर्गियाँ वहाँ पहुँचकर नए अकुरोको खाने लगी। नौकरने मुर्गियो को भगानेके लिए सेब-बराबर पत्थर फेंका। संयोगसे पत्थर एक मुर्गके शिरपर लगा और वह वही फड फडाकर मर गया।

शाकुलको जब यह बात मालूम हुई तो उसने नौकरको बरामदेके खम्भसे बाँध दिया और कुछ कदम दूरपर खडे होकर उसी पत्थरको नौकर की ओर फेंका। नौकरने आख और शिरको बचानेके लिए हाथोसे ओडा लेकिन पत्थर जाकर उसके मुहपर लगा। इससे सामनेके दो दाँत टूट गए और ओठोंसे खून बहने लगा। उस नौकरका असली नाम एरगश था लेकिन इस घटना के बाद उसे एरगश बेदाँत कहा जाने लगा।

× × ×

अन्तमे शाकुलसे मेल मिलापके लिये स्वयं एशानकुल बायने कोशिश की। उसने एक दिन अपनी बीबी सानियासे कहा

—अपने भाईसे यह कि मुझसे झगड़ना छोड़ दे। उसने मेरा जो कुछ अपमान किया, उसके लिए मैंने उसे क्षमा कर दिया। अब मुझसे बन्धुत्व स्थापित करे और मेरे घोड़ोंमेंसे एक अच्छा घोड़ा सवारीके लिए ले जाया करे। मुझे लोगोंके सामने यह देखकर शर्म आती है कि मेरा साला टुटहू टट्टू पर कूबकारीके लिए जाय और रास्तेमें घोड़ोंके पीछे व्यर्थ ही इधर-उधर दौड़ता फिरे।

सानियाके बीचमें पड़नेसे साले-बहनोईमें फिरसे दोस्ती हो गयी। बायने इसके उपलक्ष्यमें शाकुलको मित्र-भोज दिया और उसे नया जामा पहिनाया। तबसे शाकुल प्रतिदिन एक बार बायके घर आता और यदि कूबकारी या शिकारम जाना होता, तो बायके एक अच्छे घोड़ेपर सवार होकर जाता। शिकारके लिए कभी कभी बायकी पँच-गोलियाँ बन्दूक भी ले जाता और उससे हरिन, भेड़िया या दूसरे वन्य पशुओंको मारता। अब गाँववाले उसकी आत्म-श्लाघाको लेकर उपहास नहीं करते, क्योंकि वह कूबकारी की एक-दो बकरियाँ भी अपने घोड़ेपर लटकाये लाता, शिकारसे भी सूखे हाथ नहीं आता और कभी हरिन, कभी तीतर, कभी भेड़िया, और कभी लोमड़ी भी अपनी जीनसे बाँध लाता।

शाकुल अपने नौकरों-चरवाहोंकी देखभाल नहीं करता और वे क्या खाते-पहनते है, इसकी पूछताछ नहीं करता था। तो भी, एशान-कुल बायके कामोंमें सहायता देता था। इस तरह कूबकारी या शिकारमें जाते वक्त वह मुरादके लिए आश-रोटी देकर हाल-चाल पूछता था।

५

सारा और मुरादका जीवन हँसी-खुशीसे बीत रहा था। शादीके जन्म-समय बायने जो बकरी दी थी, उसके तीसरे साल दस सिर हो गये थे। घर क्षीर-दही-मट्ठा-मस्कासे भरा हुआ था। तीन वर्षका

शादी दूध-दही-मट्ठा-मस्कामें पला था, इसलिए देखनेमें वह चार-पाँच सालके बच्चेसे भी अधिक मालूम होता था। मुरादने भी फिरसे जवानी पैदा की थी। सुन्दर योग्य स्त्री, समझदार और स्वस्थ पुत्र, झोपड़ा होनेपर भी अपना निजी घर, दश शिर बकरियाँ—जिनसे बीबी-बच्चेको काम भी मिला था—इन सबके कारण उसका मन प्रसन्न और जीवन सुखी था।

मुराद हर सवेरे मालिकके घर जाता, प्रातराशके बाद भेड़ोंको हाँककर चराने जाता, शामको भेड़ोंको घर लौटाकर और व्यालू खाकर अपने घर लौटता। कभी-कभी बायके घरसे बेटवाके लिए मांस या आश भी ले आता। यह चरवाहोंके हकमें शामिल न था और पहले उसे मिलता भी न था।

मुराद अपनी सारी सुख-समृद्धिको अपनी पत्नीके शुभ चरण और पुत्रके सौभाग्यके कारण समझता था, इसलिए उनसे बहुत प्रेम करता था तथा उनके आरामका बहुत ध्यान रखता था। जब मुराद अपने घर आता तो उसकी दिन भरकी थकावट दूर हो जाती। बीबी उसके लिए चाय, क्षीर या दधि लाती। पुत्र गोदमें आकर उसकी दाढ़ीसे खेलता, उसका मुँह चूमता या अपनेको चुमाता।

शादी अपने बापसे इतना हिलमिल गया था और उससे इतना प्रेम करता था कि जबतक बाप घरमें रहता, वह एक क्षण भी उसके पाससे नहीं हटता, नींद आनेपर भी अपनी जगह जाकर नहीं सोता, हर रात बापकी गोदमें सो जाता और फिर उसे उठाकर बिस्तरेपर ले जाना पड़ता।

सारा भी अपनेको बहुत सौभाग्यवती समझती। मुरादसे व्याह होनेके बाद उसे शरीरकी चिन्तासे छुट्टी मिल गयी थी। शादीके जन्मके बाद माँ-बापकी जुदाई और बन्धु-बांधवोंकी मृत्युका शोक दिलसे जाता रहा था।

उसके पास शादी था, इसलिए सारी चीजें उसके पास थीं। उसे

खास तौरसे मुरादकी भाँति ही अपने शादीपर गर्व था क्योंकि उसके जन्म लेते ही घर और परिवारका भाग्य खुल गया था।

शादी तीन सालका था। इसपर भी उसका रंग-ढंग बड़ोंकी तरहका था। वह एक ओर अपनेको परिवारका अंग समझता तो दूसरी ओर कर्त्तव्यकी बातें भी समझता, इसलिए अब खेल हीमें नहीं, बल्कि काममें भी माँका सहायक बनता। यदि वह देखता कि माँ दूध दुहना चाहती है, तो बच्चोंको पकड़कर रखता, यदि देखता कि माँ खीर पकाना चाहती है, तो चूल्हेके पास लाकर ईंधन रखता, यदि देखता कि माँ मक्खन बिलोने जा रही है, तो वह गड़वेसे पानी भरके ला देता, यदि देखता कि माँ कपड़ा धोना चाहती है, तो वह देगसे गरम पानी ले आता।

× × ×

एक दिन सवेरे मुराद समयसे पहले उठा। अभी उसकी बीबी नहीं जगी थी। उसने हाथ-मुँह धोनेके बाद स्त्रीको जगाकर कहा

—मैं चाहता हूँ कि आज रातको मालिकके घर खाना न खा घर आकर तुम्हारे साथ खाना खाऊँ। आज दूधको पकाकर दही न बनाना। शामको खीर अच्छी तरह पकाना। जरा समयपर तैयार करना, क्योंकि आजमैं समयसे पहले आऊँगा।

मुराद अपने कामपर चला गया। सारा भी उठकर अपने काम-काजमें लग गयी। शादीके जगनेसे पहले ही उसने अपने और बच्चेके लिए खाना तैयार कर रखा।

शादीने जागकर अपने बिस्तरेपर खड़े होकर माँको पुकारा- आचा, बकरियाँ दुहीं ?

—दुहीं, क्या हुआ ?—माँने जवाब देते हुए पूछा। वह हवेलीके बाहर झाड़ू दे रही थी।

— छोटी बकरियोंको भी दुहा ?

— उसे अगले साल दुहूँगी। अभी वह बच्चा है। मा नहीं हुई है। जब मा होगी ती तो खूब क्षीर देगी।

— मैं ने मैंने देखा वह क्षीर देती है—कहते शादी अपनी जगह से उठकर बाहर आनेके लिए तख्तेके कठघरसे चिपक गया लेकिन वह निकल न सका और ठोकर खाकर वाले चिरागको लिए दिए गिर पडा। चिरागका तेल घरके फर्शपर फैल गया और शादी रोने लगा।

सारा चिराग गिरनेकी आवाज और शादीके रोनेको सुनकर "क्या हुआ क्या हुआ" कहती दौडकर घरके भीतर आयी। उसने फर्श और बिस्तरेपर तेल फैला देखकर कहा—रो मत मैं तुझे नही मारूँगी लेकिन आगे खबरदार रहना और किसी चीजको न गिराना।

— क्यो कहती है कि छोटी बकरी दूध नही देगी ? मै तख्तसे उतरना चाहता था उसी वक्त गिर पडा।

साराने चकित होकर शादीकी ओर देखा। उसकी विशाल काली आखोकी चमक अश्रु बिन्दुओंको झलका रही थी। जान पडता था ओस कणसे भरे गुलाबके फूलपर तरुण रविकी किरणे पड रही हैं। भय और लज्जासे उसका श्वेत आरक्त मुख ताजे गुलाबकी पखुडियो की तरह शोभा दे रहा था।

सारा अपने प्राणसे प्रिय पुत्रके इस अनुपम सौन्दर्यको देखकर अपनेको रोक न सकी और शादीको अंकमे लेकर उसने उसके मुह और आंखोको दिल भर चूमा। जब बच्चेका कुर्ता साराके हाथमे लगा, तो पता लगा कि वह भीगा है। उसने उसे अपनेसे दूर करके कहा 'तूने आज रातको बहुत बुरा काम किया इसीलिये रोता है न ?' और शादीके लिये दूसरा धुला कुर्ता ले आयी।

मैंने नहीं भिगोया छोटी बकरीके क्षीरने भिगो दिया—कहते हुए उसने माँको फिर आश्चर्यमे डाल दिया।

—कहाँ बतला क्या हुआ जो बकरीके दूधने तेरे कुर्तेको

भिगा दिया ! —अपने बच्चेको नया कुर्ता पहनाते हुए साराने पूछा।

—मैंने सपनेमे देखा—शादीने कहना शुरु किया—तख्ता हवेलीके सामने रखा है। मैंने कहा

हा दूरसी दूरसी दूरसी जा तू ऊपर कुरसी।

छोटी बकरी उटकर तख्तेपर आ गई और उसके स्तनसे क्षीर गिरने लगा। मैंने अपने कुर्तेको उठाया कि जिसमे क्षीर जमीनपर न गिरे लेकिन क्षीर कुर्तेसे पार हो पायजामा भिगोते हुए जमीनपर गिरने लगा।

साराने पुत्रके स्वप्न और वक्तव्यको सुनकर उसके जवाबमे पद कहा

बकरिया ऊपर तेरे सूथन भिगाया तेरा।
अगले साल देगी क्षीर तेरे लिये।

—नें, छोटी बकरिया मुझे इसी साल क्षीर देगी इसी समय क्षीर देगी। तू तख्ते का घरके सामने रख तो, फिर देख वह कैसे क्षीर देती है—कहते हुए शादी माँके न माननेपर ढीठ होकर बोला।

साराने बेटवाकी इच्छा न भग करते तख्तेको ले जाकर हवेली के सामने रख दिया।

शादी तख्तेके सामने खडा होकर गाने लगा

हा दूरसी दूरसी दूरसी जा तू ऊपर कुरसी।

गाना सुनकर सबसे पहल शादीकी समवयस्का बकरी जोकि अब दो बच्चोकी माँ थी, दौडकर आयी और तख्तेके ऊपर चढकर चक्कर काटने लगी। छोटी बकरी जोकि उसकी द्वितीय सतान थी भी दौडकर आयी और तख्तेके ऊपर चढने लगी। माँने उसके लिये स्थान खाली करते तख्तेसे छलांग मारी। छोटी बकरी तख्तेपर खेलने लगी, लेकिन क्षीर नही दिया। शादीने ध्यान लगाकर देखा लेकिन बकरीका स्तन नही दिखाई पडा। शादीने उदास स्वरमे कहा—आचा ! इसने क्षीर नहीं दिया। इसके पास थन भी नही है।

—क्या मैंने कहा नहीं था कि यह इस साल दूध नहीं देगी ?—सारा ने कहा।

शादीने सपनेमें झूठा धोखा देनेवाली बकरियाको तख्तेसे नीचे ढकेल दिया और उसकी जगह दूसरी छोटी बकरियोंको एक-एक करके ले आकर खेलने लगा।

साराने झाड़ू बहारू खतमकर हाथ मुँह धोकर आवाज दी—आ खाना खायें।

शादी बकरियोंके खेलको छोडकर मांके पास दौडा। साराने उसका हाथ मुँह धोया और ले जाकर खानेपर बैठाया।

× × ×

खाना खानेके बाद सारा घरमें ताला लगाकर बकरियोंको चरानेके लिए घरसे निकली। शादी भी हाथमें डंडा लेकर बकरियोंके पीछे पीछे चला। बकरियोंके आधा बच्चाको हाँकते दोनो चर स्थानपर पहुँचे। शादी डंडेको हाथमें लिए खेतोंके किनारे खड़ा हुआ जिसमें बकरियाँ लोगोंके खेतोंमें न जाएँ। साथ ही वह खेतकी मेडपर उगी घासको उखाड उखाडकर बकरियों की तरफ फेंकने लगा।

सारा एक ऊँची-सी जगहपर बैठकर सूत कातने लगी। सूत कातने के लिए बहुत सीधा-सादा ढेरा (तकला) मुरादने एक लकडीमें डंडी बाँधकर तैयार कर दिया था। सारा अपने कुर्तेके आँचलमें धुन बकरी के बाल रख लाई थी। उसमेंसे एक एकको निकालकर सूतके सिरेको तकलीके सिरेपर लगाती, फिर बाँयें हाथको ऊपर उठा दाहिने हाथसे ढेरेको घुमाती और इस तरह बालकी रस्सी बनाती जाती। जब एक बार सूतमें ऐंठन लग जाती तो सारा उसे लपेट लती और फिर कातना शुरू करती।

सूर्य चढकर शिरपर आया। बकरियोंने अघाकर चरना बंद कर

दिया। साराने बाल और ढेरेको संभालकर बच्चेको आवाज दी— बकरियोंको हांक, चल कुइयर चलें।

बकरियोंने आधा-बच्चाको कुइयर ले जाकर पानी पिलाया। पानी पीनेके बाद बकरियाँ लेट गयी। सारा और शादीने घरकी रोटीको पानीसे भिगोकर खाया और फिर अंजुलीसे कुइका पानी निकालकर पिया।

खाना खानेके बाद साराने फिर रस्सी बटना शुरू किया। अबकी बार शादी भी काममें उसका सहायक बना। शादी रस्सीमें ढेरके साथ घुमाता और सारा बालको पहलेसे समान करके उसमें लगाती। चक्कर काटनेसे रस्सी जितनी ही बुनकर लम्बी होती जाती, उतना ही पीठकी ओरमें हटता शादी भी माँसे दूर होता जाता। पचास कदम दूर जानेपर माँ बुलाती और वसी रस्सीको ढेरे (तकले) में लपटते हुए वह माँके पास चला आता, और फिरसे काम शुरू होता।

एक घटातक बकरियोंने आराम किया। इसी बीचमें साराने बेटेकी मददसे बकरीके बालोकी उतनी रस्सी बाँट ली, जितनी कि वह सबेरेसे दोपहरतक बाँट पाई थी।

बकरियाँ लेटते वक्त जुगाली करती रही। चरते वक्त आधा चबाकर रखे भोजनको फिरसे दोबारा चबाकर उदरमें पहुँचाती रही। अब उसका पेट कुछ खाली हो गया और वह फिर आहारके लिये अपनी जगहसे उठी। सारा भी अपना काम समेटकर बच्चेके साथ बकरियोंको हाँककर चरनेकी जगह गयी।

× × ×

सारा बहुत देरतक बकरियोंको चरा न सकी। धूल-गर्दा उड़ाती आँधी शुरू हो गयी और थोड़ी देर बाद पहाड़ोकी ओर मोटे काले बादल दिखाई पड़े। रसोईघरके धूम सदृश अभ्र उठकर तेजीसे दौड़ता गाँवकी ओर आया।

साराने हवाकी आवाजसे समझ लिया, कि जल्दी ही आँधी पानी शुरू होनेवाला है। उसने जल्दी ही उठकर बच्चेके साथ बकरियोंको घरकी तरफ हांका। वह अभी अपने दरवाजेतक भी नही पहुँची कि बिजलीकी गडगडाहट आकाशमे सुनाई दी और बकरियोंको घरमे करते ही पानी भी बरसने लगा।

सारा बकरियोंको उनकी जगह करके बच्चेको ले घरमे आयी; उसने भीगे कुरतको हटा सूखा कुरता पहनाया और खुद भी भीगे वस्त्र बदले। वर्षा मूसलाधार पड रही थी। साथ ही बिजलीकी गडगडाहट और चमक भी थी जो भयसचार कर रही थी।

सारा और शादी दोनो आचा-बच्चा घरमे बैठे सामने खुले द्वारके वर्षाकी ओर देख रहे थे। जब बिजली बहुत कडकती तो शादी मांके अकमे छिपकर अपने शिर आंख मुंह-कानको उसके कचुकके भीतर ढांक लेता। दिन बीता, प्रकृति शान्त हुई वर्षा भी बन्द हुई। साराने द्वारके पानीको उलीचा। फिर चूरहेको सुखाकर खीर पकाना शुरू किया।

वह पतिकी इच्छानुसार आज कुछ जल्दी भोजन पकाना चाहती थी और चाहती थी कि सारा घर इकट्ठा बैठकर खाए। उसने चूल्हेमे आग जलायी। मांके कहनेपर भी शादी न लाकर चूल्हेके पास ईंधन रखा, लेकिन घरके सामने रखा ईंधन इतना भीग गया था कि या तो न जलता या धुंआ देकर जलता। साराने शादीसे कहा—मेरी मदद करना चाहता है। अच्छा जा, बकरी-खानेसे ईंधन ले आ। वहाँ सूखा ईंधन पडा है।

शादी पानी और कीचडमे पैर थपथपाता जाकर ईंधन ले आया और उसकी माँ आग पजान लगी। सारा खीर और चावल पकाकर आगको धीमी करके घरके भीतर गयी। शादीने आज ममदेपर तेल गिरा दिया था। साराने उसे झाकर फैला दिया, जिसमे दाग दिखलाई न पड़े। बाहर पड़े भीग गए तख्तेको कपडेसे पोछकर घरसे भीतर ला रखा। दीपकको साफकर तेल डालकर उसे दीवटपर रख दिया। धानमें

समय पतिके बैठनेकी जगहपर एक गद्दा बिछा दिया। गद्देके नीचे उसी के ऊपर दस्तरखान फैला दिया और फिर उसके ऊपर एक रोटी रखकर ढाँक दी।

घरके भीतर खानेकी व्यवस्था ठीक कर सारा चूल्हेके पास गयी। चूल्हेमे एक-आध लकडी लगा आँचको और तेज कर दिया पतीली फिर उबलने लगी। साराने खीरको अच्छी तरह चला कर, उसमे घी डाल-कर फिर चूल्हेपर रख दिया। वह बकरी दुहने गयी, जिसमे शादीने भी हाथ बँटाया।

× × ×

सूर्यास्त होगया। खीर भी तैयार हो गयी, लेकिन अभी तक मुराद-का कही पता न था। साराने चूल्हेकी आग बुझा, घरके भीतर जा चिराग जलाया और बच्चेको लिए हुए पतिके स्वागतार्थ कूचे मे गयी।

गायोके आनेकी वेला थी। दूरसे आने-जानेवालोको ठीकसे देखा नही जा सकता था। सारा जिस किसीको भी दूरसे आते देखती, समझती उसका पति आ रहा है, लेकिन उसके दरवाजेके सामनेसे गुजरनेपर जानती कि वह उसका पति नही है।

शादीको जोरकी नीद आ रही थी। वह नीदकी पिनकमे बार-बार गिरने लगता, लेकिन माँके खबरदार करनेपर झुंझलाकर पूछता—दादा कब आएगा ?

दो घटेकी प्रतीक्षाके बाद भी मुराद नही आया। सारा बच्चेको घरमे ले आयी और उसे वहाँ रखकर चूल्हेके पास गयी। खीर जमकर ईंट-सी बन गयी थी। एक थालीमे शादीके लिये खीर निकाली और चाहाकि बच्चेको जगाकर खिलाये लेकिन वह नही जागा। उसने बच्चे को बिस्तरेपर सुला दिया और फिर पतिको देखने कूचेमे गयी, लेकिन अब कूचेमे कोई आ-जा नही रहा था, रात काफी हो गयी थी।

सारा बहुत देरतक सूने कूचेमे बैठी रास्तेकी ओर आँख गड़ाए मुरादके आनेकी प्रतीक्षा करती रही। फिर बच्चा कही डर न जाये, यह विचार-कर घरके भीतर आ गयी। बच्चा गहरी नींद सो रहा था, लेकिन साराके दिलको चैन कहाँ ? वह घरमे बैठ न सकी। फिर कूचेमे गयी और फिर लौटकर घरमे आ गयी। कितनी बार कूचे और घरके बीच चक्कर काटे। अतमे वह अपने बच्चेके पास बैठकर उसके मुँहपर आँख गड़ाये चिन्ता करने लगी—उसे क्या हुआ ?

सारा अपने प्रश्नका जवाब नही पा सकी कि इसी समय घरके बाहर पैरकी आहट सुनाई दी।

"आखिर आया" कहती हुई प्रसन्न सारा अपनी जगहसे उठकर पतिके स्वागतके लिये तैयार हुई। सारा खड़े होकर देखा, कि सामने बायकी बड़ी बीवी खड़ी है। सारा उसे देखते ही आशकित होकर काँप उठी। प्रसन्नताके बाद एकदम निराशा उसके सामने आयी। उसने अपनेको सँभालकर बायकी बीवीकी ओर देखा। बाय-बीवीने पूछा—मुराद भाई कहाँ है ?

बाय-बीबीका यह प्रश्न साराके लिये मानो उसके शिरपर एक पतीली उबलता पानी उड़ेलना था। शिरसे पैरतक उसका शरीर जलने लगा। उसने मनपर बहुत जोर लगाकर पूछा—मैं उसकी खबर तुमसे जानना चाहती थी।

बाय-बीवीने बतलाना शुरू किया—आँधी-पानी शुरू होनेके बाद तेरे चचा बायने शाकुलको बुलाकर उसे मुरादकी खबर लेनेके लिये बयाबानमे भेजा और यह भी कहा कि आँधीमे यदि भेड़ें इधर-उधर बिखर गयी हो तो उन्हे जमा करके लानेमे मुरादकी मदद करना। मुराद भूखा होगा, यह सोचकर मैंने शाकुलके हाथ दो रोटियाँ भी भेज दी।

—शाकुलने उसे बयाबानमे नही पाया ?—अधीर होकर साराने बीवीकी बातको काटकर पूछा।

—धीरज धर, मैं सब कुछ बतला देती हूँ—कहते हुए बायबीबीने अपनी बात जारी की—शाकुल चरभूमिमे गया, लेकिन वहाँ न मुरादका पता था, न भेडोका। फिर उसने चारोओर बयाबान, नहरो, शर-वनोको ढूँढना शुरू किया। सूर्यास्त के समय भेडोमेसे कुछको उसने शर-वन (रसकण्डा वन) के भीतर देखा...

—ददेश् भेडोके पास नही था ?—साराने फिर उतावली होकर पूछा।

—धीरज धर, बतलाती हूँ। शाकुलने एक भेडियेको देखा। वह एक भेडके पेटको फाडकर खा रहा था। उसने बदूकसे भेडियेको मार गिराया और फिर मुराद तथा दूसरी भेडोको ढूँढने लगा। बहुत कोशिश की, किन्तु पता नही लगा। अँधेरा होनेपर हाथ-आयी भेडोको हाँकता घर आया।

—आखिर मुरादको क्या हुआ ?—साराने कहा। उसके शिरपर मानो भारी चट्टान गिर गयी।

—कहा तो—बाय-पत्नीने जोरसे कहा—उसका कोई पता नही लगा।

—तुम्हारे विचारसे उसको क्या हुआ, यह पूछना चाहती हूँ—साराने भी बीबीकी तरह ऊँची आवाज मे कहा।

—तेरे चचा बायका कहना है कि शायद बहुत अधिक भेडाके नष्ट होनेसे डरकर वह छिप गया या किसी तरफ चला गया, लेकिन दैवी आफतके लिए मैं उसे दड नही दूँगा, और मुझसे कहा कि सारासे जाकर कहदे कि अगर मुराद आए तो उसे मेरे पास भेज दे, मैं उससे नाराज न हूँगा।

—मैं उसका पता कहाँ से पाऊँ—साराने बाय-पत्नीकी तसल्ली देनेवाली बात सुनकर कुछ शान्त भावसे कहा।

—मैं कल सबेरे-ही फिर शाकुलको उसे ढूंढनेके लिए बयावानमे भेजूंगी—कहती बायकी मेहरिया चली गयी।

× × ×

दूसरे दिन बाय-बीबी फिर साराके पास आयी और इस बार भी बेवक्त रातमे सोनेके वक्त। आज जो खबर लायी थी, वह कलसे भी बुरी थी। उसके कथनानुसार आज भी शाकुलने बयावानमे मे जाकर जाँच-पड़ताल की, किन्तु मुरादका कही कुछ नही पता चला। थककर वह उसी शर-वनके पास आया, जहाँ पिछले दिन भेड़ें मिली थी। शर-वनको भी एक छोरसे दूसरे छोरतक देख डाला। वहाँ भी कोई पता नही चला, लेकिन जब नहरको देखकर लौट रहा था तो कुछ शरो (सरकड़ो) के नीचे उसे खूनके चिन्ह और फटे वस्त्रोके साथ आदमीकी हड्डियाँ दिखाई पडी।

इस समाचारको सुनकर साराके ऊपर जो गुजरी उसका चित्र लेखनीसे नही खींचा जा सकता। उसने "वाय" कहकर अपने हाथों-को छातीपर मारा, मानो वहाँसे अपने कलेजेको पकड़कर निकालना चाहती हो। फिर जैसे उसके नीचे बारूदकी आग लग गयी हो। एका-एक उठ खडी हुई और अपनेको न सँभालकर जमीनपर गिर पडी। कुछ देर तड़फनेके बाद उसका रग सफेद हो गया, हाथ-पैर फैल गए और वह लम्बी पड गयी। फिर कोई शब्द या गति उसमे दिखाई न पडी।

बाय-बीबीने समझ लिया कि वह मर गयी, लेकिन जब जेबसे दर्पण निकालकर उसके मुंहके सामने रखा, तो दर्पण धूमिल हो गया। पता लगा कि अभी वह मरी नही।

शादी भी माँकी चिल्लाहट सुनकर उसे जमीनपर गिरता देखकर रोता हुआ उसके ऊपर आ गिरा। बाय-बीबी जिस वक्त घरसे बाहर निकली, बेटवाके रोनेके शब्दोंके सिवा और कुछ सुनाई नही दे रहा था।

मुरादके गुम होनेके एक सप्ताह बाद एशानकुल बायने साराके पास इमाम (पुरोहित) और अकसक्काल (मुखिया) को मँगनी के लिए भेजा उन्होंने मुरादके भेडिया द्वारा खाये जानेपर शोक प्रगट करते हुए बायका विवाह-सदेश साराके पास पहुँचाया और कहा कि मुरादकी मृत्युपर बायको बहुत अफसोस हुआ है, मुरादकी आत्माको शान्ति देने तथा उसकी सेवाओके,बदले उसके पुत्रका बाप बननेके लिए बाय चाहता है कि साराको धर्मानुसार अपनी विवाहिता बनाये।

सारा उनकी इन बातोको सुनकर रो पडी और कुछ देर रोकर दिल हल्का करनेके बाद बोली

—पहले तो अभी यही नही मालूम, कि मेरे पतिको भेडियाने खा ही डाला है, दूसरे, यदि मेरे पतिको भेडियाने खा ही लिया हो, तो भी अभी मैं पति करना नही चाहती। मेरे बच्चेके लिए सौतेले पिताकी आवश्यकता नही। यदि उसकी आयु है, तो हमारे देशमें जैसे और बहुत-से बेबापके बच्चे है उसी तरह यह भी किसी तरह सयाना हो जायगा।

एशानकुल बायकी बातको सारान अस्वीकार कर दिया। बाय इसके लिए कोई दूसरा उपाय सोच रहा था। इसी समय खबर मिली कि उस गाँवसे बहुत दूर नीचेकी ओर आमूके तटपर पानीमे बहकर आया एक मुर्दा मिला है। खबर लानेवालेने कहा कि मैंने मुर्देको अपनी आँखो देखा। वह मुरादकी शकल सूरतका था। उसने यह भी बतलाया कि आदमी स्वय नदीमे गिरकर नही डूबा, बल्कि उसे गोली मारकर नदीमे फेंक दिया गया था।

सारा इस खबरको सुनकर अपने बच्चेको कधेपर लिये नदीक किनारे किनारे उस गाँवमे पहुँची। मुर्देको तबतक दफना दिया गया था। उसने कब्रको खुलवाकर देखा—मुर्देका शरीर बिलकुल फूल गया था और पहचानमें नहीं आता था। इसलिए सारा नही जान सकी कि

यह मुर्दा मुरादका है या किसी दूसरेका, तो भी उसको संदेह हुआ कि उसके पतिका ही मुर्दा है, इसलिए उसे देखते ही वह फिर बेहोश हो गयी। होशमें आकर फिर उसने मुर्देको इधर-उधर करके देखा, किन्तु वहाँ जगह-जगह छेद थे, जिससे वह निश्चय नहीं कर पायी, कि उसमें गोली का कोई निशान है या नहीं।

सारा पतिके जीने-मरनेके बारेमें कोई भी निश्चय न कर आँखोंसे आँसू बहाती हृदयसे जलती और तनसे काँपती अपने घर लौटी। पतिको गुम हुए देर हो गयी। वह भेड़िया या गोलीका शिकार हुआ, इस खबरका कहींसे इन्कार नहीं हुआ। इसलिए वह शोक मनानेके लिए सूतकमें बैठ गयी।

× × ×

अभी सूतकके दिन भी बीत न पाये थे कि एशानकुलने दोबारा मँगनी के लिए आदमी भेजा और अबकी बार और साफ आवाजमें। घटकने जाकर सारासे यह भी कहा—तू अपने पतिके मुर्देको अपनी आँखो देख आयी है। अब पति न करनेका कोई बहाना नहीं है। यदि अब भी तू पति न करनेकी बात करती है तो हम राजी नहीं हैं कि एक जवान स्त्री बिना पतिके जीवन बिताये और उसके कारण गाँवके जवान पापमें पड़ें। इसलिए पति करना आवश्यक है। बायसे बढ़कर कोई दूसरा पति होने लायक आदमी इस गाँवमें नहीं है।

साराने भी अबकी बार अपनी आवाज बदल दी, घटकको बेशरम बताया और बायको बेइज्जत कर उसपर अपने पतिके मारनेका आरोप लगाया। साथ ही जो भी शब्द मुँहसे आया वही कह दिया।

लेकिन बाय इतनेसे चुप होनेवाला नहीं था। उसने पहले गाँवके बड़ोंके कंठमें घी लगाया और फिर शाकुलके अधीन गाँवके कितने ही गुंडों

को भेजकर रातके वक्त जबर्दस्ती साराको पकड मँगवाया। अत मे इमाम-को बुलाकर निकाह पढवा लिया। इस तरह सारा उसकी व्याहता बन गयी।

× × ×

यद्यपि सारा अब बायकी निकाही बीबी थी, लेकिन बायका वर्ताव उसके साथ पत्नी-जैसा न था। उसकी आसक्ति भी उसके प्रति वैसी नही थी, इस समय साराको अपने हाथमे करनेके बायके दो उद्देश्य थे। पहले यह कि वह साराको दिखलाना चाहता था कि बाय लोग और खास कर एशानकुल बाय जिस बातपर अड गये, उसे पूरा करके रहे। जिसने उसके रास्तेमें बाधा डाली, वही साराकी तरह ही अतमे नाक रगडनेको मजबूर हुआ। दूसरे यह कि इस तरह मुरादकी जगह बिना पैसे-कौडीके एक दासी और गुलाम-बच्चा हाथ आयेगा।

इसीलिए निकाहके दूसरे दिनसे ही उसने साराको घर और बया-बानके कुछ कामोमे लगा दिया। सारा पहले हीसे एशानकुलकी बीबी बनना नही चाहती थी और अबभी वह उसे अपना पति नही मानती थी। इसलिए निकाहकी रातको जो नया कुर्ता उसे जबर्दस्ती पहना दिया गया था, अकेले होते ही उसने उसे उतारकर फेंक दिया और फिर पैबद लगे अपने उसी पुराने कुर्तेको पहनने लगी, जिसे कि वह घरपर पहना करती थी। बायके घरमे साराकी जिंदगी उस समयकी मेहनत-कश स्त्रियोके काम करते-करते मरनेवाले जीवनसे और भी अधिक कष्टमय थी। जैसे दासता-युगकी दासियाँ सिर्फ काम करनेके लिए खरीदी जाती थी, उसी तरह सारा भी सदा काम करनेके लिए मजबूर थी। वह बिना ठीकसे खाये, बिना ठीकसे सोये, और बाय और उसकी बीबियोकी गालियो और मारोपर "आह" भी न करते हुए काम करती।

वाय शादीका वाप बना था, लेकिन उसके घरमे उसकी जिन्दगी बेबापके बच्चोंसे भी बुरी थी। जिस तरह कूचेमे पैदा हुए बेमालिकके पिल्ले हर एकको ठोकर खाते हुए जिन्दगी बिताते हैं, उसी तरह शादी भी जिन्दगी बिताने लगा। जिस तरह मछलीका बच्चा पानीसे दूर बालूमे पड़ा तड़पता है, उसी तरह शादी भी तड़पते हुए जिन्दगी बिताने लगा। शादीको सबसे अधिक दुःख वायका पुत्र इस्तम् देता था। वह शादीसे तीन साल बड़ा था, इसलिए अपने बलसे फायदा उठाकर उसे दिनमे कई-कई बार मारता था। यदि शादी रोता, तो इस्तम्की माँ उसे और मारती।

शादी जब कुछ बड़ा हुआ और उसमे इतना बल आगया कि इस्तम्के पैरमे हाथ डाल उसे उठाकर उसे चबूतरेके नीचे फेंक दे, तब इस्तम्की माँ उसके इस अपराधके लिए अपने ही मारनेसे सन्तोष न कर उसे अपने पतिसे भी पिटवाने लगी। एक बार उसपर इतनी मार पड़ी कि उसका सारा बदन सूज गया और वह बीमार पड़कर एक महीना मौतकी घाट जोहता रहा। आगे भी कोई दिन ऐसा नही जाता, जब वाय और उसकी बीवियाँ उसे न पीटती। मार खाते-खाते शादीको उससे बचनेका एक ही उपाय सूझा, कि मालिकके सामने न आये और इसके लिए वह घासके ढेर या ऐसी ही दूसरी जगह जाकर सोने लगा। सारा बच्चेको प्राणोसे भी प्रिय समझती थी उसका जीवन उसे बँधा हुआ था। वह शादीकी इस हालतको देखती, लेकिन उसकी कोई सहायता न कर सकती, यहाँ तक कि खुद भूखी रह कर भी सूखी रोटीका एक टुकड़ा तक उसे मुश्किल से ही दे पाती।

वाय जबसे साराको अपने घरमे लाया, एक बार भी उसने शादी-को उसके नामसे नहीं पुकारा। वह उसे "अनयवा" कहकर पुकारता, "अनयवा" कहकर काम बताता और "अनयवा" कहकर पीटता। वायके मुँहसे सुनकर उसके घरके दूसरे व्यक्ति भी उसे "अनयवा" कहने लगे। जब शादी कुछ बड़ा हो गया, तो "वा" निकाल दिया गया,

और अब उसे सभी लोग "अनाथ" कहने लगे। शादी उसका नाम था, यह बिल्कुल ही भुला दिया गया। यहाँतक कि उसने खुद भी अपना नाम बताना छोड दिया और किसी के पूछने पर अनाथ कहकर जवाब देने लगा।

७

फरवरी का महीना था। आकाशसे हिमकण की वर्षा हो रही थी और कभी-कभी कडी हवा भी चल पडती थी। उसी समय एक विशाल मैदानमें बहुत से आदमी नगे शिर खडे थे। नदी के किनारे कोई छाया नही थी कि वह उसके नीचे बैठते। वहाँ न कोई गाँव-गिराँव था, न कोई इमारत ही और न कोई गुफा थी। सिर्फ एक चादर (तबू) दिखलायी पडती थी, जिसके ऊपर बेल-बूटेदार आलवानो के टुकडे सिले हुए थे। चादर के पास एक ओसारेवाला शामियाना तना हुआ था।

तबू के भीतर कोई नही था, किन्तु शामियानेके नीचे दो-तीन पहरेदार खडे थे। इनके शिरपर शलगमी आकारका सैनिक साफा, बदनपर बुखारी कहकलानी जामा और पैरोमें अमेरिकन बूट थे। इनकी कमर मे सफेद सगीना कमरबन्द बँधा था, जिससे जान पडता था, कि वह अमीर के निम्न श्रेणी के दरबारी थे। आदमी तबूके चारो ओर निगाह डालत खडे थे और किसीको वहाँसे सौ कदम तक नजदीक नही आने देते थे। यदि कोई उधर ध्यान से देखने लगता तो पहरेदारोमेसे एक बोल उठता "इधर निगाह न कर, अपनी आँखोको बन्द कर।"

ऐसे मे दूर एक सवार आता दिखलायी पडा। वहाँ बैठे सभी आदमियोकी नजर आगन्तुक के ऊपर गड गयी। सवार तबूके पास पहुँच कर शामियानेके नीचे खडे लोगो से "श्रीदरबार कूच कर रहा है" कहकर घोडेके मुँहको पीछे फिरा कर लौट गया। दो मिनट और बीता। एक सवार घोडा दौडाता आया, "श्रीचरणो ने घोडा माँगा है" कहा और फिर घोडे का

मुंह मोड कर दौडाता लौट गया। दो मिनट बाद फिर एक सवार आया और 'श्री शरीरने अश्वके जीनको शोभित किया' कहकर घोडा दौडाता लौट गया। इसके बाद हर दो मिनटके बाद एक एक सवार घोडा दौडाता आया और बिना कुछ कहे उसी तरह घोडा दौडाता लौट गया।

इस तरहकी व्यर्थ की घोड दौड देरतक नही हुई कि एक सवार आया, जिसके पीछे घोडकी जीनके ऊपर छोटे पैरावाली मोडकर रखी चारपाई भी बँधी थी।

वहाँ जमा हुए आदमियोंसे एक फटा-पुराना जामा पहिने आदमीने अपने पास खडे सैनिकस पूछा—यह क्या है ?

—यह श्रीचरणकी अपनी चारपाई है। जब श्रीचरण सोना चाहते है तो इसी के ऊपर पौढत है—सैनिकने जवाब दिया।

चारपाईवाले के बाद एक दूसरा सवार आया। वह अपने आगे घोडेपर काली देग रखकर घोडा दौडाता आया। उसी आदमी ने फिर पूछा—यह क्या है ?

यह ताजा पोलावसे भरी देग चूल्हेसे उतारकर लायी गयी है—सैनिकने कहा—यदि श्रीचरण दो मंजिलोके बीचमे भोजन करनेकी कृपा करते हैं तो इसीमेसे निकाल लेते हैं।

इसके बाद फिर एक सवार आया जिसके घोडेपर एक जोडा दो दो खानेवाला लकडी का ढाँचा था। हर एक खानेमे एक-एक कूजा (सुराही) था यानी सब मिलाकर चार कूजे रखे थे। कूजोके ऊपर सवार बैठा था। उसके हाथमे एक चीनीका कटोरा भी था। सवार पैरोको घोडेकी गर्दन की तरफ लटकाये घोडा दौडाता आया।

—यह क्या है ?—उसी आदमीने पूछा।

इस आदमीका सूफी आब-कस कहते है—सैनिकने जवाब दिया—इन कूजोंमें खास तौरसे पानी भरके रखा गया है कि जिस समय भी श्रीचरण पानी माँग कटोरेमे डालकर उन्हे दे दिया जाय।

उसके बाद फिर घोड़ा दौड़ता एक सवार आया। इस सवारने एक प्यालेको रूमालके भीतर रखकर रूमाल के चारों छोरों को हाथ से पकड़कर ऊपर उठा रखा था।

—यह क्या है?

—यह "शर्बतदार" है। रूमालके भीतरके प्याले में शर्बत भरा है। यदि श्रीचरण शर्बत पीनेकी इच्छा प्रकट करते हैं तो शर्बतदार तुरन्त इस प्यालेको श्रीचरणोंके सामने रख देता है।

रास्तेके किनारे की बिलोंसे ऊदबिलाव चेहरा निकाले हुए थे। कुछ तमाशबीनोंने उनके ऊपर ढेले-पत्थर फेंके। एक ऊदबिलाव लोगोंसे डरकर भागा। शर्बतदारका घोड़ा दौड़ता हुआ उसके पास आया और उसे देखते ही भड़ककर पिछले पैरके बल खड़ा हो गया। शर्बतदार सँभाल नहीं सका और उसके हाथसे प्यालेवाला रूमाल छूटकर तमाशबीनोंके सामने जा गिरा। प्याला टूटकर टूक-टूक हो गया, किन्तु उसमें शर्बत-वर्बत कुछ नहीं निकला।

—यह प्याला खाली था क्या? फटे-पुराने जामेवाले आदमीने अपने पास खड़े आदमीको "शर्बत भरा है" कहनेके लिये झूठा ठहराते हुए पूछा।

सैनिकका मुँह लाजसे लाल हो गया, लेकिन उसकी ओरसे एक दूसरे आदमी ने कहा—हो सकता है, अमीर उस चारपाई पर कभी एक बार भी सोया न हो, वह देग भी खाली और कूजे भी बेपानी हों; लेकिन लोगोंके सामने बादशाही दबदबा दिखलानेके लिए इन चीजोंको इसी तरह लेकर दौड़ते हैं।

अब रास्तेसे अकेले-अकेले सवार नहीं, बल्कि बहुत-से सवार भारोंसे लदी घोड़ा-गाड़ियोंके साथ, चारों ओर एक-दूसरे के ऊपर रास्तेका कीचड़ उछालते आए। इन घोड़ा-गाड़ियोंमेंसे एक घोड़ा-गाड़ी (अरावा) पर ओहार चढ़ा हुआ था। ओहारके ऊपर बड़ा नमदा डालकर, गाड़ीको खूब अच्छी तरह ढाँक दिया गया था।

—यह उर्दा (अन्तःपुर) का अरावा है—सैनिक पोशाकवाले आदमीने बिना किसीके पूछे ही कहना शुरू किया—इसके भीतर श्री-चरणोका माननीय अन्तःपुर और खास बीवियाँ बैठी हैं। निषिद्ध व्यक्तियोकी नजर उनके ऊपर न पडे, इसलिए अरावाको चारो ओरसे खूब ढाँक दिया गया है।

अराबा जाकर चादर (तबू) के पास खडा हुआ। शामियानेके नीचे खडे खिदमतगारोंमेसे एकने आकर नमदेको खोल दिया और उसके भीतरसे कोई सोलह-सत्रह साला लडके एकके पीछे एक निकलकर तबूमे चले गये। लडकोकी पोशाक बहुत अच्छी थी, लेकिन उनका रग बहुत उडा हुआ था, और चेहरेसे जान पडता था कि बहुत समय जेलमे रहकर अभी-अभी बाहर निकले है या सालोकी बीमारीके बाद अभी-अभी उठे है।

—ये कौन हैं?—कहकर फिर उसे फटे जामेवालेने पूछा, जो मानो हर चीजको जानना चाहता था, लेकिन इस अराबाको उर्दाका अरावा कहनेवाले आदमीने मुँहको दूसरी ओर फेर लिया था, जैसे उसने कुछ सुना ही नही, लेकिन किसी दूसरे आदमीने प्रश्नका जवाब देते हुए कहा

—यह वह लडके हैं जिन्हे अमीरने जोर-जुलुमसे उनके माँ-बापसे छीनकरके अलग रखा है। यह जुल्मके सताये वह अभागे है जिन्हे कि अमीरने अपने दरबारी भ्रष्टाचारके कीचडमे डालकर अपनी पाशविकता-का शिकार बना रखा है। यह नवजात हरे अकुर है जिन्ह अमीर-के गन्दे जूतोंने पामाल कर रखा है। यह वह नवोत्फुल्ल कलियाँ हैं जो अन्यायी के तापके नीचे मुरझा गयी है। यह दरबारी जीवनसे घृणा रखते है, यह उत्पीडित हैं, रज और शोक सहनेवाले हैं, इसीलिए जिन्दा होने-पर भी इनके मुँहका रग मुर्दे की तरह है।

सवारो और अराबोके गुजर चुकनेपर अमीरका निजी सेनादल दिखलायी पडा। इनकी पोशाक कफकाज (काकेसस) वालो जैसी थी

और इन्हे "कफ़कॉज" का नाम भी मिला था। कफकाज सैनिक दलके निकल जानेपर अमीरके उदेचो और शगावुल दिखलायी पडे। इनके हाथोंमें सोना-मढे-चोव (सोटी) थे और सुनहली डोरी थी। अगाडी-पिछाडीवाले घोडोपर सवार थे और घोडोको न दौडाकर कुछ धीरे धीरे चला रहे थे। उनमेसे एकने ऊँची आवाजसे कहा

— हजरत अमीर विजयी और जयशाली हो! फिर दूसरेने चिल्लाकर कहा—'हजरत अमीर (श्रीमहाराज) विश्व विजयी (जहाँगीर) होवें, उनका खड्ग तीक्ष्ण और उनकी यात्रा निर्विघ्न हो!'

तीसरेने उनके जवाबमे कहा—'इलाही! आमीन" (भगवान्! एवमस्तु!)

फटे जामेवाला इन चिल्लाहटोको सुनकर ठठाकर हँसा।

क्यो हँस रहा है?—एकने उससे पूछा।

—अमीर अपने देशके उत्पीडित मेहनतकशो पर विजय नही प्राप्त कर सका। उन्होने इसे देशसे नष्ट करनेके लिए हथियार उठाया है, उनपर इसने विजय न पायी और न पायेगा। यहाँ हम आँखो देख रहे हैं कि वह अपने देशसे कैसी बेइज्जती और रुसवाई के साथ निकाला जाकर दूसरे देशोमें भागा जा रहा है और भी ये लोग 'श्री महाराज विजयी और जयशाली हो, उनका खड्ग तीक्ष्ण हो और वह विश्व विजयी हो' कहते हुए चिल्ला रहे हैं। क्या यह हँसी आनेकी बात नही है?—फटे जामेवालेने कहा।

—हाथमे हथियार उठाए उत्पीडित मेहनतकशोके हाथसे सलामतीके साथ भाग निकलना भी अमीरके लिए एक विजय है—एक दूसरे आदमीने कहा—चाहे जहाँगीर (विश्व विजयी) न हो, किन्तु परदेशमे जाकर दर बदर भटकते 'जहाँ गर्द' (विश्व अटक) तो हो ही सकते हैं।

अब एक भारी दल प्रगट हुआ, जिसे देखकर लोगोने कहना शुरू

थिया—इन्हीके भीतर अमीर आ रहा है,लेकिन चारो ओर से हथियारवद अफगान घेरे हुए थे, इसलिए उसे कोई देख नही सकता था।

—क्यो अमीरने अफगानोको अपना रक्षक बनाया ?—फिर फटे जामेवाले ने पूछा।

—अमीरने अपने लोगोपर बहुत जुल्म किया है, इसलिए उनसे बहुत डरता है यहांतक कि अपने निजी सैनिकोपर भी विश्वास नही रखता। इसीलिए लोगोके लूटे मालसे इन परदेशियोको खरीदकर उन्हें अपना मददगार बनाकर भाग रहा है—एक दर्शकने कहा।

अमीर तम्बूके पास जाकर घोडेसे उतर पडा और फिर तम्बूके भीतर गायब होगया। कुछ मिनट बाद एक पेशखिज़मत (खिदमतगार) एक अमलदार (अफसर) को आवाज देकर अमीर के पास ले गया। पांच मिनट बाद उस अमलदारने दर्शकोके पास आकर स्थानीय बायो (सेठ-जमींदारो) अरवावा (चौधरियो), अक्सक्कालो (मुखियो), मुल्लो (पुरोहितो) और अमलदारोको अलगकर, एक ओर लेजाकर उन्हें अमीर का सलाम देकर कहा

—श्रीचरण भाग्य नसीब और भगवान्‌की इच्छाके अनुसार पडोसी देशमे जा रहे हैं। श्रीचरण नही चाहते कि उनके सच्चे गुलाम बोलशेविकोंके हाथसे कष्ट सहें, इसलिए उन्होनें कहनेकी कृपाकी है, 'बाय लोग अपनी सभी चल सपत्ति, नगद पैसा पशुओ और अपनी बीबी-बच्चोको साथ ले मेरे पीछे नदी (आमू) पार आयें। और यह भी कृपावचन कहा है वे अपनें नौकरो चरवाहो और खिदमतगारो को साथ लिए दिए दरिया पार करें जिसमे कि उनकी सहायता से अपने पडोसीके देश—जो कि मेरा दोस्त है और अपने वतनकी तरह है—मे आकर अपनी खेती पशुपालन या वाणिज्यके कामको जारी रख सकें। मुल्ला लोग मेरे लिए दुआ करते यही रह जायें और मेरे विरुद्ध तलवार उठानेवाले भुक्खड मेहनतकशो और बोलशेविकोके विरुद्ध, शराफतके

नाम से लोगो को उभाडें । स्थानीय अमलदार हाथमे हथियार ले, देहातको बर्बाद करें, मकानो और खेतो को जलायें, लोगोको मारें और परिवारोको नष्ट करें, जिसमे कि सभी बेजार होकर मेरे शासन-कालको याद करें। अरबाव और अकसक्काल मुँहपर पर्दा डालकर बोलशेविक सरकारके भीतर घुस जायें और जहाँतक हो सके, भीतरसे ध्वस और विनाशका काम करें।

अमीरी सरकारके खैरख्वाह इस बातको सुनकर ऊँची आवाज मे चिल्ला उठे—"हम सभी जान-माल और बीबी-बच्चोके साथ श्रीआज्ञा के बन्दे है। हमे विश्वास है कि जल्दी ही अपने देशको फिरसे अपने हाथ मे लायेगे।'

इस हल्लेके जवाबमे वहाँ एकत्रित लोगोमेसे, जिनमे अधिकाश फटे जामेवाले थे, किसीने अपने हाथको मुँहपर रखकर सीटी बजायी और दूसरोने ऊँची आवाजसे कहा

—इसके बाद देशको तू सिर्फ अपने स्वप्नमे ही देख सकेगा।

अमीर और उसके अमलदारो को इस वक्त इतना अवसर नही था कि अपना अपमान करनेवालोको पकडकर दड दें, क्योकि दूरसे तोपकी आवाज आ रही थी। अमीर और उसके अमलदार वहाँ तैयार की हुई नावोपर सवार हो गए और उनके मुँहको अफगानिस्तानकी ओर घुमा-कर जोरसे खेया जाने लगा।

अमीरके दूर हो जानेपर बायो और बाय-बच्चोने अपने आदमियो और सम्बन्धियोको हुकुम दिया कि बयाबानमे जायें और जो कुछ भी भेड-बकरी या पशु हाथ आयें, सबको हाँककर नदी पार करायें। वह स्वय अपनी चल सपत्ति, रुपया-पैसा, बीबी-बच्चो और खिदमतगारोको लेनेके लिये अपने गाँवोकी ओर चले गए। इसी समय एशानकुल बायने भी अपनी भेडो और ढोरोको लानेके लिए शाकुलको भेजा और स्वय घोडा दौडाता अपने गाँवकी ओर गया।

८

नदी किनारे कुछ पालवाली बडी-बडी नावें तैयार थी। सवार जिन भेडो और ढोरोको हाँककर लाए थे, उनमेसे अधिक से अधिक को उन्होंने नावपर चढाया लेकिन नदीके किनारे बहुत अधिक भेडें रह गयी, क्योकि नावम उनके लिए जगह न थी। ढोर हाँककर लानेवाले चाहते थे कि भेडाके पैरोको बाँधकर उन्हे भी बेजान मालकी तरह नावके ऊपर डाल दे लेकिन इसके लिए मल्लाह तैयार न थे वे। कहत थे—यदि परिमाण से अधिक बोझा लादा गया तो नाव डूब जायगी ?

अनाथ भेडोके पीछे पीछे दौडता-हाँफता नदी किनारे पहुँचा था। वह भी भेडोके साथ नावपर चढ गया। एक पशु हाँकनेवालेने अधिक भेडाके चढानके लिए मल्लाहोंसे झगडते समय किश्तीमे अनाथको देखा। उसने जाकर उसे उठाकर नदीके किनारेकी ओर फेंक दिया और 'तू किस काम आयगा, तेरी जगह यदि एक भेड पार हो, तो वह मेरे लिए अधिक लाभकी होगी' कहते हुए नावसे उतरकर एक दूसरी भेड को लाते हुए मल्लाहसे बोला, ''अच्छा तो उस बच्चेकी जगह इस भेड को रखते है।

नावसे उठाकर अनाथको फक दिया गया, किन्तु वह तुरन्त ही अपनी जगहसे उठ गया और नावके छोरको पकडे हुए 'मेरी मैया अपनी माईके पास जाऊँगा कहते हुए चिल्लाने लगा किन्तु उसी आदमीने फिर उसे चढने नही दिया।

बच्चेके रोने चिल्लानेसे मल्लाहको दया आगयी और उसने उसे उठाकर अपनी बगलमे बैठाते हुए कहा

—मैलश (अच्छा), नाव भारी होकर डूब जाय, बायाके माल और जानवर नष्ट हो जायँ, मुझे इससे क्या ? यदि नाव न डूबी तो तुझे अपने साथ निकाल ले चलूँगा और तेरी माँ के पास पहुँचा दूगा।

× × ×

नदी पारकर अनाथ उन कैम्पोको एक-एक करके देखने लगा जिनमे भगोडे ठहरे हुए थे।

उसने पहाडी सानुओ, विस्तृत बयाबानो, मैदानो, चरभूमियो, खड्डो और गुफाओको छान मारा, किन्तु उसे वहाँ करुणामयी माँ नही मिली। वह तो केवल माँके पानेके ही लिये नदी पार आया था।

नदीके नजदीकवाले प्रदेशमे माँको न पाकर अनाथ इस पराये मुल्कके और भीतरके स्थानोको ढूँढनेके लिए चल पडा। वह उन सभी जगहोमे जाता, जहाँ कि सफेद भगोडे ठहरे हुए थे। दिन बीत गया और रात आ गयी। दिन भरके थके अनाथने एक भगोडेके तबूमे जाकर ठहरनेकी आज्ञा माँगी, लेकिन डेरेके स्वामीने एक टुकडा रोटी देनेकी जगह उसे पत्थर मारते हुए कहा——इस देशमे यात्रा करके हम ही पेट भर पाए हैं कि तू ही अब चला है पेट भरने ?

यद्यपि उस आइरा (डेरे) मे गेहूँ-उडदके भरे हुए बोरे जगह-जगह रखे थे, भागत वक्त पकाकर लायी गयी रोटियाँ थी, मासमे नमक डालकर रखा हुआ था, भेडोको दुहकर जमाया गया दही रखा था, और मक्खन निकालने और पनीर सुखानेकी तैयारी हो रही थी।

अनाथ रातको एक गड्ढेमे घुसकर उसी तरह भूखा-प्यासा सो गया, लेकिन उसे नीद नही आयी। बार-बार करवटें बदलते और करुणामयी माँको याद करते हुए गिरको गड्ढेकी दीवारसे लडा-लडाकर रोता रहा। लेकिन कोई नही था, जो उसकी पुकारको सुनता, उसके रोने-सिसकने पर पसीजता। रात्रि के अतिम पहर तक स्वप्न या बेहोशीमे समय गुजारा। जब आँख खुली तो देखा कि सूर्यका प्रकाश गड्ढे के अन्दर आ रहा है। अनाथने गड्ढेसे निकलकर रास्ता पकडा और फिर रातीके बदले पत्थर खाते हुए आगे कदम बढाया। दोपहरके वक्त उसमे चलनेकी शक्ति बिलकुल न रह गयी और एक सूखे घासके मैदानमे जारलम्बा पड रहा। उसने एक सूखी, किन्तु वर्षामे भीगी बूटीके झाड——

मुंह मे डाला और चबाना चाहा, लेकिन स्वाद इतना कड़ुआ था कि निगल न सका। उसने उसे मुंहसे थूककर बहुत थू-थू किया, किन्तु मुंहकी कड़ुवाहट और मनकी अरुचि दूर न हुई।

कुछ क्षण बाद मुंहका स्वाद फिर पहले जैसा हुआ, लेकिन भूख फिर अंतड़ियोंको काटने लगी। उसने लकडी लेकर जमीनको खोदा और मिट्टीके नीचेसे पतली जड निकालकर चबाना शुरू किया, पर यह भी कडवी और दुस्वादु थी, तो भी चबाते वक्त उससे रस निकला, जिसके भीतर जानेसे अनाथ का चित्त कुछ तुष्ट हुआ। वह आंखो को दबा कर चेहरेपर सिकुडन डाले हुए चबाई हुई जडको जोर लगाकर निगल गया। मन खराब नही हुआ और जडने जाकर पेटमे स्थान लिया। अनाथकी हिम्मत बढी और उसने और भी कितनी ही जडोको खोदकर खाया। पेटको कुछ आराम मिला। उसको भी कुछ हिम्मत हुई। इस तरह वह फिर आगे रवाना हुआ। आज अनाथने कई वार जड और पानीसे पेटको आराम दिया और शामतक मांकी खोज करता रातमे फिर एक गड्ढेमे पकडकर सो रहा। शामको आसानीसे नींद आयी, लेकिन रातको नीद उचट गयी। उसके पेटमे दर्द होने लगा। उसने कै करना चाहा, लेकिन कै मे कुछ निकला नही। उसने पानीसे बाहर पडी मछलीकी तरह रात बितायी। सूर्योदय के बाद वह फिर गड्ढेसे निकला, लेकिन पेटके दर्द और पैरके फफोलोने उसमे चलनेकी शक्ति नही रखी। फफोलोने फूटकर पैरको घायल बना दिया था। अब उसके सामने दो ही रास्ते थे या तो उसी जगह पडा-पडा भाग्यपर विश्वास कर मरनेकी तैयारी करे, या दिल कडा करके रास्ते-रास्ते करुणामयी मांको ढूंढने की कोशिश करे।

उसने अपने मनसे कहा 'चाहे मैं यहां पडा रहूं या भटकता रहूं, मेरे भाग्यमे मरना बदा है, लेकिन एक जगह रह कर निराश होकर मरने-की तैयारी करने से अपने लक्ष्य की ओर बढना कही ठीक है।" वह फिर

अपनी जगहसे उठा, लेकिन पाँच-छ कदम जाकर रास्तेमे गिर पडा । पेट और पैरके दर्दके मारे वह सीधे खडा नही हो सकता था । वह चौपायो की तरह पैरके पजो, घुटनो और हथेलीको जमीनपर जमाकर आगे बढने लगा । घटा भर इस तरह पशुचारिका करते समय रास्तेके ककड-पत्थरो, काँटो और सूखी खूटियोने उसकी हथेली और घुटनोको भी लहूलुहान कर दिया, लेकिन तब भी वह अपने रास्तेपर चलता ही रहा ।

× × ×

अनाथ चार दिनतक इसी तरह सरकता रहा । माँ के मिलनेकी उसे कोई आशा नही रह गयी कि इसी समय उसने अपनी माँको देखा । एक विशाल बयावान था, जिसमे एक बडी रबात (किला-जैसी इमारत) थी । उसीके पास सारा मालोको चरा रही थी । अनाथ माँको देखते ही "मादर-जान" कहकर अपनी सारी शक्ति लगाकर चुम्बककी ओर भागते लोहेकी भाँति माँकी ओर दौडा लेकिन, पाँच-छ कदम दौडनेके बाद बेहोश होकर जमीनपर गिर पडा । यह बेहोशी शायद भारी हर्षके कारण हुई, या शायद पेट-दर्द और पैरकी पीडासे हुई ।

साराने अपने प्राणप्रिय पुत्रकी आवाज पहचानी और अपनी लाठीको एक तरफ फेंककर दोनो हाथोंको दो तरफ फैलाया और उडनेवाले पक्षीकी तरह अपने शावककी ओर यह कहते हुए दौडी "जानकम् (मेरे प्राणक), जानकि अज़ीज़कम् (मेरे प्राणप्रियक), जानकि शीरीनकम् (मेरे मधुर प्राणक ।" स्नेहमयी माँकी गोदमे पहुँचकर उसके गरम और मधुर चुम्बनो द्वारा अनाथ होशमे आया । अपने सूखे हुए ओठो को करुणामयी माँके शर्करिल ओठों से लगाकर उसकी जीभको वह वैसे ही पीने लगा, जैसे बचपनमें उसके स्तनोको पिया करता था, लेकिन ज्यादा शराब पिये आदमीके एक बार मे ही बडा प्याला भर शराब पी लेने की ... जैसे वह फिर बेहोश हो गया ।

साराने फिर अपने गरम क्रोड और चुम्बनोंसे उसे दोबारा होशमें लाकर, उठाकर रबातके भीतर पहुँचाया। रबातके भीतर न बाय था, न उसका बेटा, न बीवियाँ। साराने दही-रोटीसे अनाथकी भूख दूर की।

९

माँ-बेटेने पहले आप-बीती सुनायी। फिर अनाथने पूछा—यह रबात किसकी है?

—यह रबात एक स्थानीय बायकी है। जाड़ोंमें वह अपने गाँव चला जाता है। बाय उससे माँगकर इसी जगह ठहरा हुआ है।

—और बाय कहाँ है?

—बाकी बचे अपने मालोंको इधर लानेके लिए नदी तटपर गया है।

—उसकी स्त्रियाँ कहाँ हैं?

—आपसमें लड़ पड़ीं—कहते हुए साराने लड़ाईकी बातें एक-एक करके कह सुनायीं।

साराके कथनानुसार एशानकुल बाय अपने मालों और बीबियोंको लेकर नदी तटपर पहुँचा। वहाँ एक नाव थी। बायने अपने ढोर, व्यापार-का सामान, गल्ला-दाना और दूसरी चीजें नावपर चढ़ायीं। भार ज्यादा हो गया, इसलिए मल्लाह बाय और उसकी बीवियोंको चढ़ानेको तैयार न हुआ। बाय स्वयं और अपने परिवारके साथ गुप्सर (मशक-वाली नाव) द्वारा नदी पार होनेके लिए बाध्य हुआ। उसने अपनी तीनों स्त्रियोंको तीन गुप्सरों पर चढ़ाया और स्वयं एक गुप्सर पर चढ़कर अपने बेटे इस्तम् को अपने पीछे सवार कराके बोला—'अपनी आँखें मूँदकर दोनों हाथोंको मेरी बगलमें डालकर खूब मजबूती से पकड़ ले।" स्वयं बाय आगे-आगे और उसकी बीवियाँ पीछे पीछे पानी काटते हुए आगे बढ़ीं। नदीके बीचतक गुप्सरें ठीकसे आयीं, पर जब नदीकी तेज धारमें

पहुँचीं, तो लहरोंमें अपनी गुप्सरोंको संभाल न सकी। पहिले बड़ी बीबी, और फिर मझली बीबी गुप्सरसे गिरी और दो-तीन बार गोता खाकर पानी की तीक्ष्ण धारामें लुप्त हो गयीं। बाय सिर्फ सारा तथा इस्तम्के साथ नदीके दूसरे किनारे पहुँच सका।

साराने बातको समाप्त करते हुए कहा—इस तरह अब बायकी मैं ही अकेली बीबी, अकेली दासी, अकेली चरवाहिन और अकेली खिदमतगार रह गयी हूँ।

—इस्तम क्या हुआ?—अनाथ ने पूछा।

—इस्तम बायके साथ सलामतीसे नदी पार होकर आया, लेकिन इस समय वह यहाँ नहीं है। बाय उसे अपने साथ ले गया है। वह उसे मेरे पास नहीं छोड़ता। उसको मेरे ऊपर विश्वास नहीं है और डरता है कि कहीं दुश्मनीसे मैं उसके लड़केको हानि न पहुँचादूं।

—बायके चरवाहे और नौकर क्या हुए?—अनाथने पूछा।

साराने जवाब देते हुए फिर सारी कथा सुनायी: अमीरके भाग जानेपर गाँवके सब बायोने, जिनमे एशानकुल बाय भी था, अपने गाँवोंमें जाकर सभी माल-असबाब, गल्ला-दान जमाकर रोटियाँ पकाकर, भेड़ोंको मार कर कुछ दिनोंके लिए भोजन तैयार किया। फिर उन्होंने अपने चरवाहो, और नौकरोंको भी यह कहकर बहकाया कि अब हमारा देश काफिरिस्तान हो गया, आओ हम मुसलमानाबाद (मुस्लिम-देश) चलें। इसी समय गाँवसे बहुत दिनोंका गया एक आदमी पहुँचा। वह वही आदमी था, जो कि मुरादके मुर्देकी खबर लाया और फिर कहीं चला गया था। वह सालमें एक-दो बार बीबी-बच्चोंको देखने गाँवमें आता, लेकिन रात बिताकर फिर चला जाता। बाय जिस दिन भागनेके लिए तैयार थे, उसी दिन वह आदमी गाँवमें आया। उसने गाँवके गरीबों, नौकरों और चरवाहोंको जमाकरके क्रान्तिकी बात कही और लोगोंको बायोंके विरुद्ध भड़काते हुए कहा:

—सोवियत सरकार मजूरों और किसानोंकी सरकार है। यह सरकार

सदा गरीबोकी मदद करती है उन्हे बायोकी दासतासे मुक्त करती है, धरती पानी देती है, औरगरीबोंके पुत्रो, वे-माँ बापके वेबस बच्चोको बाल-शालामे रखकर पालन पोषण करती और उन्हे पढाती है, काम और हुनरकी बात सिखला दुनियामें भेजती है। बाय जिनबोलशविको से डरते हैं, वे कौन है ! बोलशेविक मजदूरो मे सबसे अग्रगामी व्यक्ति हैं। वह एक पार्टीमे सगठित है। उन्होंने आदमियोको बायो, अमीरो और उनके अमलदारोसे मुक्त करनेका बीडा उठाया है। उन्होंने रूसके मजूरोको पूरी तरहसे अपनी ओर करके वहाँ के बादशाह, अमलदारो और मुफ्तखोर बायो (पूँजीपतियो) से मुक्त कर दिया है। बोल-शेविकोकी पार्टी मजूरो और किसानोकी सरकारका पथ प्रदर्शन करती है। बोलशेविक पार्टीके नेता लेनिन और स्तालिन जैसे दुनियाके अद्वि-तीय बुद्धिमान हैं। वे ऐसे पुरुष हैं, जिन्होंने अपना सारा जीवन जाँगर चलानेवाले आदमियोंके सुख और सौभाग्यके लिए अर्पण कर दिया है।

उस आदमीने लोगोकी ओर ध्यानसे देखा और जान गया कि लोग उसके एक एक शब्दको अगूरके दानेकी तरह हृदयस्थ कर रहे हैं। उसने फिर कहना शुरू किया बाय लोग कह रहे है "अब हमारा देश काफिरिस्तान हो गया है।"—वे ऐसी बातें करके तुमको डराते है, लेकिन बोलशेविको और सोवियत-सरकारकी दृष्टिमे काफिर और मुसलमान जैसा कोई नही है। बोलशेविकोकी दृष्टिमे आदमी दो वर्गों मे बँटे हैं बाय और गरीब, मुफ्तखोर और मेहनतकश। सोवियत-सरकार दुनियाके सभी मेहनतकशोको अपना प्रिय पुत्र समझती है। यही कारण है कि रूसकी महान कमकर जनता और उसकी प्रथम सोवि-यत सरकार बुखाराके मेहनतकशोंकी मदद करने आयी और उन्हें अमीरके जुल्म और अत्याचारसे मुक्त किया, और आगे भी वह हमारी सहायता करनेको तैयार है।

सबसे पहले शाकुलका नौकर एरगश् बेदाँत, जिसके दो दाँत एक गुर्गेरी गुरगुर लिए पत्थर मारकर तोड़ दिए गये थे—सभामे

बोलनेके लिए आया और उसने उस जवानकी बातका समर्थन करते हुए कहा

—मैं १५ सालसे शाकुल बाय-बच्चाकी खिदमत कर रहा हूँ, लेकिन कभी पेट भर रोटी नही खायी कभी नया कपडा नही पहना। इन सारी मुफ्तकी सेवाओके बदले उसने पत्थर मारा और मेरे अगले दोनो दाँतोको तोड दिया। पहले मुझे लोग एरगश कहते थे, लेकिन पीछे बायकी कृपासे मेरा नाम एरगश बेदाँत पड गया।

जवानने एरगशके बाद फिर अपनी बात शुरू की

—यदि शाकुलने तेरी खिदमतके लिए एक पत्थर देकर तेरे दो दाँत तोड दिए तो उसने एशानकुलके हुकुमसे एक गोली मारकर मुरादको दुनियासे खतम कर दिया और उसकी स्त्रीको दासी और बेटेको अनाथ बना दिया।

आदमी जवानकी इस बातको सुनकर चिल्लाने लगे। अभी तक लोग सदेह ही करते थे कि एशानकुल बायने मुरादको मरवाया है लेकिन किसीने इस बातको खुलकर कहते नही सुना था। यह खबर साराके पास भी पहुँची और उसने अपने प्रिय पति के हत्यारे खूनखर (खूँखार) शाकुल और भेडिये एशानकुलको साफ तौर से जान लिया।

इस सभाके बाद लोगोको इतना गुस्सा आ गया कि यदि उनके पास हथियार होते तो वे भागने के लिए तैयार बायोको मारकर उनकी सारी चीजें छीन लेते। अफसोस कि उनके पास कुदाल फावडेके सिवा और कोई हथियार नही था, और बायोमेंसे हर एकके पास दो दो तीन-तीन पंचगोलिया बन्दूकें थी। गाँवके मेहनतकशोंमेसे कोई बायो-की बातमें नही आया और न उनके पीछे गाँव छोडनेके लिए तैयार हुआ। साराने भागनेके दिनकी बात करते हुए कहा—यही कारण हुआ कि एशानकुल बायके नौकर और चरवाहे भी दूसरे मेहनतकशो के साथ सोवियत सरकारके पक्षपाती हो गए और बायके पीछे नही आए। मैं भी आना नही चाहती थी, लेकिन बायने एक कदम भी

मुझे अपनेसे दूर हटने नही दिया। गर्दनमे बन्दूक, कमरमे तलवार और हाथमे तमचा लिए मुझे आगे आगे गुप्सर पर सवार कराया और दूसरी बीवियोको स्वतन्त्र छोडकर मेरी गुप्सरकी रस्सीको अपने हाथमे पकडे रहा।

—उस आदमीका क्या नाम था, जो कि बायोके विरुद्ध लडा हुआ? क्या वह हमारी जान-पहिचानका नही है?—अनायने सवाल किया।

—ने तू उसे नही पहचानता। वह गाँवमे कम आया करता है। शायद तूने उसे कभी देखा भी न हो—साराने जरा दम लेकर एकाएक कहा—एय, नही जानता कुर्बान नामके बच्चेको?

—हाँ हाँ, उसे मैं जानता हूँ—अनायने माँकी बात काटकर कहा—वह बहुत अच्छा लडका है। मैं उसे "अका कुर्बान" (कुर्बान भाई) कहता था। चर भूमिमे मेंडोको सँभालना जब मुश्किल हो जाता था तो वह मेरी मदद करता था।

—ठीक है—साराने कहा—मैंने जिस आदमीका जिक्र किया, वह इसी कुर्बानका का रुजीमुराद है।

—अब मुझे याद आया, मैंने एक बार उसे देखा था। कुर्बान ने मुझे बतलाया था कि यह मेरा बाप है, किन्तु मुझे विश्वास नही हुआ था। वह लडकेकी तरह जान पडता था, यद्यपि कद लम्बा था। लेकिन दाढी नही थी और मूछ भी कम-कम थी।

—उसकी उमर तीससे ज्यादा है, लेकिन दाढी नही रखता, इसलिए लडका-जैसा मालूम होता है।

—ठीक है—अनायने कहा।

साराने बात समाप्त करते हुए कहा—तू यदि मेरे पीछे न आया होता, तो अच्छा होता। यदि तू वहाँ रह गया होता तो जैसा कि रुजी मुरादने कहा, बोलशेविक तुझे बालशालामे रखकर लिखा पढ़ाकर आदमी बना देते अगर जिन्दगी रहती, तो हम फिर एक दूसरे से मिल जाते।

माँकी इस बात के सुननेके बाद अनायवी इच्छा होने लगी कि वह लौटकर बोलशेविकोके देश अर्थात् अपने देशमे जाये और बालशालामे रहकर आदमी बने, लेकिन उमर छोटी होनेसे इस विचारको कार्यरूपमे परिणित करना सम्भव नही था।

१०

रूजीमुरादने मुरादकी हत्याके बारेमे जो-कुछ साधारण सभामे कहा था, उसके अनुसार उस दिन सबेरे ही मुराद अपने घरसे निकलकर एशानकुल बायकी हवेलीमे गया और वहाँसे भेंडोको चरानेके लिए चर हाँक ले गया। अभी वे पेट भी न चर पायी थी कि उत्तरकी ओरसे हवा तेज हुई और थोडी देर बाद उत्तर-पूरब दिशासे काल मेघ छाने लगे। फिर बिजलीकी कड़क हुई और मूसलाधार वर्षा होने लगी। परस्पर-विरोधी हवाएँ चारो ओरसे आकर मिली और घास, तृण और दूसरी चीजोको नचाते हुए आसमानकी ओर लेजाने लगी। इस बवण्डर ने हलकी जड़वाली घासोको भी उखाड़ कर आसमानकी ओर फेंक दिया। देखनेवालोको मालूम होता था कि भूमिसे आकाश तक हवा, मिट्टी और तिनको-पत्तियोका मीनार बनाया गया है। बहुत समय नही बीता कि सारा बयाबान ऐसे बवन्डरो से भर गया।

परिस्थिति इतनी तेजीसे बदली कि मुराद अपनी भेड़ोको लेकर भाग न सका। वह किंकर्तव्यविमूढ हो गया। उसने समझ लिया, कि भेड़ें भाग गयी हैं, लेकिन किधर भागी, इसका उसे ज्ञान न हो सका, क्योकि उस आँधीमे आँख खोलना मुश्किल था। एक घटा अधोकी तरह इधर-उधर धावनेके बाद, आँखोको हाथसे मूँदकर वह एक जगह बैठ गया और आँधीके थमनेकी प्रतीक्षा करने लगा। आँधी थमते-थमते उत्तर-पश्चिमी हवा-वर्षा ले आयी और वर्षाने उड़ती धूलको नीचे बैठाना शुरू कर दिया।

अभी भी हवा बिलकुल बंद न हुई थी लेकिन आँख खोलकर चारों तरफ देखा जा सकता था।

मुरादने ढूँढते ढूँढते कितने ही समय बाद अधिकांश भेडों को शर वन (सरकडके वन) में पाया। भेडें वहा भी आरामसे खडी नहीं थीं, बल्कि कीचड पानीमें इधर उधर गिरती पडती दौड रही थीं। मुरादको इसका कारण जल्दी ही मालूम हो गया। वहा एक भेडिया एक भेडको चीरकर खा रहा था। भेड वर्षासे भगी कीचडमें गिरी की बहावके अनुसार आधीसे भागकर भेडिएके चंगुलमें जा फँसी थी। मुरादको कुछ समझमें नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसके पास हथियार नहीं था कि भेडियेसे लडता। हाथमें सिर्फ चरवाहोंकी लाठी थी जो भेडिएसे लडनेके लिए बेकार थी। यदि वह उस हथियारसे भेडियेपर आक्रमण करता तो भेडिया उसे फाडकर खा जाता।

इसी समय मुरादने शाकुलको गावकी ओरसे आते देखा। वह पीठ पर बन्दूक लटकाए घोडा दौडाए आरहा था।

घोडा जब शर वनमें नजदीक पहुँचा तो उसका पैर कीचडमें पडा और वह जमीनपर गिर पडा। घोडेको गिरते देखकर शाकुल उसके ऊपरसे छलाँग मारकर गड्ढे के दूसरी ओर पहुँच गया। शाकुलने बहुत कोशिश की कि घोडेको दलदलसे निकाले, लेकिन असफल रहा। घोडा जितनाही अपनेको निकालनेकी कोशिश करता, उतना ही कीचडमें धँसता जाता। शाकुलने अपनी सारी शक्ति लगाकर पूरी कोशिश की, पसीने-पसीने हो गया और अंतमें थककर किनारे बैठ गया।

मुराद देख रहा था। वह शाकुलकी सहायताके लिए दौड़ा। उसने घोडेके सामने झुककर उसके पैरको दलदलके किनारे रखा और फिर उसमें रीगन रस्सी लगाकर जोर लगाया। घोडेने अपने अगले पैरोंको कीचडसे निकाल लिया। मुराद इसी समय जोर लगाकर घोडेको किनारे की ओर खींचने लगा। जब घोडेके दो पैर सूखेमें पड गए तो उसने बल लगाकर अपनेको दलदलसे बाहर कर लिया।

शाकुल यह सब देख रहा था। मुरादकी तावतको देखकर उसे अचरज हुआ और बाहरसे शाबाश वहनेपर भी वह दिलमे सोचने लगा, 'मैं इस आदमीका मुकाबिला नही कर सकता। यदि आमने सामने मुकाबिला हो तो वह पीसकर मेरा भुर्ता बना देगा।'

शाकुलने घोडेको लेकर शर वनके पास आकर दो रोटियो को निकालकर मुरादको दिया और उससे आँधीके बारम पूछा। मुराद आजकी दौड धूपसे बहुत थका और भूखा था। उसने रोटीको मुँहसे काटते हुए आँधी और भेडियेके एक भेड खानेकी बात कही। शाकुलके पूछनेपर मुरादने उस जगहको भी बतला दिया, जहाँ भेडिया भेडको खा रहा था। शाकुल बदूक हाथमे ले उस तरफ सरकने लगा और उसने भेडियेको देखकर लेटे ही लेटे बदूक दागी। इधर बदूकसे धुआ निकला और उधर भेडिया अधखायी भेडके पास गिरकर छटपटाने लगा। भेडे अब भी भेडियेके डरके मारे घबडाई हुई थी। बदूककी आवाज सुनकर वह और बिदककर चारो ओर भागने लगी। मुरादने उन्हे शान्त कर शर वनसे निकालनेकी कोशिश की, किन्तु शाकुलने उससे कहा

—व्यर्थ कोशिश न कर। अब वह अपने आप ही शान्त हो जायेंगी। इस समय उन्हें यही छोडकर मेरे साथ नदीपर आ। तू वहाँ अपनी रोटीको भिगोकर खाना और मैं तीतरका शिकार करूँगा। तूने आज मेरी सेवा की है, उसके लिए मैं तुझे तीतर भेंट करना चाहता हूँ। तू उसे घर ले जा कबाब बनाकर बीबी-बच्चेके साथ खाना। हमारे लौटनेतक भेडें भी शान्त हो जायेंगी।

मुरादने शाकुलकी सलाह मान ली। शाकुलने अपने घोडेको शर वनके पास छानकर चरनेको छोड दिया और दोनो नदीकी ओर गए।

वर्षा बहुत कम रह गयी थी, लेकिन आजकी आँधी बवडर और वर्षाके कारण बयाबानमे कोई प्राणी दिखलायी नही पडता था। तो भी शाकुल रास्ता चलते वक्त चारो ओर नजर डाल रहा था। मुरादने उसकी चेष्टापर आश्चर्य करते हुए पूछा .

—क्या किसी आदमी या चीजकी प्रतीक्षा है, जो इधर-उधर देख रहे हो ?

—ने, मुझे किसी बातका ख्याल नही है। मै अपने जीवनमे कभी ऐसी बातोकोख्यालमे भी नही लाता। न मैं किसीसे डरा और न डरूँगा। देख रहा हूँ कि कही कोई शिकार तो नही—शाकुलने जवाब दिया।

इस तरहके दिनमे बयाबानमे शिकार नही दिखलायी देते। सभी आँधी-पानीसे भाग गए हैं।

—शायद आँधी-पानीसे भागकर वे हमारी तरफ आ जायें।

मुराद और शाकुल जाकर नदी किनारे बैठे। मुराद रोटी खाने लगा और शाकुल अपनी बदूकको इधर-उधरसे देखते हुए आखेटकी तारीफ करने लगा।

—आखेट या शिकारकी कला बहुत ही अच्छी चीज है। शिकारी प्रतिदिन ताजा स्वादिष्ट मांस खाता है। लोमडी और हरिन जैसे जानवरो के चमडो के बेचनेसे उसका खीसा सदा पैसे भरा रहता है; सियार और भेड़िये-जैसे हिंस्र पशुओको मारकर वह पशुओ और आदमियो को उनके चगुलसे बचाता है। यदि मैं उस भेड़ियेको नही मारता तो अब तक वह सभी भेड़ोको फाड़ डालता और शायद तुझे भी हानि पहुँचा चुका होता।

शाकुलने खड़े होकर चारो ओर नजर दौड़ाई और फिर बैठकर डीगने लगा :

—मैं खुद एक अच्छा शिकारी हूँ। यदि बुलबुलकी आँखपर निशाना लगाऊँ, तो भी गोली खाली न जाए।

शाकुल थोड़ा चुप रहकर बंदूककी नलीको देखते हुए फिर कहने लगा :

लेकिन मैंने इस हुनरपर आसानीसे अधिकार नही पाया। बहुत अभ्यास किया, बहुत-सा गोला-बारूद नष्ट किया, तब कही जाकर अच्छा

(सेठानी) बनकर बैठी। घरका सारा काम, पशुओकी देख भाल अ
भेडो का चराना साराके ऊपर था, जिसमे अनाथ भी माँकी मदद क
था।

बायने एक नयी रहस्यपूर्ण जिंदगी शुरू की। वह शाकुल और अ
लडके इस्तम्को साथ लेकर, आधी रातको घोडेपर सवार होकर रबा
निकल जाता और कुछ दिन गायब रह फिर आधी रातको रबातमे
पहुँचता। जब बाय रबातम रहता तो उसके पास रातको बडी पागय
आदमी आते। ये आदमी बदूक, तमचे और कारतूसोसे भरे खलीते ला
बायको देते और वह उन्हे निकोलाय (जार) के सोने चाँदीके सि
और अफगानी रुपये देता।

जब रबातम इस तरहके बहुत-से हथियार जमा हो जाते, तो बा
शाकुल और अपने बेटेके साथ तमचो और कारतूसोको खुर्जियोमे रख
और बदूकोको लोइयोमे लपेटता। फिर उन सभी चीजोको तीनो घोडो
रखकर सवार होकर हाथमे बदूकें लिए तीनो आधी रातको रबात
रवाना होते और कुछ दिनोके बाद फिर लौट आते, लेकिन लौटते व
उनकी खुर्जियाँ खाली होती। पासम भी बदूक न होती।

अनाथ सारी बातोको देखता, लेकिन भेद न समझ पानेसे चकि
होता। एक बार उसने इसके बारेमे माँसे पूछा। साराने जवाब दिया—
हथियार बेचना इस देशमे फायदेका रोजगार है। जान पडता है बा
हथियारो की सौदागिरी करने लगा है।

इसी बीच एक ऐसी बात हुई, जिससे अनाथको गुप्त रहस्यक
पता लग गया। एक दिन अनाथ शाम के बाद अपनी माँके सा
भेडोको चरागाहसे लौटा कर लाया था। सारा रबातके भीतर च
गयी और अनाथ भेडोको हाँककर भेडखाने मे ले गया। फिर पासमे
घास और तृणको बराबर करके अपने लिए सोनेकी जगह बनायी औ
वही पालथी मारकर बैठ गया। एक घटे बाद बायके पुत्र इस्तम्
एक कटोरा पानी और एक टुकडा सूखी रोटी लाकर अनाथको व्यालूके

लिए दी। अनाथ पानीमे भिगोकर रोटी खानेके बाद सोनेके लिए पड रहा, लेकिन उसे नीद नही आयी। गर्मी थी और घास तिनका उसके शरीरमे गड रहा था। साथ ही बडे बडे मच्छरोने भी आक्रमण कर दिया था। जहाँ वे काट लेत उस जगह चक्ता पड जाता। कान पडता घावमे नमक डाल दिया गया है। खुजली भी बहुत होती। खुज लानपर और भी अधिक पीडा होती।

आधी रात हो गयी, लेकिन अब भी अनाथको नीद नही आयी। इसी समय किसीने रबातके फाटकका तकुतक् किया, जिसे सुनकर शाकुलने भीतरसे आकर दरवाजेको खोल दिया। दो सवार भीतर आकर घोडेसे उतरे। शाकुलने उनके घोडोको एक एक करके लेजाकर दीवारमे गडे खूटोम बाध दिया और खुद उन्ह चबूतरेके पास ले जाकर बैठाया। फिर चिराग और बिछौना लाने तथा बायको खबर देनके लिए भीतर चला गया। कुछ क्षणोक बाद ह्मयम चिराग लिए बाय भी भीतरसे आया। शाकुलने शाल लेआकर चबूतरेके बिछौन पर बिछा दिया। बायने दीपकका बीचम रखकर मेहमानासे कुशल-क्षेम पूछा। सभी चिरागके चारा ओर बैठ गये।

अनाथ चिरागकी रोशनीम नवागन्तुकोकी आर एक एक करके देखने लगा। पोशाक और रग रूपमे वह स्थानीय लोगो-जैसे न थ। उनके शिरोपर वैसे बडे-बडे पगड नही थे, जैसे रातको प्राय आनवालोके होते थ। उनकी शक्ल सूरत नदी (वक्षु) की दूसरी तरफके लोगा-जैसी थी।

बातचीत शुरू हुई। उनकी भाषा नदीके उस पार-जैसी थी। वही भाषा, जिस लेकर अनाथ पैदा हुआ और बढा था। उनकी बातमे बारबार हिसार, रेगर, कूबताश, कबादियान, देहनी और तिरमिज जैस रामनो (परगनो) और गाँवके नाम आते थे। यह सभी नदी के उस पार अवस्थित थ। बातके बीचम कई नाम आते थे, जिन्हे अनाथन पहले नही सुना था। जो नाम अधिक आते थे, उनम कुछ थे इब्राहीम बेक,

फुजेल मखमूम, एशान सुल्तान, अनवर पाशा, जब्बार खुजाइन, दौलत-मदबी और कूर शेरमत। वार्ताके बीचमें वासमची[1] और कूरबाशी (वासमचियोंके सरदार) के शब्द प्राय: आते थे। अनाथने उनके मुँहसे बोलशेविक शब्द भी सुना। उसने इस शब्दको माँके मुँहसे भी एक-दो बार सुना था। मैंने बोलशेविकोंकी तारीफ रूजीमुरादका भाषण सुनाते समयकी थी, लेकिन आज रातके मेहमान बोलशेविकोंको सिर्फ गालियाँ दे रहे थे।

उनके सारे वार्तालापको सुनकर अनाथ सिर्फ इतना ही समझ सका कि नदीकी उस तरफ बोलशेविकोंने मजूरों और किसानोंकी सरकार कायम की है। उस सरकारने भंगों, भूखों, गरीबों, नौकरों, चरवाहों, कटाईनार, किसानों और खिदमतगारोंको अपनी तरफ कर लिया है, उनके बीच धरती पानीको बाँट दिया है, और बाय-एशान (गुरु), मुल्ला और अमीरके अमलदारोंका शामत गरीबोंके ऊपरसे दूर कर दिया।

बायों, सूदखोरों, एशानों (गुरुओं), अमीरके अमलदारों और मुल्लोंने बोलशेविकों और मजूर-किसान-सरकारके विरुद्ध सेना संगठित की है, जिसे उन्होंने वासमची नाम दिया है। इन्हीं वासमचियोंके सरकार बाय और सूदखोर आदि बने हैं। उनका उद्देश्य है मजूर-किसान-सरकार को नष्ट करना, गरीबोंको फिर बायोंका गुलाम बनाना और अमीरको फरसे तख्तपर बैठाकर उसे बादशाह बनाना।

एशानकुल बायने अपने मेहमानोंसे बात करते हुए कहा—वासमचियोंने स्वयं अपना नाम वासमची नहीं रखा, क्योंकि इसका अर्थ चोर-डाकू है और लोग चोर-डाकुओंसे घृणा करते हैं। उनका सबसे अच्छा नाम अनवर पाशा ने दिया, वह है "इस्लामकी सेना" और उसने स्वयं "इस्लाम सेनाका अमीर" की उपाधि धारण की है।

बायके वासमचियोंके कामकी योजनाके बारेमें कहा—वासमचियोंको

१. क्रान्ति-विरोधी धर्म-युद्धके योद्धा डाकू।

सिर्फ मजूर किसान-सरकारको रास्तेसे निकालना या बोलशेविकोको खत्म करना या बोलशेविको या मजूर-किसान-सरकारकी सहायता करनेवालो को पकडकर मारना ही नही है, बल्कि जो कोई भी गरीव नौकर या चरवाहे हाथ लग जायें, उन्हे बिना किसी मुलाहिजेके मार डालना है, क्योंकि बोलशेविको और किसान-सरकार की जड मजबूत करनेवाले ये ही लोग हैं। यदि मजूर और गरीब न होते तो न बोलशेविक मैदानमे आते, न मजूर किसान सरकार ही सामने आती।

मेहमानोमसे एकने कहा—अबतक तो गरीबो और उनकी बीवी-बच्चोको मारनेमे हमारा पैर कभी नही लडखडाया न हाथ ही काँपा। हम प्राय लालसेनाकी पोशाक पहनकर जाते, गाँवोको जलाते और गरीबो को मारते हैं। इस तरह हम एक तीरसे दो शिकार करते है, एक और गरीबोका विनाश करत हैं और दूसरी ओर लोगोके भीतर बोलशेविको और लालसेनाके विरुद्ध घृणा पैदा करते हैं।···

सामने रखे भोजनको खा लेनेके बाद मेहमान चलनेको तैयार हुए। शाकुल अन्दरसे कुछ बदूकें, तमचे और कारतूस ले आया। तमचो को उसने मेहमानोकी खुरजीमे डाल दिया और बदूकोको लोईमे लपेटकर रस्सीसे बाँध उनके हाथमे दे दिया। चलते वक्त एक मेहमानने बायकी ओर निगाह करके कहा—अपने घर-बार, धरती जमीन छोडकर दूसरे देशोंमे मारे मारे फिरने वाले बायो का कर्तव्य है कि बासमचियोकी हर प्रकारसे सहायता करें। जो चीज भी उनके पास है, उसे और शरीरके वस्त्र तकको बेंचकर उसके पैसेसे हथियार खरीदकर बासमचियो को दें। जब हम विजय प्राप्त कर लेंगे, तो बायोको फिर धरती पानी, माल-असबाब और नौकर चाकर मिल जायेंगे, और जो वह खर्च कर रहे हैं, उसका दशगुना-सौगुना होकर उन्हें मिलेगा।

—हम इस रास्तेमे सिर्फ अपने माल असबाबको ही नही, बल्कि आवश्यकता पडनेपर अपने प्राणको भी न्यौछावर कर देंगे।

इसी बीच तमचा छूटनेकी आवाज आयी और बाय "हाय मरा"

कहते हुए जमीनपर गिर पडा। मेहमान और शाकुल हँस पडे। पता लगा कि एक मेहमानने अपने तमचेको भरा है या खाली, यह जाँचनेके लिए हवामें छोडा था। तमचा भरा था। उस मेहमानने खुरजी मेंसे नया कारतूस निकालकर तमचेमें भरा हुआ था। वे लोग अपने-अपने घोडेपर सवार होकर रबातसे बाहर निकल गये। बाय उसी तरह बेहोश लेटा रहा।

अनाथ छिपी जगहसे इस सारे वार्तालापको सुनता रहा और अपने मनमें सोचने लगा—जिस समय मैं अपने वतनको लौटूंगा, मेरा सबसे पहला काम होगा, बायोंको पकडकर मजूर किसान सरकारके हाथ में सौंपना, क्योंकि यही बासमचियोंको हथियारबन्दकर गरीबों और चाकरों-को मरवाते हैं।

१२

दो साल बीत गये। नदीपारसे लायी एशानकुल बायकी भेंडोंकी संख्या बहुत कम हो गयी। उसकी अधिकांश भेंडें रबात बनाने, ब्याह करने और खासकर बासमचियोंको हथियारबंद करनेमें खर्च हो गयी। बायने देखा कि बाकी बची भेंडोंको सारा अकेली चरा सकती है, इस-लिए अनाथको हर रोज एक सूखी रोटी देना भी व्यर्थ है। बस, तो उसने एक दिन सूर्योदय होनेके पहले ही अनाथको रबातसे बाहर करते हुए कहा—जहाँ जाना चाहे जा, तेरे खिलानेके लिए मेरे पास फजूलकी रोटी नहीं है।

साराने अनाथके सभी फटे-पुराने लत्तोंको लाकर उसे पहनाया और एक लत्तेमें एक रोटी लपेटकर उसके हाथम दी। फिर बेटेको अंकम भरकर रोने लगी। अपने आँसुओंसे उसके गालोंको भिगोनेके बाद आँखें पोंछती हुई बोली: बेटा इस देशमें अधिक मारा मारा न फिर, जैसे भी हो सके, नदी पार हो अपने गाँवको चला जा, वहाँ खालजादा

को ढूंढ़ना। वहाँ लोग पढा-लिखाकर बडा करेंगे। दुखी मत हो, मेरे प्राण, यदि मौतने छुट्टी दी, तो मैं भी तेरे पीछे आ जाऊँगी।

अनाथने नगे पैर पैदल रास्ता पकडा और जबतक रवात आँखोंसे ओझल न हो गयी, तबतक पग-पगपर एकबार घूमकर रवातके पास खडी अपनी करुणामयी माँकी ओर देखता रहा। फिर रोकर आँखोको पोछकर, न चाहते हुए भी पग आगे बढाता रहा। यह वियोग अनाथके लिए बहुत ही असह्य था। वह एक ऐसे व्यक्तिसे अलग हो रहा था, जो उससे प्रेम करता, उसके नाज उठाता और कठिनाई के वक्त उसे तसल्ली देता था।

कितनी ही बार उसके दिलमे आया कि लौट जाए और माँके पास रहे, लेकिन उसने सोचा, यह सभव नही, क्योंकि मालिक अपनी रवातमें जगह नही देगा। फिर वह वहाँ सोएगा और क्या खाएगा?

माँकी अवस्था अनाथसे भी बुरी थी। वह अपनी आँखोंसे देख रही थी, कि उसका प्राणप्रिय पुत्र सदाके लिए उससे अलगहो रहा है, लेकिन वह उसे अपने पास रख नही सकती थी। वह अपनी आँखो देख रही थी कि उसका प्राण शरीर से निकल रहा है, लेकिन वह उस अपने शरीरमे रखनेकी शक्ति नही रखती थी। साराकी बहुत इच्छा हुई कि बायकी रवातको छोडकर पुत्रके साथ चली जाय, लेकिन उसकी हिम्मत नही हुई, क्योंकि वह जानती थी, कि यदि बाय देख लेगा, तो उसे जानेसे रोकेगा ही नही, बल्कि मार-मारकर मुर्दा बना देगा। इसलिये उसने अपने संकल्पको अनुकूल अवसर के लिए रख छोडा।

साराने अनाथकी ओरसे अपने आँखोको नही फेरा। अनाथ जितनी ही दूर होता गया, उतना ही उसकी आँखोमे अँधेरा छाता गया। अतमे अनाथ उसकी आँखो से ओझल होगया—साराका सूर्य डूब गया और दुनिया उसे अंधेरी दिखायी देने लगी।

"बदमाश! क्यो यहाँ मुल्लो की तरह खडी है। दिन हो गया और अभीतक भेडो को चराने नही ले गयी?" इन शब्दो को सुनकर सारा-

ने आँख खोलकर देखा कि बाय उसे गाली दे रहा है और सूर्य भी आला बराबर ऊपर उठ आया है। साराने डरत काँपते-काँपते बायकी भेंडोंको चरानेके लिए निकाला लेकिन उसका सारा ध्यान पुत्रकी ओर लगा रहा। वह सदा इसी विचार में रहती कि कैसे बायके घरसे निकल भागे।

बायको भी साराके विचारों की गन्ध लग गयी थी। उसने अपने पुत्रको—जो कि अब सयाना हो गया था—साराके ऊपर रखवालीके लिए छोड दिया और इसीलिये उसे घरसे दूर या साथ भी न ले जाता। इसतमकी नजर सदा सारापर रहती।

× × ×

अनाथ चलता रहा था लेकिन कहाँ जा रहा है यह उसे मालूम न था। अपने दिलमें उसने निश्चय कर लिया था कि नदी तटपर पहुँच वहाँसे जल्दी ही अपने वतन चला जाऊँगा लेकिन उसे यह भी मालूम न था कि वह रास्ता नदी-तटपर जाता है कि नहीं। नदी किनारेका ध्यान करके वह पहाड़ोंके किनारे किनारे मैदानोंके ऊपर-ऊपर, दर्रों पहुडों और नालोंसे होकर गुजरने लगा। जब थक जाता तो पानीके किनारे बैठकर आराम करता और रोटीके एक टुकडेको भिगोकर खाता। इसके बाद फिर चलना शुरू करता।

दिन बीत गया। सूर्य डूब गया। दुनियामें अंधकार छा गया। अनाथ एक झोपडेके पास पहुँचा और सोनेके विचारसे उसके अन्दर चला गया। झोपडेके अन्दर एक ओर बकरी बँधी थी जिसका दूध उसका बच्चा पी रहा था। दूसरी ओर दो स्त्री पुरुष आमने सामने बैठे रोटी-दही खा रहे थे। मर्दने अनाथसे उसके यहाँ आनेका कारण पूछा।

—मैं नदीके उस पारका एक मुसाफिर हूँ। माँ गुम हो गयी है,

उसीको ढूंढता फिर रहा हूँ और आज रात बितानेके लिए यहाँ आया हूँ—यह कहते हुए अनाथने अपने दिलमे कहा—"यह बात झूठी नही है। यद्यपि मैं अपनी जननी-माताको नही ढूंढ रहा हूँ, तो भी उस मांको ढूंढ रहा हूं, जिसने मुझे अपनी गोदमे पाला-पोसा जरूर है, वह माँ मेरा देश है, और ऐसा देश है जो अब वस्तुत गरीबो और चाकरोका देश हो गया है।"

"बहुत अच्छा" मर्दने कहा और मेहरीने दस्तरखानके पास बैठाकर उसे भी रोटी-दही खानेको दी। खाना खतम कर लेनेपर मेहरीने उसे एक तरफ सुला दिया।

सवेरे तडके ही अनाथ उठकर हाथ मुंह धोकर चलने के लिए तैयार हुआ, लेकिन, स्त्रीने बिना कुछ खिलाए-पिलाए नहीं जाने दिया। उसने उसे दूधमे रोटी तोडकर खिलाई और फिर एक रोटी रास्तेके लिए देकर बिदा किया।

अनाथ चलनेके लिए अपनी जगहसे उठा, लेकिन कदम रखने पर मालूम हुआ कि पैरोमे कष्ट है। स्त्रीने उसे रोककर उसके पैरके तलवोको देखा। वहाँ फफोले पडे हुए थे और उनमेसे कुछ फटकर रिस रहे थे। "ऐसे पैरोसे तू सौ पग भी नही चल सकता"—औरतने कहा और उसे बैठाकर पुराने लत्ते और लोईके टुकडोको जूतेकी तरह पैरोंमे मजबूतीसे बाँध दिया। फिर, "अब जा, भगवान तेरी रक्षा करें", कहकर बिदा किया।

अनाथ अपनी यात्राके दूसरे दिन उस भली औरतकी दी हुई रोटीको खाकर शामतक चलता रहा। उसे एक अधिक आबाद गाँव मिला। गाँव के भीतर घुसते ही एक बडा दरवाजा था, जिसके भीतर एक बडी हवेली थी। हवेलीके सामने भेडें और काले माल (ढोर) भरे हुए थे। एक आदमीने अनाथकी पिछली रातवाली बात को सुनकर जवाब दिया—यहाँ मुसाफिरके लिए जगह नही है—फिर सन्देह की दृष्टिसे देखने लगा।

अनाथने उसके सदेहको दूर करते हुए कहा—इतनी बडी हवेली है। इसमे इतने अधिक पशु रह रहे है। क्या यहाँ एक चौदह साला बच्चेके लिए एक ओर सिर रखने का भी स्थान नही है! मैं समझता हूँ कि आप मुझे चोर समझ रहे है। यदि मैं चोर होऊँ भी, तो इस उम्र और इस हालत मे मुझसे क्या बन सकता है?

मर्दने कुछ लज्जित होकर आँखसे इशारा करके कहा—"जा, वहाँ सो जा।"

रात बीत गयी। सवेरे तडके अनाथ चलनेके लिए उठ खडा हुआ। आदमीको वह कुछ अच्छे स्वभावका मालूम हुआ। उसने उससे फायदा उठाने के लिए कहा—तू थका-सा मालूम होता है, कुछ दिन मेरे घरमे ठहर। मेरा चरवाहा बीमार हो गया है। जबतक वह ठीक होकर न आ जाये तू मेरी भेडोको चराता रह।

अनाथको यह बात पसन्द आयी। दो दिनकी यात्रासे वह बहुत थक गया था। सोचने लगा, कुछ दिन इस आदमीकी चरवाही करूँ और खानेके लिए जो रोटी मिले, उसमे से एक भाग बचा-बचाकर रखता जाऊँ। जब कुछ दिनोके लिए आहार जमा हो जाय तो चल दूँगा और इस प्रकार, घास खाकर बीमार हुए बिना, नदी-तटपर पहुँच जाऊँगा। नदी पार तो मेरा प्रिय देश है ही। यह सोचकर "बेशक, रहूँगा," उसने जवाब दिया।

गृहपतिने भेडखानेके पास एक छोटी कोठरिया अनाथके रहनेके लिए दे दी। अनाथ अब नए मालिकके घर सवेरेसे शामतक चरवाही करता। मालिक उसके खानेको प्रतिदिन एक रोटी और एक टुकडा (पनीर) देता। अनाथ पनीरको बिलकुल नहीं खाता और रोटीमेंसे आधा ही खाकर बाकी पनीर और रोटीको माँ के लिए लत्तेमे बाँधकर कोठरी मे जमा करता जाता।

दसवें दिन अनाथने कोठरीको जाकर देखा, तो लत्ता खाली था

और दस दिनकी जमा की हुई रोटी और पनीरका कहीं पता न था। उसने मालिकसे पूछा तो उसने कहा

तभी मारी तेरी कोठरीमें गयी थी। पनीर रोटी को देखकर समझा कि वह खराब हो जायगी इसलिए उठा ले आयी।

अनाथने कुछ नहीं कहा लेकिन दिलमें सोचा कि अब पनीर और रोटीको जमाकरके ऐसी जगह छिपाऊँ जहाँ कोई पा न सके। उस दिन मालकिन पनीर न देकर सिर्फ आधी रोटी देते हुए कहा तू बहुत अच्छा लड़का है। भोजन कम खाता है और बारकरता कहकर प्रशंसा भी की।

अनाथ अब दूसरी तरहसे सोचने लगा और उसने मौका पाकर मालिककी दो तीन रोटी चुराकर भागनेका निश्चय किया। तो उपयुक्त अवसरकी आशामें अनाथ चरवाही करता रहा। बहुत दिन नहीं बीते कि उसे ऐसा अवसर मिल भी गया। अनाथ एक दिन शामको भेड़ोंको घर ले आया। उसने देखा कि मालिक घरपर नहीं है और उसका घोड़ा भी नहीं है। उसने समझा कि वह कहीं दूर गया है। भेड़ोंको ढोरखानेमें पहुँचा कर वह घर के भीतर गया। चिराग जल रहा था। बच्चे सो रहे थे लेकिन मालकिन नहीं थी। उसने इधर-उधर नजर दौड़ायी लेकिन मालकिनका पता नहीं लगा। पड़ोसिनके घरकी ओर खुलनेवाली खिड़कीसे बात-चीत होती सुनायी दी। अनाथने कान लगा कर सुना तो देखा मालकिन पड़ोसिनके साथ गप लड़ा रही हैं। अब मौका मिल गया सोचकर अनाथ घरके भीतर इधर उधर ढूंढने लगा। कोठपर गद्देके नीचे एक लकड़ीका सन्दूक देखा। सन्दूक रोटियोंसे भरा हुआ था। वह पाँच दिनकी खानेके लिए पाँच रोटियाँ लेकर कमरेसे बाहर निकला। ओसारेमें छीकापर अधसूखे पनीरके टुकड़ रखे देखे। उनमें से दस टुकड़े लेकर रोटीपर रखे अपनी कोठरीमें जाकर रोटी और पनीरको लत्तेमें बाँधा, अपनी पुरानी पोशाक पहनी और चरवाहेकी

लाठी लेकर रोटीको बगलमे दबा कर रास्ता लिया।

अभी वह गाँवसे बहुत दूर नही गया था कि एक सवार आ गया। सवार ने पूछा—हाँ, वखैर वहाँ जा रहा है ?

आवाजसे अनाथने पहचान लिया कि वह उसका नया मालिक है। उसने काँपती हुई आवाजमे उत्तर दिया—कही नही, ऐसे टहलने आया था।

—टहलनेके लिए ? पूरे दिन टहलकर नही अघाया—कहत हुए मालिक घोडेसे उतर पडा और उसकी बगलसे पोटलीको छीनकर देखा। "नही खाऊँगा, नही खाऊँगा, मेरा भोजन टोकरीमे रख दो' कह न, खाने-न खाने की बातकर पाँच रोटियाँ और दस टुकडा पनीर एक ही साथ खाना चाहता है, क्यो ?

अनाथ कुछ नही बोला। मालिकने पोटलीको उसके हाथम देकर, घोडेपर सवार होकर, "आगे आगे चल" कहा। अनाथ मालिकके आगे-आगे गाँवकी ओर चला। दरवाजेके पास जाकर उसने घरके भीतर जाना चाहा, किन्तु मालिकने कहा—'अब मेरे घरमे तेरे लिए जगह नही, अपना रास्ता नाप।" अनाथ चलने लगा, लेकिन मालिक भी उसके पीछे पीछे हो लिया। तीन चार मील चलनेके बाद वह एक मकानके पास पहुँचे। वहाँ दरवाजेपर बन्दूक लिए एक सिपाही पहरा दे रहा था। "ठहर" कहकर मालिकने आवाज दी। अनाथ ठहर गया। मालिकने उतरकर घोडा पासके पेडसे बाँध दिया और अनाथको आगे करके हवेलीमे ले गया। घर मे चिराग जल रहा था जिसके पास कुछ आदमी बैठकर चाय पी रहे थे। उनमसे एकने पूछा—क्या बात है ?

—यह लडका मेरे घर से इन चीजोंको चुराकर भागा है, इसे पकडकर लाया हूँ और सजा देनेके लिए विनती करता हूँ—मालिकने कहा और अनाथके हाथकी पोटलीको लेकर उन्हें सौंप दिया।

—कोतवाल (मीरशव) अभी सोए हुए हैं। तुम अपना काम करो। कल सवेरे जब वे आकर बैठेंगे, तो उनसे कहकर सजा दिलवा देंगे—उनमेंसे एकने कहा।

मालिक चला गया। कोतवालके आदमियोंने अनाथको भुंइघरेके भीतर करके बाहरसे दरवाजा बन्द कर दिया और फिर चिरागके पास बैठकर अनाथकी रोटी-पनीर खाकर चाय पीने लगे।

× × ×

भुंइघरा एक बहुत ही छोटा और अँधेरा घर था। वहाँ अनाथके अतिरिक्त पाँच छ दूसरे आदमी भी लेटे हुए थे। एक दो के सिर-पैरपर गिरते पड़ते उनकी गाली सुनते अनाथ एक खाली जगह पाकर लेट गया। वह रात भर जागता हुआ सवेरेके वक्त सो सका। आँख खुलनेपर देखा कि धूप फैली हुई है और कोई "चोर लड़का' कहकर चिल्ला रहा है। अनाथ उसके पास गया और वह उसे एक चबूतरेके पास ले गया, जिसपर कुछ आदमी बैठे हुए थे। उनमेंसे एक आदमीने अनाथको पकड़कर नगाकर जमीन पर लेटाकर दावे रखा और दूसरा आदमी एक कमची लेकर उसकी नगी पीठपर जमाने लगा। अनाथ चिल्लाने लगा, लेकिन वहाँ बैठे आदमी हँसने लगे और उनमेंसे एकने कहा—कमची सहनेकी शक्ति नही थी, तो चोरी क्यो की ?

कमची मारनेके बाद फिर उसे भुंइघरेमे बन्द कर दिया और बाहरसे ताला मार दिया। बिना पूछे मारनेका कारण क्या था, इसे उसने अपने पहलेसे आए बदियोंसे पूछा। उन्होने बतलाया कि स्थानीय सरकारके कानूनके अनुसार चोर और अपराधीको कुछ समय प्रतिदिन बिना पूछे एक बार मारते हैं। उसके बाद यदि उचित समझते है तो पूछते हैं। यदि हाकिमके विचारानुसार वह अपराधी साबित होता है तो बिना पूछे भी उसे दड देनेका फैसला करते है। इसी (अफगानी) कानूनके अनुसार वह अनाथको लगातार तीन दिन तक मारते रहे। चौथे दिन

उसे ले आकर कुरसीपर बैठे एक दाढ़ीमुड़े मूँछदरके सामने खड़ा किया।

—तुझपर सौ रुपया जुर्माना होता है। यदि तू रकम लाकर दे दे तो इसी वक्त छूट सकता है। यदि तेरे पास पैसा नहीं है, तो माँ-बाप या भाई बधुका पता दे। हम अपना आदमी भेजकर पैसा ले लेंगे और तुझे छोड़ देंगे।

—मेरे पास न पैसा है, न मेरा कोई सगा सम्बन्धी है—अनाथने कहा—सिर्फ एक माँ है। वह भी कहाँ है, मैं नहीं जानता और उसीकी खोजमें घूमते घूमते इस बलायमें फँसा।

—ऐसा ही सही, रोज एक बार कमची खाकर लेटा रह—दाढ़ी कटे आदमीने कहा—इस बीच तू या तो मर ही जायगा या पैसा लाकर देगा।

—जो कुछ है, वह मेरी तकदीरसे है—कहकर अनाथ रोने लगा।

लेकिन उसके आँसुओंको देखकर किसीको दया नहीं आयी। एक बार उसे फिर पीटा। अब अनाथके अश्रु सूख गए और उसकी जगह उसके दिल में क्रोधकी आग भड़क उठी। पीड़ाके बहुत होनेपर भी वह दाँतोंको दाँतों पर दबाकर चिल्लाया नहीं। पीटना खतम करके उन्होंने "उठ' कहा, लेकिन अनाथने अपनी जगह से उठने का उपहास करते कहा—क्या मारने से अघा गए।

इसके जवाबमें एक आदमीने अनाथकी गर्दनपर ऐसा कड़ा मुक्का मारा, कि वह मुँहके बल जा गिरा, किन्तु तुरन्त उठकर मारने वालेकी तरफ कड़ी निगाहसे देखने लगा। उस आदमीने एक थप्पड़ और उसके मुँहपर मारकर कहा—जा हवालातमें।

अनाथने अपने साथी कैदियोंसे सौ रुपए जुर्मानेकी कहानी कही।

—तुझे हलकी सजा दी है। हममेंसे हर एकपर हजार हजार जुर्माना किया है—उनमेंसे एकने कहा।

तुम्हारे पास पैसा है, लाकर दे सकते हो, लेकिन मैं कहाँ से पैसा लाकर दूँ ?—अनाथ ने कहा ।

—हममेंसे भी किसीके पास पैसा नहीं है—उनमेंसे एकने कहा ।

—ऐसा ही सही । चलो यहीं लेटें ।

—या तो हम लेटेंगे या हमें खलास कर दिया जायगा—उस बंदीने कहा ।

× × ×

हवालातमें अनाथका छठा दिन था । आधी रातको हल्ला गुल्ला सुनकर उसकी नींद खुल गयी । आँख मलकर देखने लगा । बन्दूक छूटने-की आवाज सुनायी दी । कुछ मिनट बीतते बीतते हल्ला गुल्ला बन्दी-खानेके दरवाजेपर पहुँचा । कुछ लोगोंने आकर भूँइघरेके किवाड़को मार-कर तोड़ दिया और बंदियोंको निकाल बाहर किया । उनके पीछे पीछे अनाथ भी बाहर निकल आया । कोतवालीके बाहर बहुत-से आदमी मशाल लिए खड़े थे । मशालके प्रकाश में वहाँ तीन मुर्दे लेटे दिखायी पड़े । हल्ला करनेवालोंने दो मुर्दोंको उठा लिया । तीसरा शायद कोत-वालका आदमी था, इसलिए उसे उसी तरह छोड़ दिया । हल्ला-गुल्ला करनेवाले कोतवाली से बाहर निकले । अनाथ भी उनके पीछे-पीछे बाहर हो गया । फाटकके पास एक और मुर्दा खून में नहाया जमीनपर लेटा था । यह द्वारपाल था । हल्ला करनेवाले मशाल बारे एक ओर चले गए और अनाथ उन्हें छोड़ दूसरी ओर चल पड़ा ।

× × ×

सूर्योदय हो रहा था, अनाथ एक पहाड़के किनारे पहुँचा । वह थका भी था और भूखा भी । धरतीपर पड़कर उसने कुछ देर सोना चाहा, लेकिन, भूखके मारे नींद कहाँ ? धूप निकल आनेके बाद वह आहारकी खोज करने लगा, लेकिन अपने-आप उगी घासोंके मूलके सिवा और कुछ

न मिला। उसे खाने की हिम्मत न हुई। दो साल पहले ऐसी ही जडोको खाकर वह मरने लगा था। नयी निकली पत्तियोको खाकर देखा लेकिन उन्हे भी निगलनेसे डरकर थूक दिया, लेकिन कुछ खाना जरूर था। बहुत थका मांदा था, तो भी आहारकी आशामे वह आगे चला। आगे एक मैदान मिला, जिसके किनारे बालू ही बालू था। वह सुस्तानेके लिए गरम बालूपर लेट गया। वहाँ उसने बालू से मढी, उभडी हुई कुछ चीजें देखी। अनाथने हाथ बढाकर उनमसे एकको जमीनसे निकाल कर देखा। देखते ही उसकी आँखें दीपककी भाँति चमक उठी और मुँहमे पानी भर आया। इस चीजको उसने पहिचान लिया—यह था स्वादिष्ट खुम् (छत्रक)।

अपने देशमे चरवाही करते हुए बसन्तके समय खुम्को जमीनसे चुनकर, आगमे भूनकर नमकके साथ उसने खाया था और उसके स्वाद को भी वह समझता था। यहाँ इस बियाबानमे नमक कहाँ था। आग और दियासलाई भी नही थी, जो उसे भूनता। अनाथने सोचा 'कोई हर्ज नही, चीज नर्म है, कच्ची-बच्ची ही खाकर देखता हूँ।" उसने दो को खाया, कुछ पेट भरा और नींद भी आयी।

जागनेपर अनाथने देखा कि दिन बीत चुका है। पेटमे भी दर्द नहीं है। हाँ, भूख लगी थी। वह नालेके किनारे ताजा पानीकी तलाशमे ऊपरकी ओर चला। पानी पीकर फिर वह लौटकर उसी जगह आया और खुम्को अपने पुराने कपडेकी जेबा और दूसरी जगह रख कर फिर वहांस चल दिया।

१३

अनाथ चार दिन तक चलता गया। किसीके हाथमे पडकर फिर बदीखानेमे न फसा जाय, इसलिए वह रातमे चलता और दिनको गुफाओ, पहडो या पहाडके सानुओंपर सो जाता। खुम् उसके लिए राहखर्च था।

पाँचवें दिन सूर्योदयके समय वह एक भीटेकी-सी जगहपर पहुँचा और सोनेके लिए किसी गड्ढेको ढूंढने लगा। इसी समय आँखोके सामने एक नदी दिखायी पडी। यह नदी आमू (वक्षु) नदी थी, जिसकी खोजमे अनाथ निकला था। वह सुन चुका था कि आसपास आमू नदी-जैसी बड़ी दूसरी नदी नही है, लेकिन नदीका वह स्थान नही था, जहांसे दो साल पहले वह पार हुआ था। उस जगहसे यह जगह या तो कुछ ऊपर थी या नीचे। जो भी हो, यह निश्चत था कि यह नदी थी, जिसके पार उसका प्रिय देश अवस्थित था।

अनाथ नदी-तटसे अपनी मातृभूमिके दिखायी देते हुए भूखडको देखकर खुशीसे आपेसे बाहर होकर ऊँची आवाजसे बोला—ऐ मेरे प्यारे वतन! मेरी सच्ची माँ! जल्दी मुझे अपने कृपामय अकमे खीच! शारीरिक माँने भले ही *मुझे जन्म दिया हो, किन्तु तूने मुझे पाला-पोसा है।* बोलशेविकोके नेतृत्वमे आकर तू और भी अधिक कृपामयी, और भी अधिक स्नेहमयी, और भी अधिक सौन्दर्यमयी हो गयी है! शारीरिक माँ मुझे जन्म देकर आफतोमे फँसानेका कारण बनी। तू मुझे, अपने बच्चे को आफतोसे मुक्तकर शिक्षा देकर आदमी बनाएगी। जब तक मेरे शरीरमे प्राण रहेगा, मैं तेरी सेवासे मुँह न मोड़ूंगा और यदि आवश्यकता हुई तो तेरे लिए अपने सिर, अपने तन, अपने रक्त, अपने प्राणको न्यौछावर करूँगा। अफसोस कि मुझे तैरना नही आता, नही तो इस तरगित महानदको पार कर तेरी पवित्र धूलिको चूमता। अफसोस मेरे पास पक्षियो-जैसे पक्ष नही है, नही तो इस गभीर नदीके ऊपरसे उड़कर तेरे पास पहुँच कर प्रात. समीरमे पेट भर साँस लेता।

इस तरह कुछ देरतक बात करते हुए अपने भीतरी भावोको बाहर प्रगट करके नदी-पार होनेकी चिन्तामे अनाथ चारो ओर नजर डालने लगा, लेकिन नदी-तटपर न एक नाव, न एक गुसर (पुमशक), न वही एक आदमी दिखायी पडा। हाँ, तटसे थोड़ी दूरपर शर-वनके पीछे एक काला मकान जरूर दीखा।

अनाथ अधित्यका से उतरकर उस मकानकी तरफ बढ़ा। मकानके पास जाकर दरवाजेसे झाँककर देखा। वहाँ एक मध्यवयस्क तुर्कमान चूल्हेपर चायदान रखकर ईंधन जला रहा था। अनाथने तुर्कमानको सलाम किया।

—अलैकुम् सलाम, आ पुत्र!—तुर्कमानने कहा।

अनाथ घरके भीतर गया। गृहपतिने हाथ फैलाकर स्वागत करके उसे बैठनके लिए जगह बतलायी। तुर्कमानने तुर्कमानी ढगसे "पूछो, पूछो" कहकर पहले कुशल-मगल पूछा, फिर उसके आने के उद्देश्यके बारेमे पूछा। अनाथने बतलाया कि मैं उस नदीके पार का रहनेवाला हूँ। माँसे मिलनेके लिए इस तरफ आया और अब फिर उधर जाना चाहता हूं।

—इसके लिए कुछ देर ठहरना पड़ेगा—तुर्कमानने कहा—मेरा पेशा यद्यपि यहाँ खेती है, लेकिन कभी-कभी मिलनेपर लोगोंको नदी-पार भी कराया करता हूँ। जो आदमी यहाँसे पार होते हैं, वह या तो भगोड़े होते हैं या कानून विरोधी माल ले आने-ले जानेवाले। भगोड़ों या भगोड़ोके मालको नदी-पार कराना अपने प्राणको नदी-पार कराना है। इसलिए मै इस कामको तब करता हूँ, जबकि मेरे खूनके बराबर पैसा पैदा हो।

तुर्कमानने बात रोककर, ईंधनको फूँककर आगको तेज करते हुए कहा—अच्छा, तो तू तबतक मेरे पास काम कर, खेतीके काममे मदद दे, जबतक कि कोई खूब पैसेवाला आदमी न आ जाए।

अनाथने तुर्कमानकी बात मान ली और यह सोचकर दिलमें खुश हुआ कि देर भले ही हो, लेकिन यहाँ मेरा मनोरथ सफल होगा। तुर्कमानकी चायदानीका पानी उबलने लगा। उसने दो चायनिक चाय बना एक चायनिक प्यालेके साथ अनाथके सामने रखी और दूसरी एक प्यालेके साथ अपने सामने। झोपड़ेकी दीवारमेंसे एक लत्तेमें बंधी पोटली निकालकर खोली, और उसमें से दो लिट्टियाँ निकालकर टुकड़े टुकड़े करके दोनों चाय

पीने लगे। चाय पीनके बाद तुर्कमानने कहा—आ पुत्र ! तुझे खेत ले चलूँ और अपनी फसल दिखलाऊँ।

तुर्कमान आगे-आगे चला और अनाथ उसके पीछे पीछे। दोनो काले घरसे निकलकर खेतोंकी ओर बढे। घरके पास एक शर वन था जिसका एक छोर मकानकी दीवारसे मिला हुआ था। इसी शर वनके बीचम हौजकी तरहका एक जलाशय था, जो एक छोटी नहरद्वारा नदीसे मिला हुआ था। काले घरके नजदीकवाले कोनेमे एक छोटी-सी डोंगी खूँटेसे बँधी थी। तुर्कमानने नावको दिखलाकर अनाथसे कहा—तुझे नदी पार करानमे यही नाव काम आएगी।

अनाथने नावको देखा। तुकमानकी आशा भरी बात सुनी। मनारथ सफल होनेका विश्वास बढा। वह और भी खुश होकर तुकमानके पीछे लम्बे लम्बे डग रखने लगा।

दोनो खेतपर पहुँचे। तुर्कमानकी खेती छोटे छोटे कोलाकी थी। एक कोनमे खरबूजा और तरबूजा लगा था, जिसकी राशपर लोबिया और मसूर बैठायी गयी थी। दूसरे कोनेमे उडद सरसा, ज्वार-बाजार जैसी दाने तथा तेलवाली फसल थी। बोये बूटोके बीच घास भरी हुई थी। तुकमानने खेतीकी ओर इशारा करके अनाथसे कहा

तेरा काम है, इस घास और तिनकेको हाथसे उखाडकर बाहर करना और बैलको सँभालकर खरबूजे और तरबूजकी जमीनको नर्म करना। पानी देते वक्त ख्याल रखना कि ज्वार के पौधे पानीमे डूब न जायें।

तुकमानने एक मिनटमे तीस चालीस दिनके कामकी योजना बताकर जाते-जाते फिर कहा —तू यह काम करता रह। इसी बीच कोई पैसेवाला भगोडा भी आ जायेगा। फिर मैं तुझे बिन पैसे लिये, खुदाके नामपर नदी पार करा दूँगा।

"बहुत अच्छा" कहते हुए अनाथ तुरन्त ही घास उखाडनेके कामम लग गया, लेकिन तुर्कमान "आज दम ले ले, कलसे काम शुरू करना।

कहावत है "थके-मांदेका काम आधा ही होता है", कहकर अनाथको लिये घरकी ओर लौटा।

घर पहुँचकर तुर्कमानने अनाथसे कहा—मैं इस समय ऊबा (गाँव) जा रहा हूँ। तू यहाँ लेटकर आराम कर, लेकिन सूर्य डूबनेके बाद होशियार रहनेकी आवश्यकता है, जिसमे चोर नाव न खोल ले जांय।

अनाथने सिर हिलाकर बात स्वीकर की। तुर्कमानने खूँटीपर टँगे अपने जामेको उतारकर पहिनते हुए कहा "तू सूर्योदयतक ऐसे ही रह। मैं सवेरे ऊबासे रोटी लाकर चाय बनाकर तुझे खिलाऊँगा और मैं भी चाय-रोटी खाऊँगा।" फिर उसने खूँटीसे बंदूकको उठाली और उसी खूँटीसे लटकती गुप्सर (तैरनेकी मशक)की ओर इशारा करके कहता चला गया—"होशियार रहना, कहीं कुत्ता आकर इसे खा न जाय।"

× × ×

अनाथ कुछ देर लम्बा पड़ा रहा। जब तुर्कमान नजरसे दूर हो गया तो अपनी जगहसे उठा और गुप्सरको खूँटीसे उतारकर कूल (तालाब) के किनारे ले गया। पानीमे भिगोया। जब गुप्सरका चमड़ा नर्म होगया तो मुँहसे फूँककर हवा भरकर उसके मुँहको खूब मजबूतीसे बाँधकर पानीके ऊपर डाला और स्वय भी कपड़ा उतारकर उसपर सवार हुआ, लेकिन अनजान सवारकी तरह हर हरकतमे वह गुप्सरकी ओर लुढककर पानीमे डुबकी खाता, लेकिन वह फिर उसपर सवार होकर चलनेकी कोशिश करता रहा। एक घंटा कूलके किनारे अभ्यास करनेके बाद उसने बैठना सीख लिया और फिर उसे कूलके भीतरकी ओर बढ़ाया। उसने देखा कि गुप्सरपर सवार होकर एक जगह खड़े रहनेसे उसे आगे बढ़ाना कही आसान है। इस तरह

उसको साहस हुआ और उसने उसे और भी तेजी से चलाना शुरू किया। वह गुप्सरको जितनी ही तेजीसे चलाता, उतना ही उसके ऊपर शरीरको सँभालना आसान लगता है। इसी तरह अनाथ गुप्सरपर चढा नहरियासे होते नदीके किनारेतक गया और फिर वहाँ से लौट आया।

उसने पानी से निकलकर गुप्सरको बाहर किया और मुँह खोलकर उसकी हवा निकाल उसे ले जाकर फिर खूँटीपर टाँग दिया। फिर कूलके किनारे आ उसने नाव चलानेका अभ्यास करना चाहा। नाव-पर चढकर पतवार चलानेकी अपेक्षा गुप्सरपर चढकर हाथ से चलाना उसे आसान मालूम हुआ। उसके छोटे हाथ नाव चलानेके अभ्यस्त नही थे, इसलिए जरा ही देर चलानेके बाद वे सुस्त पड जाते, लेकिन थोडी देर आराम करनेके बाद वह पहलेसे अधिक समयतक पतवार चला सकता।

अनाथ इसी तरह दिनमे शामतक दस बार नदीके किनारे आया-गया।

सूर्य अस्त हो गया। अनाथ बहुत थक गया था, लेकिन आजके अभ्यासने उसे अधिक आशावान् बना दिया था, इसलिए वह बहुत खुश था और अपने मनमे कह रहा था "यदि कोई खूब पैसेवाला जल्दी नही आया और तुर्कमानने मुझे पार नही किया, तो नदी पार करनेका उपाय मुझे मिल गया।"

अनाथ लम्बा पडा लेट रहा था, उसे खूब नीद आयी थी। आधी रातको घोडोके खुरोकी खटखटाहटसे उसकी आँख खुल गयी। उसने सोचा कि नाव चुरानेवाले आ गये और जल्दी जल्दी घरसे बाहर गया। अब वह नाव की रखवाली सिर्फ तुर्कमानके लिए नही, बल्कि अपने लाभ के लिए कर रहा था, क्योंकि उसीकी सहायता से वह नदी पार हो सकता था। उसने उस तरफ देखा, जिधरसे खुर की आवाज आ रही थी, और देखा कि दो टट्टू आ रहे हैं, लेकिन ने-के बाद वह नावकी ओर जाकर सीधे घरकी ओर

सवार बदूक और तलवारसे हथियारवद थे। पास आनेपर उनमेसे एकने घोडेको रोककर अनाथसे कहा—किथिक्चो (मल्लाह) को आवाज दे।

—मल्लाह यहाँ नही है—अनाथने कहा।

—कहाँ गया है ?

—ऊवा गया है।

—रोटी ओटी हो तो लाकर हमे दे।

—जो भी रोटी थी सब खाकर गया है। मैं भी भूखा लेटा हूँ।

"ऊनगाया" कहकर रोटी न रखनेके लिए मल्लाहको गाली देकर सवार अपने साथीके साथ नदीके नीचेकी ओर रवाना हो गया।

अनाथ अपने दिल मे "मैं समझता था कि ये चोर हैं। ये भिखारी नही हो सकते, क्योकि मैंने पूरी उम्रमे हथियारवद भिखारी नही देखा', सोचते हुए घरके भीतर जाकर फिर लम्बा पड रहा। उस रात इन दो सवारोके आनेको छोडकर कोई दूसरी दुर्घटना नही हुई। खूब पेट भर सोनेके बाद जब वह उठा, तो धूप निकल आयी थी। आज भी वह खेतीका काम शुरू करने से पहले कितने ही समयतक गुप्सार और नाव चलाने का अभ्यास करता रहा। दो घटा अभ्यास करनेके बाद तुर्कमान के आनेके डरसे वह खेतमे गया और हाथसे घास उखाडने लगा।

× × ×

मध्याह्न हो गया। सूर्य अनाथके सिरके ऊपर आ गया। इसी समय तुर्कमान अपने ऊबा से लौटकर आया। पहले उसने काले घरम जाकर चूल्हा जला चाय उबाली, फिर खेतके पास जा अनाथके कामको देखकर "आज का तेरा काम उतना अच्छा नही हुआ क्यो ?" कहते हुए उसे फटकारा, और फिर आवाज बदलते हुए बोला— खैर कोई हर्ज नही, अभी यह काम तेरे लिए नया है। धीरे धीरे सीख जायेगा। तेरा काम भी अच्छा होगा।" फिर उसने कहा -

—अच्छा आ, चाय पीएँगे।

चाय पीते समय अनाथने रातको आए दोनो हथियारबद भिखारी सवारोंके बारेमे बतलाया। तुर्कमानने ठठाकर हँसनेके बाद कहा :

—वे भिखारी नही थे। वे नदी-तटके पहरेदार, हमारी सरकारके सिपाही थे, लेकिन वे सदा भूखे रहते है और भीख माँगकर अपना पेट भरते फिरते हैं। इसीलिए एक रोटीके लिए अपने हाथ लगनेवाले हर भगोडेका सिर उडा देते है।

तुर्कमान चुप होकर अपने प्यालेकी चाय पीकर, दूसरा प्याला भरने के बाद सामने रखकर बोला—यदि उन्हे मौका मिले तो चोरी-डकैती किए बिना न रहे, लेकिन वे यह काम ऐसे गरीबोंके सिरपर करते हैं जो उनके सामने कुछ कर नही सकते। वे मेरे जैसे एक गोलीका जवाब दो-गोली से देनेवाले आदमीकी तरफ आँख भी नही उठा सकते।

चाय पीकर तुर्कमान फिर अपने ऊबाकी ओर जाते हुए बोला

—मेरे न रहनेपर यदि कोई आकर पूछे, तो उसे ऊबा भेज देना, लेकिन यदि ऐसा आदमी रातको बेवक्त आए तो कहना कि इसी समय आना, कल सबेरे वह आयेगा।

उठने वक्त तुर्कमानसे खाने बची हुई एक रोटीको अनाथके हाथोमे देते हुए कहा—जब भूख लगे, तो इसे खा लेना। खबरदार रहना, जिसमे हथियारबद कुत्ते तेरे हाथसे छीनकर इसे खा न जायें और काम खूब मन लगाकर करना।

तुर्कमान चला गया। चाय पी लेनेके बाद भी अनाथने बहुत सा समय गुपसर और नाद चलानेमे बिताया और फिर खेतकी ओर गया।

अनाथ सब चीजोसे ज्यादा इस ओर ध्यान देने लगा कि तुर्कमान गाँवसे कब आता है। वह प्रतिदिन ११-१२ बजेके बीच गाँवसे आता, चाय पकाता, अनाथके कामको देखता, फिर दोनो साथ चाय पीते और फिर उसके हाथोमे रातके लिए रोटी देकर और अधिक काम करनेकी ताकीद कर वह अपने गाँव लौट जाता। आने-जानेका समय निश्चित हो

जानेपर अनाथने अपने कामका समय भी निश्चित कर लिया। वह प्रतिदिन शाम-सवेरे कुछ घंटे गुप्सर और नाव चलानेमे लगाता और बीचके चार-पाँच घंटे खेतीके काममे।

धीरे-धीरे वह नाव और गुप्सरको नदीकी धारमे भी खेने लगा। इसके अतिरिक्त वह बिना नाव तथा गुप्सरके पानीमे तैरने और डूबकर दम साधनेका भी अभ्यास करने लगा। खेतीका काम भी काफी आगे बढा। उसने घासको निकालकर गोडकर खेत को गुलजार कर दिया।

तुर्कमान भी अनाथके कामसे बहुत खुश था। कभी उसे "शाबाश" और "बारकल्ला" कहता और कभी उसे "और अच्छा काम कर, तुझे बलवान करेंगे, जल्दी ही कोई पैसेवाला भगोडा आ जाएगा और मैं तुझे बिना पैसे ही नदी-पार उतार दूंगा"—कहते हुए उसे अधिक आशावान बना कर काममे और अधिक तत्पर बनानेकी कोशिश करता।

तुर्कमानने अनाथके डीलडौलके अनुसार एक लोहे का बेलचा लाकर दिया, और हाथके कामके खतम होनेके बाद जमीनको नर्म करने और मिट्टी चढानेके काम के लिए उसे नियुक्त किया।

४० दिनतक काम करके अनाथने गुप्सर और नाव चलानेका खूब अभ्यास कर लिया। वह नाव और गुप्सरको धारके विरुद्ध भी ले जा सकता था।

खेती का काम भी खतम हो गया था। तुर्कमान एक परती जमीनको दिखलाकर, उसे खोदकर घास आदि निकाल कर शरदमे युनुचका (घास) बोनेके लिए तैयार करनेको कहा और साथमे यह भी जोड दिया 'तब तक कोई न कोई पैसवाला भगोडा आ ही जाएगा।

× × ×

अनाथने नए कामको शुरू किया, लेकिन पैसेवाले भगोडे का कहीं पता नही था। वह सोचने लगा, गर्मियोके खतम होनेतक खेतीकी फसल कट जानेतक भी वैसा पैसावाला भगोडा शायद ही आए।

एक रात इसी तरहकी चिन्ता करते-करते अनाथको नीद नही आयी। आधी रातके करीब घारवनकी ओरसे आदमीके आनेकी आवाज सुनायी दी। वह जल्दीसे उठकर दौडा-दौडा नावके पास गया और देखा कि दो आदमी नाव खोल रहे हैं। वह चिल्लाया—कौन हो ?

—न डर, मैं हूँ—एक परिचित आवाज सुनायी दी। यह आवाज तुर्कमानकी थी। अनाथ प्रसन्न होकर उसकी तरफ दौडते हुए बोला—हाँ, तो पैसेवाला भगोडा मिल गया ? मैं भी तैयार हो जाऊँ न ?

—न, यह आदमी नदी पार नही जा रहा है बल्कि नदीके एक टापूमे खरबूजेके कामके लिए जा रहा है—तुर्कमानने कहा।

तुर्कमान झूठ बोल रहा है, इसे अनाथने भी समझ लिया क्योकि खरबूजेके कामके लिए रात मे नही जाया करते। वह सोचने लगा 'कौन जानता है इन चालीस दिनोमे—जबकि मैं दरिया पार करनेकी आशामे यहाँ काम करता रहा हूँ—रातके वक्त इस धोखेबाजने कितने पैसेवाला को नदी पार कराया होगा, और अब भी मुझे आशा दिलाए रखना चाहता है।' इसके बाद अनाथको तुर्कमानपर विश्वास नहीं रह गया और उसने स्वय नदी पार करनेको कोशिश करनेका निश्चय कर लिया।

१४

अनाथ एक दिन कोई काम न करके पड रहा। तुर्कमानके आनेके समय बीमार बन गया और 'ऊ ऊ करके लेटा रहा। तुर्कमानने चाय उबाली, खुद पी और अनाथको पिलायी। अनाथने चायके साथ आज रोटी नही खायी। तुर्कमानने रोटी खानेके लिए बहुत जोर दिया, लेकिन अनाथने कहा—मेरा मन नही करता, शिरमे बहुत दर्द हो रहा है।

तुर्कमान आज अधिक देरतक नदी तटपर नही रहा और अनाथके दिन और रातके खानेके लिए दो रोटी रखकर ऊबा लौट गया ।

तुर्कमानके चले जानेके बाद अनाथने तैयारी शुरू की । गुप्सरको लेकर उसे चारो ओरसे देखा, उसकी एक एक बखिया और दराजकी जगहको खूब अच्छी तरह निहारा कि वह दराजकी जगह खूब पानी और हवाकी चोटको पूरी तरह सह सकती है या नही । देखकर उसे पूरा सतोष हुआ । फिर वह नावके पास गया और उसे भी चारो ओरसे देखा और दर्जे और छेदमे अपने पुराने कुर्तेमेसे लत्ता फाडकर अच्छी तरह भर दिया । फिर घरमे लौटकर एक रोटी गर्म चायमे भिगोकर खायी और सोनेके लिए लम्बा पडा रहा लेकिन नीद न आयी । उसका सारा ध्यान आमू नदी पार करनेकी ओर लगा था—आमू जैसी महानदीको वह तने-तनहा अपने जीवनमे पहली बार पार करने जा रहा था । इसी सोच विचारमे एक घडीमें सौ बार करवटें बदलते हुए उसने दिन बिताया ।

शाम हुई । अनाथ गुप्सर और रोटीको लेकर नावमे पहुँचा और रस्सी खोलकर नावको नहरसे नदीकी ओर ले चला । नदीके तटपर पहुँच लगर डाल, वह रातके अँधेरेकी प्रतीक्षा करने लगा ।

इसी समय दो सरकारी पहरेदार नदीमे किनारे किनारे अनाथकी ओर निगाह किए आते दिखाई पडे । अनाथकी दृष्टि जिस वक्त उनपर पडी, वह डर गया और मनम सोचने लगा "मनोरथ पूरा होनेका समय आ गया है और उसी समय मैं पकडा जा रहा हूँ ।"

सिपाही सीधे कूलके किनारे आए और उनमेसे एक 'हाँ भगोडे ! थक न जाना" कहते हुए घोडेसे उतरकर नावपर आया, लेकिन वहाँ गुप्सर और अनाथकी फटी पोशाक और एक रोटीके सिवा और कुछ नहीं था । रोटीको अपने हाथमें लेकर सिपाहीने अनाथसे वहाँ आनेका कारण पूछा । अनाथने अपनेको मल्लाह तुर्कमानका नौकर बतलाते कहा—यहाँ नाव चलानेका अभ्यास कर रहा था । आप लोगोको देखकर खड़ा हो गया ।

यह सवार अनाथको बंदी बनाकर नावसे ले जाना चाहता था, लेकिन उसके साथीने उससे कहा—छोड दे ! यह लडका भागकर क्या कर सकता है ? रोटी ले, और चल रास्ता पकड। सवार रोटी लेकर, अनाथको वही छोडकर नावसे निकलकर घोडेपर सवार हो गया। दोनो सवार रोटीको दो टुकडे कर खाते चल दिए और कूल तथा शर-वनका चक्कर काटते हुए फिर नदीके किनारे जाकर आँख से ओझल हो गए।

अनाथने सिपाहियोके सामने अपनी नावको काले घरकी तरफ बढाया। उनके चले जाने पर फिर नदीके किनारे आ वहाँ ठहर गया।

कुछ समय बाद अँधेरा छा गया। आकाशके तारोके अतिरिक्त कही प्रकाश नामकी चीज दिखलायी नही पडती थी। पीली मिट्टी मिले आमूके जलमे तारोका प्रतिबिम्ब भी दिखलायी नही पडता था। यह अनाथके लिए अपने महान् कार्य करनेका समय था। उसने नावको नदी-के भीतर की ओर चलाया और डरके मारे हर बार पतवार चलानेके बाद एकबार नदी तटकी ओर देखता। उसने दूर किनारेपर कालिमाओको आते देखा। पहले उसने यह सोचा कि कुछ नही है, रात के वक्त यहाँ आदमी क्या करेगा, लेकिन देर नही हुई कि उसे मालूम हो गया कि वह कालिमा दो आदमी हैं। दोनो दौडे-दौडे नदीके किनारेकी ओर आ रहे थे, उनमेसे एक आगे था। उसने ऊँची आवाजसे कहा—"ठहर चोर! इधर लौट! नही तो गोली मार दूंगा।"

अनाथने आवाजको पहचान लिया। यह उसके अंतिम मालिक तुर्क-मान मल्लाहकी थी। रातके वक्त आनेसे अनाथ समझ गया कि कोई पैसेवाला भगोडा, तुर्कमानके कथनानुसार "खरबूजेवाला" हाथ आया है और पीछे-पीछे धीरे-धीरे आनेवाला आदमी शायद वही भगोडा है। अनाथने अपने दिलमे यह भी सोचा कि यदि मैं फिर उसके हाथ पड़ा तो वह एक गोलीसे मेरा काम तमाम कर देगा। अच्छा यही है कि

जो भी शक्ति और समय मेरे पास है, उसका उपयोग कर यहाँसे भाग चलूं।

अनाथ इसी निश्चयके अनुसार नावको दोहरी ताकतसे चलाते हुए मँझधारकी ओर खेने लगा। तुर्कमानने बन्दूकका निशाना साध गोली चलायी। गोलीकी आवाज सुनकर नदीके दूसरे तट अर्थात् अनाथके प्रिय देशकी ओरसे भी गोलियोंपर गोलियाँ छूटने लगी। तुर्कमानकी गोली नावके पास न आकर न जाने किधर चली गयी, लेकिन दूसरी ओरसे आनेवाली गोलियां नावके ऊपरसे सनसनाती हुई जाने लगी। अनाथ डर गया। उसने सोचा कि पहली गोलियां शिरके अधिक ऊपर से भले ही चली गयी हो, लेकिन दूसरी गोलियाँ जरूर मेरे शिरपर आकर लगेंगी। खतरेको समझकर अनाथने अपनेको नावके भीतर छिपा लिया और गुप्सर मे फूंककर हवा भरने लगा।

दूसरी तरफसे आती गोलियां नावके भीतरी और बाहरी कोरोंपर लगने लगी। अनाथ बहुत घबडाहटमे पडा था। एक ओर गोली लगनेका डर था और दूसरी ओर छेदके मारे नावके डूबनेकी भी आशका थी। अनाथने इस खतरेसे बचनेके लिए भरी हुई गुप्सरकी रस्सीको अपने हाथमे फँसाकर खिसककर अपनेको पानीमे डाल दिया।

× × ×

अनाथ नदीमे गुप्सरके ऊपर सवार नही हुआ। हाथमे बँधी गुप्सरको पानीकी धार ने बहाना शुरू किया। वह अधिक समय पानीके भीतर रहता, जब साँस फूलने लगती, तो बाहर मुंह करके एक साँस लेकर फिर पानीम डूब जाता।

दूसरे किनारेसे अब भी गोलियोकी आवाज आ रही थी। प्राय सभी गोलियाँ नाव मे लग रही थी। धीरे धीरे सारी नाव पानीसे भरकर डूब गयी। उसके बाद बन्दूकोंकी आवाज भी शांत हो गयी। –

अनाथ प्रायः दो घंटा गुप्सरपर बिना सवार हुए ही कभी डूबता कभी उतराता घाटके साथ-साथ चलता रहा। जब वदूककी आवाज बिलकुल बंद हो गयी तो अनाथ गुप्सरपर सवार हुआ और पानीके सहारे किनारेकी ओर चलने लगा।

एक घण्टा और चलनेके बाद अनाथ एक छोटे टापूके पास पहुँचा। वह बहुत थक गया था, इसलिए उसने सुस्तानेके लिए गुप्सरको उठाकर टापूपर उतरना चाहा, लेकिन टापू अभी नया-नया बना था। अभी मिट्टी-बालू कड़ी नहीं हो पायी थी, इसलिए पैर रखते ही वह उसमे धँसने लगा। उसने जल्दी-जल्दी पैर निकालकर टापूके मध्यमे पहुँचना चाहा। वहाँ मिट्टी कुछ सूखी थी। वह वहाँ हवाभरी गुप्सरको शिरके नीचे रखकर लेट गया। वह भूखा भी था, थका भी था, ऊपरसे सर्दी भी खा गया था, इसलिए जूडीवाले आदमीकी तरह काँप रहा था, और उसके दाँत कटकटा रहे थे। वह कुछ मिनट लेटा रहा, लेकिन आराम होनेकी जगह हालत और बुरी होती जा रही थी। उसने शिर उठाकर दूसरे तटकी ओर, अपने प्रिय देशकी ओर नजर दौड़ायी। किनारा नजदीक था और वहाँके सरकंडे साफ दिखलायी दे रहे थे। उसने सोचा "देर नहीं कि मेरा जीवन यहीं समाप्त हो जाय, लेकिन लक्ष्यके पास पहुँचकर मरना बहुत अफसोसकी बात है। जो भी हो, अच्छा यही है कि मैं अपनी यात्रा जारी रखूँ। यदि मरूँगा तो कृपामयी माँ, अपनी प्रिय मातृभूमिसे एक कदम नजदीक होकर मरूँगा।" इस अभिलाषाने अनाथको और शक्ति दी और वह अपनी जगहसे उठकर गुप्सरको लिये-दिये फिर नदीमे पहुँचा और उसपर सवार होकर किनारे की ओर बढ़ने लगा। पेट और छातीके नीचे गुप्सरको दबाये वह अपने हाथो और पैरोको चला रहा था।

किनारा नजदीक आया। वह पानीपरबत्तखकी तरह तैरता आगे बढ़ रहा था। हाँ पानी बिलकुल शान्ति कूल (तलैया) या हौजकी तरह मालूम होता था। अनाथकी दोनो आँखें किनारेपरलगी हुई थी।

वह बडे ध्यानसे देख रहा था कि कोई आदमी तो नही है । वह डर रहा था कि कही बासमचियोके हाथमे न पड जाये, क्योकि वह जानता था कि गरीबका लडका होनेसे उनके हाथोमे पडकर वह जिन्दा नहीं बच सकता, लेकिन नदी-तटपर कोई नही था । वहाँ बिल्कुल शान्ति और नीरवता छाई थी । हल्की हवा भी नही चल रही थी कि सरकडेकी पत्तियोको हिलाती । उसने निर्भय होकर गुपसरको किनारेकी ओर चलाया । निरभ्र आकाशमे चमकते तारोके प्रकाशमे अनाथ किनारे की चीजोको देख सकता था । वह अधीर होकर उसी तरह तेजीसे गुप्सरको तटकी ओर चलाने लगा, जैसे चिरवियुक्त शिशु मॉकी ओर बढता है ।

गुप्सर किनारेपर पहुँची । अनाथने सरकडेकी जड पकडकर अपने-को किनारेपर लानेके ख्यालसे हाथको बढाया । इसी समय एक शक्ति-शाली हाथने उसके हाथको दृढतापूर्वक पकडा और दूसरे हाथको गुप्सर-पर रखा ।

अनाथ पकडा गया था, लेकिन नही जानता था कि किन हाथोंने उन्हे पकडा है क्योकि पकडनेवालेका सारा शरीर सरकडेके पत्ताकी आडके पीछे था ।

द्वितीय भाग

१

उस मजबूत हाथने अनाथको पकड कर पानीके बाहर निकाल लिया और दूसरे हाथने गुप्सरको भी बाहर कर दिया। अनाथ और गुपसरके बाहर आजानेपर हाथवाला आदमी उठ खडा हुआ। इसी समय नीचेकी ओरके सरकडोके भीतरसे भी दूसरे दो आदमी निकलकर अनाथके पास आ गये। तीनो आदमियोकी शक्ल-सूरत और पोशाक ऐसी थी, जैसी अनाथने कभी नही देखी थी। सभीके वस्त्र यूरोपीय ढगके तथा एक रगके थे और तीनो बदूक, तमचा और हथबमसे हथियारबद थे। जिस आदमीने अनाथको पानीसे निकाला था, उसने गुप्सरको खोलकर भीतर हाथ डाल अच्छी तरह देखा कि उसमे कोई पत्र या ऐसी ही कोई दूसरी चीज तो नही है। इसके बाद उसने अनाथसे कौन, कहाँसे और किस लिये नदी पार हुआ, आदिके बारेमे पूछा, लेकिन अनाथ उनकी बातको नही समझ सका, चकित होकर उनका मुँह देखता रहा। वह रूसी भाषा नही समझता यह समझकर उनमेसे एकने वह जिस भाषाको समझता था, उसमे अनुवाद करके पूछा। अनाथने जो कुछ भी उसपर बीती थी, एक एक करके कह सुनायी। फिर नदी पार करके आनेके बारेमे कहते हुए बोला :

—मै नदी पार कर अपने प्रिय देशमे आया, क्योकि मैने सुना कि बोलशेविक हमारे देशके गरीब और अनाथ बच्चोको बालशालामे पर वरिश करके उन्हें लिखा पढाकर आदमी बनाते हैं। मै इसलिए आया कि अपने देशमे सीख पढकर आदमी बनूँ और खूँख्वार बाय और

बासमची गरीबोको मारते और हमारे देशको जलाते हैं, उन्हे पकडकर बोलशेविकोके हाथ मे दू ।

—जो कुछ तूने कहा, यदि वह ठीक है, तो तेरा मनोरथ पूरा होगा—पूछनेवालेने कहा । थैलेको खोलकर एक टुकडा मिश्री और एक चाकलेट अनाथके हाथमे देते हुये कहा—यह खा, जिसमे जोर मिले । फिर हम चलेंगे ।

अनाथने मिठाई को मुँहमे डालकर चूसना शुरू किया । बापके घरमे मिठाइया खायी थी, लेकिन उनका स्वाद ऐसा नही था । मिश्री उसे स्वादिष्ट मालूम हुई । उसे कुछ ताकत मिली, दिलको आराम हुआ और सर्दीसे कौंपना बन्द हो गया ।

अनाथने मिठाई खाते वक्त उसपर लिपटे रग बिरंगे कागजोको एक-एक करके निकालकर एक हाथम रख लिया । मिठाई मुँहमे डालकर खाते हुये वह कागजको चकित और शङ्कित दृष्टिसे देखने लगा, क्योंकि पहली बार उसने ऐसी चीज देखी थी । जब उसे चाकलेट और उसपर लिपटे कागजोके बारेम मालूम नही हुआ, तो वह अनुवादककी ओर देखने लगा ।

—इन्हे खा—अनुवादकने चाकलेट देते हुये कहा और फिर कागजो-की ओर सकेत करके कहा—इन्हे फेंक दे ।

अनाथने चाकलेटको मुँहम डाली । वह मिश्रीस भी ज्यादा मीठी मालूम हुई । खात वक्त उसने फिर कागजोको एक-एक करके देखा और उसके भीतरकी पतली पन्नी निकालकर अंगुलियोम लपटकर देखा, लेकिन, उन्हे फेंका नही ।

—फेंक दे, इन्हे क्या करेगा रखकर ? ये बेकारके कागज हैं—दुभाषियेने कहा ।

उसने बाकी मिठाईको खाते हुए कागज जमीनपर फेंक दिया, लेकिन उससे नजर नही हटाई । वे लोग जो सवाल करते, उसका जवाब देते समय अब भी उसकी दृष्टि कागजपर रही ।



चाकलेट खानेके बाद अब वह कुछ मजबूत हुआ, उसका कांपना बन्द हुआ और चेहरेपर सुर्खी दौडी। अब उसे लेकर वह आफिसकी ओर चले। अनाथ उनके आगे-आगे था। उसके दिलमे खुशी और पेटमे आराम था।

x × ×

जिस समय सीमान्तपाल अनाथको कार्यालयमे ले गए, उसके शरीर-पर एक पायजामेके सिवा और कुछ न था। वहाँ उसे नया कपडा पहनाकर एक कमरेमें किसीके सामने ले गए। उस आदमीकी भी पोशाक और शकल-सूरत सीमान्तपालो-जैसी थी। इस आदमीने भी अनाथसे उसी तरहके सवाल किए और अनाथने भी उसे वे ही जवाब दिए, जो नदीके किनारे दे चुका था। दोनो जगहोके प्रश्नोत्तरमे इतना ही अतर था, कि यहाँ सब कुछ कागजपर लिखा जा रहा था।

प्रश्नोत्तर समाप्त होनेके बाद प्रश्नकर्ताने कहा—अच्छा, इसे ले जाओ, खिलाओ-सुलाओ। आराम करे, फिर देखेंगे।

अनाथको लेकर वह दूसरे घरमे गए। घरमे अँधेरा था, लेकिन वह फिर एकाएक प्रकाशित हो गया। यह देखकर अनाथ एकदम कांपने लगा। उसका होश उड गया और चकित होकर देखने लगा। उसके रङ्गको उडा, चेहरेको सफेद और शरीर को कांपता देखकर लानेवाले सीमान्त-पालने कहा—"डर मत, यह स्वयं जलनेवाला बिजलीका दीपक है।" फिर स्विचको दबाकर दो-तीन बार उसे जलाया-बुझाया और अनाथको वही छोडकर दरवाजेको बन्द करके चला गया।

अनाथने अपने जीवनमे मिट्टीके तेलके चिरागो, लालटेनो और बदबूदार बत्तियोके सिवा दूसरे प्रकारके दीपक नही देखे थे। वह सोचने लगा, बिजलीकी रोशनी अजब चीज है, जिसे बोलशेविक हमारे देशमे लाए हैं। उसने जाकर अपने हाथसे स्विचको दो-तीन बार दबाकर

रोशनीको जला-बुझाकर देखा। उसकी प्रसन्नताका ठिकाना नहीं था। कितने अन्धकारपूर्ण, कितनी कष्टमय दुनियासे वह ऐसी प्रकाशमान और आनन्दपूर्ण दुनियामे आया ! उसका हर्ष मनमे समा नही रहा था। वह अपने भावोंको किसीसे कहकर मन हलका करना चाहता था। इसी समय अनाथको अपनी कृपामयी माँ और कुर्बान भाई याद आए। उसे लगा कि कही वह उसके पास होते तो वह बत्तीको जला-बुझाकर उस हुनरको दिखलाता, जिसे बोलशेविक देशमे लाए हैं।

बिजलीके चिरागके देखनेसे हुए आश्चर्य और मनके उद्वेगके कुछ नर्म पड जानेपर अनाथ कमरेकी चारो ओर नजर दौडाने लगा। कमरा छोटा था, लेकिन बहुत साफ और खुला हुआ। उसकी दीवारें बगुलेके परकी तरह सफेद थी। छत और फर्शमे वार्निश किये लकडीके तख्ते लगे थे। कमरेके एक तरफ एक चारपाई थी, जिसके ऊपर नर्म बिछौना बिछा हुआ था? एक कोनेमे मेजपर सुराही और पासमे एक कुर्सी थी। अनाथने पहली बार इस तरहका कमरा देखा था। उसने सोचा, शायद बोलशेविकोकी बालशाला यही है।

यदि उस समय कोई कहता कि यह बन्दीखाना है; तो अनाथ क्रोधमे आकर उसकी जीभ निकालनेके लिए तैयार हो जाता। उसने डेढ़ महीने पहले पडोसी राजके बन्दीखानेको देखा था। वह बन्दीखाना भेड रखनेवाले हौजकी तरह था। अँधेरा, गन्दा और काला था। उस जेलखानेमे जिसको बद किया जाता, उसे कपडा नही पहनाते, देख-भाल नही करते, शरीरसे कपड़ोको छीनकर नगे बदनपर कमचियाँ मारते और फिर लाकर बन्दीखानेमे बद कर देते।

अनाथ इस प्रकार अपने कमरेका बालशाला समझकर खूब खुश हो रहा था। इसी समय किसीने द्वार खोला, चाय, चीनी और रोटी लाकर मेजपर रखी और अनाथको कुर्सीकी ओर सकेत करते हुए "आ, बैठ,

चाय पी और रोटी खा" कहकर बाहर निकल गया और दरवाजा बन्द कर दिया।

अनाथने चीनीको गरम चायमे डालकर रोटी खाना शुरू किया।

जब अनाथ पेट भर खाना खा चुका तो द्वार फिर खुला और उसी आदमीने आकर मेजपरसे बर्तनोंको उठा लिया और चारपाईकी ओर इशारा करके कहा—यह तेरे सोनेके लिए है। फिर बाहर निकलनेसे पहले उसने बिजलीकी स्विचकी ओर इशारा करके कहा—सोनेके वक्त चिरागको बुझा देना।

अनाथने अभिमानके साथ शिर हिलाते हुए बत्तीको एक-दो बार बुझा कर कहा—मैं इसे जलाना-बुझाना जानता हूँ।

—मलादीयेत्स, शाबाश—कहते आदमीने बाहर निकलकर दरवाजे-को बद कर दिया।

अनाथ कपड़ा उतारकर नर्म बिस्तरेपर लेट गया। वह जिन्दगी मे कभी चारपाईपर न सोया था। यहाँ पहली बार नर्म बिस्तरेपर लेटा था। लेटनेके साथ ही उसे नींद आ गयी।

× × ×

पहरेदार लम्बा बूट पहने दरवाजेके बाहर टहल रहा था। उसकी आवाज अनाथके कानोमे आयी। खिड़कीके शीशोसे कमरेके भीतर धूप पड़ रही थी। कमरा गर्म था और दिनके बारह बज रहे थे।

द्वाररक्षकने अनाथको कमरेसे बाहर लेजाकर शौच और हाथ-मुँह धोनेसे निवृत्त करा फिर कमरेमे लाकर बन्द किया। कुछ मिनट बाद शामवाले आदमीने रोटी, चीनी-चाय लाकर मेजके ऊपर रखी। भोजनो-परान्त अनाथ फिर चारपाईपर लेटकर कुछ देर सोचता रहा। फिर उसका दिल उकताने लगा "कहते थे कि बालशालामे पढ़ाते हैं। पढाई कब शुरू होगी ? दूसरे बच्चे कहाँ हैं ? मैं क्यो अकेला हूँ ?" वह अपनी

रोशनीको जला-बुझाकर देखा। उसकी प्रसन्नताका ठिकाना नहीं था। कितना अन्धकारपूर्ण, कितनी कष्टमय दुनियासे वह ऐसी प्रकाशमान और आनन्दपूर्ण दुनियामे आया! उसका हृष मनमें समा नही रहा था। वह अपने भावोंको किसीसे कहकर मन हलका करना चाहता था। इसी समय अनाथको अपनी कृपामयी माँ और कुर्वान भाई याद आए। उसे लगा कि कहीं वह उसके पास होते तो वह बत्तीको जला-बुझाकर उस हुनरको दिखलाता, जिसे बोलशेविक देशमें लाए हैं।

बिजलीके चिरागके देखनेसे हुए आश्चर्य और मनके उद्वेगके कुछ नर्म पड जानेपर अनाथ कमरेकी चारों ओर नजर दौडाने लगा। कमरा छोटा था, लेकिन बहुत साफ और खुला हुआ। उसकी दीवारें बगुलेके परकी तरह सफेद थी। छत और फर्शमें वार्निश किये लकडीके तख्ते लगे थे। कमरेके एक तरफ एक चारपाई थी, जिसके ऊपर नर्म बिछौना बिछा हुआ था? एक कोनेमे मेजपर सुराही और पासमे एक कुर्सी थी। अनाथने पहली बार इस तरहका कमरा देखा था। उसने सोचा, शायद बोलशेविकोंकी बालशाला यही है।

यदि उस समय कोई कहता कि यह बन्दीखाना है, तो अनाथ क्रोधमे आकर उसकी जीभ निकालनेके लिए तैयार हो जाता। उसने डेढ महीने पहले पडोसी राजके बन्दीखानेको देखा था। वह बन्दीखाना भेड रखने-वाले हौजकी तरह था। अँधेरा, गन्दा और काला था। उस जेलखानेमे जिसको बंद किया जाता, उसे कपडा नही पहनाते, देख भाल नही करते, शरीरसे कपडोको छीनकर नंगे बदनपर कमचियाँ मारते और फिर लाकर बन्दीखानेमे बंद कर देते।

अनाथ इस प्रकार अपने कमरेका बालशाला समझकर खूब खुश हो रहा था। इसी समय किसीने द्वार खोला चाय, चीनी और रोटी लाकर मेजपर रखी और अनाथको कुर्सीकी ओर संकेत करते हुए "आ, बैठ,

चाय पी और रोटी खा" कहकर बाहर निकल गया और दरवाजा बन्द कर दिया।

अनाथने चीनीको गरम चायमे डालकर रोटी खाना शुरू किया।

जब अनाथ पेट भर खाना खा चुका तो द्वार फिर खुला और उसी आदमीने आकर मेजपरसे बर्तनोको उठा लिया और चारपाईकी ओर इशारा करके कहा—यह तेरे सोनेके लिए है। फिर बाहर निकलनेसे पहले उसने बिजलीकी स्विचकी ओर इशारा करके कहा—सोनेके वक्त चिरागको बुझा देना।

अनाथने अभिमानके साथ शिर हिलाते हुए बत्तीको एक-दो बार बुझा कर कहा—मैं इसे जलाना-बुझाना जानता हूँ।

—मलादीमेस, शाबाश—कहते आदमीने बाहर निकलकर दरवाजे-को बंद कर दिया।

अनाथ कपडा उतारकर नर्म बिस्तरेपर लेट गया। वह जिन्दगी मे कभी चारपाईपर न सोया था। यहाँ पहली वार नर्म बिस्तरेपर लेटा था। लेटनेके साथ ही उसे नीद आ गयी।

× × ×

पहरेदार लम्बा बूट पहने दरवाजेके बाहर टहल रहा था। उसकी आवाज अनाथके कानोमे आयी। खिडकीके शीशोसे कमरेके भीतर धूप पड रही थी। कमरा गर्म था और दिनके बारह बज रहे थे।

द्वाररक्षकने अनाथको कमरेसे बाहर लेजाकर शौच और हाथ-मुँह धोनेसे निवृत्त करा फिर कमरेमे लाकर बन्द दिया। कुछ मिनट बाद शामवाले आदमीने रोटी, चीनी-चाय लाकर मेजके ऊपर रखी। भोजनो-परान्त अनाथ फिर चारपाईपर लेटकर कुछ देर सोचता रहा। फिर उसका दिल उकताने लगा "कहते थे कि बालशालामे पढाते हैं। पढाई कब शुरू होगी? दूसरे बच्चे कहाँ हैं? मैं क्यो अकेला हूँ?" वह अपनी

जगहसे उठकर दरवाजेके पास गया। उसमे लोहेके छड लगे हुए थे। उसने इनके बीच से झाँका, लेकिन लगे हुए शीशेम कोई चीज मली थी, इसलिए वाहर कुछ नही दिखाई पडा। फिर उसने दरवाजेको खोलना चाहा, लेकिन वह खुला नही। उसे और भी चिन्ता हुई और उसने अपने आपसे कहा—आश्चर्य ? बालशालाम क्या बच्चेको कोठरीमे अकेला बद कर देते है ? यह बात ठीक नही है। बडोसे कहकर इसे हटवाना चाहिए।

वह फिर थोडी देर लेटा रहा और फिर उठकर कमरम टहलने लगा। उसका मन आखिरकार दुखी होने लगा। इसी समय खाना देनेवाला आदमी फिर आया। उसके हाथमे मास-सूप और रोटी थी, जिसे मेजपर रखकर वह चायके बर्तनोको लेकर चला गया। आदमीके दरवाजा खोलकर जाते समय अनाथने टोककर कहा—चचा, तुम यहाँके हो ? पढाई यहाँ कबसे शुरू होती है ?

आदमीने पहले अचरजके साथ अनाथकी ओर देखकर कहा—यहाँ पढाई नही होती।

—दूसरे बच्चे कहाँ है ?

—यहाँ तेरे अलावा कोई दूसरा बच्चा नही है।

आदमी चकित होकर दरवाजा बद करके चला गया। अनाथ भी बे-बच्चा और बे पढाईकी बालशालाके बारेमे अचरज करते हुए कुर्सीपर बैठा रहा। फिर शोरबामे रोटीके टुकडे करके डालकर खाया और फिर आलू और मासको खाते हुए उसने अपने-आपस कहा—सूप स्वादिष्ट है। एमानकुल बायके घरपर प्रतिदिन एक भेड मारकर खुद खा जाते थे और मुझे ज्वारकी सूखी रोटी दिया करते थे—वह भी पेट भर नही। सप्ताह-पखवारेमे एक बार मुझे सूप देते, लेकिन वह भी खाली अधगरम पानी होता। यदि मास देते, तो छुरीसे सारे मासको निकालकर सिर्फ हड्डियाँ देते, जो बिलकुल सूखी लकडीकी तरह सामने आती। यहाँ का सूप भी

स्वादिष्ट है और मास-खड भी विना हड्डी का है ।

अनाथने फिर वात करना शुरू किया—"सभी चीजें ठीक हैं, लेकिन यहाँ खाने-सोनेके सिवा कोई दूसरा काम नही । ऐसे काम कैसे चलेगा ? और नही तो पासमे एक वच्चा ही होता, कि मैं कभी-कभी उसके साथ खेलता या बातचीत करता ।" थोडी देर कुर्सीपर बैठने के बाद अनाथ अपनी चारपाईपर लम्बा पड रहा ।

× × ×

अनाथ पेट भर खाकर निधडक सोया हुआ था । इसी समय पहरे-दार "आ, मेरे साथ" कहकर उसे फिर उसी घरमे ले गया जहाँ उससे पूछताछ की गयी थी ।

उस घरमे आज उस दिनके प्रश्नकर्त्ताके अतिरिक्त और भी दो आदमी थे । आज भी उससे प्रश्नोत्तर हुए और सबको कागजपर लिखा गया ।

प्रश्नोत्तरके बाद प्रश्नकर्त्ताने पहरेदारसे कहा—'इसे बाहर ले जा, मैं फिर बुलाऊँगा । पहरेदारने अनाथको बाहर ले जाकर एक बेंचपर बैठाया और खुद भी वही बैठ गया । बहुत देर नही हुई, कि भीतरसे बुलानेकी आवाज आयी । अफसरने भीतर आनेके बाद अनाथसे कहा—तू अपने घर जाएगा ?

—मेरा घर नही है—अनाथने कहा ।

—शायद तेरे भाई-बधु हो, उनके पास चला जा ।

—मेरे भाई-बधु भी नही हैं ।

—यही सही लेकिन हम यहाँसे छोड दें, तो तू कहाँ जाएगा ?

—मैं यहाँसे कही नही जाऊँगा, मैं यही रहकर पढ़ूँगा । सिर्फ जिस कोठरीमे मैं सोता हूँ, उसके दरवाजे को खुला रखना चाहिए ।

यहाँ बैठे आदमी एक दूसरेको देखकर हँस पड़े। फिर प्रश्नकर्त्ताने कहा—यहाँ पढाई नहीं होती।

—क्यों! कहते थे कि बालखानामें पढाई होती है—अनाथने पूछा।

—यह बालशाला नहीं है—यहकर प्रश्नकर्त्ताने फिर पूछा—यदि बालशाला भेजें, तो तू जाएगा?

—जाऊँगा—अनाथने हर्ष, विस्मय और संकोच के साथ कहा। वहाँ बैठे आदमी हँसते हुए आपसमे रूसीमें बात करने लगे। एकने उसमेसे कहा—इस लड़केकी उमर अधिक मालूम होती है, शायद सोलह सालकी हो। इस उमरमें बच्चे बालशालासे बाहर आते हैं, हम कैसे इसे बालशाला भेजेंगे?

—कद लम्बा है, तो भी इसके कहनेके अनुसार उमर चौदह सालकी है। फिर इस बच्चेके घर-द्वार, भाई-बन्द नहीं हैं। इसे पढाना भी जरूरी है और बालशाला छोड़कर कोई ऐसी जगह हमारे पास नहीं है, जहाँ खाना-पहिनना, रहना-पढना सब हो सके। इसलिए बहुत पशोपेश में न पड़कर इसे बालशाला भेजना अच्छा है—प्रश्नकर्त्ता ने कहा।

दूसरे भी सहमत हुए और प्रश्नकर्त्ताने अनाथसे कहा—तू बाहर बैठ, हम अभी पत्र लिखकर तुझे बालशाला भेजते हैं।

अनाथ बाहर बरामदेमे आकर बैठा। कुछ ही मिनटोंके बाद पहरेदार एक कन्वेर्त (लिफाफा) हाथमें लिए आया और उसे बालशालाकी ओर ले चला।

× × ×

सिपाही अनाथको लिए बालशालाके एक कमरेमें गया और वहाँ बैठे व्यक्तिके हाथमें लिफाफा देकर अनाथको पास पड़े गद्दे दार दीवान-पर बैठा दिया।

व्यक्तिने लिफाफेको खोलकर पत्र पढा, फिर शिरको ऊपर उठाकर "बहुत अच्छा" कहकर कलमसे पत्रके ऊपर कुछ लिखा और उसे अपने पीछेकी फाइलमे टाँग दिया ।

दूसरे कमरेसे एक और आदमी आया, जो बालशालाका अध्यक्ष था । उसने एक पत्र लिखकर सिपाहीके हाथमे देते हुए कहा—इसे उन्हे दे देना ।

उस आदमीने पत्रको पढकर अनाथकी ओर निगाह करके अपने मुखिया से पूछा—यही बच्चा है ।

—यही है—मुखियाने कागजपरसे मुँह हटाए बिना कहा ।

उस व्यक्तिने अनाथ और सिपाहीकी ओर देखकर कहा—"हमारे साथ आओ"—और उनको अपने पीछे-पीछे ले गया । दूसरे कमरेमे एक मेजके पास बैठकर अनाथको भी बैठनेके लिए इशारा किया ।

यह आदमी बालशालाका सेक्रेटरी था । उसने एक रजिस्टर निकाल कर सरदारके दिए हुए पत्रकी कुछ पक्तियाँ लिखी । फिर एक सफेद कागज निकालकर उसके कोनेपर मुहर मारकर उसपर भी कुछ पक्तियाँ लिखी । फिर वह घरसे बाहर गया और एक मध्यवयस्का स्त्रीको अपने साथ लाकर उसके हाथमे पत्र देकर अनाथ और सिपाहीकी ओर निगाह करके कहा :

—इन्हें ले जाइए, बच्चेको बालशालाकी पोशाक पहनाइए, इसके कपडोको सिपाहीको दे दीजिए और इस पत्रको भी इन्हीके हाथमे दे दीजिए ।

श्वेत-वसना स्त्री अनाथ और सिपाहीको अपने साथ लिए एक कमरे मे गयी । यह कमरा बहुत बडा था । इसमे एक तरफ कपडा टाँगनेकी आलमारियाँ थी । स्त्रीने एक आलमारी खोली । वहाँ भिन्न-भिन्न आकारके पहननेके कपडे थे । स्त्रीने एक आकारके कपडेको निकालकर देखा, तो वह छोटा दिखलायी पडा । स्त्रीने उस कपड़ेको रखकर दूसरे कपड़ोको भी मिलाकर देखा और फिर बोली :

—इस समय इससे बडी और कोई पोशाक नही है। चाहे बड़ी हो या छोटी, इसे ही इस वक्त पहनना है। फिर आकारके अनुरूप दूसरी पोशाक मँगवायेंगे—और सिपाहीकी तरफ निगाह करके कहा—तुम थोडी देर ठहरो, मैं इन सरकारी कपड़ोको बच्चेके शरीरसे उतरवा-कर तुम्हें देती हूँ—और वह कपडे तथा अनाथको लेकर एक कोठरीमे चली गयी।

सिपाहीको बहुत देर प्रतीक्षा नही करनी पडी। स्त्रीने अनाथके पहने कपडेको पुराने समाचारपत्र मे लपेटकर सिपाहीके हाथमें देते हुए उस पत्रको भी दे दिया।

स्त्री फिर उसी कमरेमे आयी, जहाँ अनाथ था और उसे साथ लेकर बाहर निकल आयी। सिपाही चला गया था, लेकिन यदि वह होता, तो विश्वास न करता कि यह वही बच्चा है, जिसे वह साथ लाया था। गरम पानी और साबुनसे उसे नहलाया गया था। बालोमे कघीकी गयी थी। हाथ-पैरके नाखून काट दिए गए थे। अनाथ कमीज सफेद, पतलून सफेद, टोपी सफेद, बूट सफेद और मोजा भी सफेद पहने था। स्त्रीने अनाथसे कहा

—जा बडे दर्पणके सामने देख, तू अपनेको पहचानता है ?

—मैंने इससे पहले अपनेको शीशेमे नही देखा, फिर आज कैसे पहचानूँगा कि मैं दूसरा हो गया !—अनाथने दर्पणके सामने खडे होकर अपनेको देखते हुए कहा—यदि मैंने पहले अपनेको देखा होता तो इस पोशाकमे अवश्य अपनेको नही पहिचानता।

× × ×

जिस समय अनाथ दर्पणके सामने खडा था, उसी समय खुली खिडकीके बाहर आकर एक लड़का खडा हुआ। वह बड़े ध्यानसे अनाथके प्रतिबिम्बकी ओर देख रहा था। वह लड़का अनाथसे अधिक

लम्बा और मजबूत था। उसकी शकल-सूरत अनाथ-जैसी ही थी, अर्थात् उसकी आँखें अनाथकी आँखों-जैसी काली, चेहरा उसी तरह आरक्त श्वेत, बाल उसी की तरह और हाथ भी वैसे ही स्वच्छ थे।

लड़का कुछ देर अनाथके प्रतिबिम्बको देखकर दरवाजे के सामने गया और उसने "मौसी! भीतर आ सकता हूँ?" कहते हुए भीतर आनेकी आज्ञा माँगी।

महिलाने लड़केकी तरफ देखते हुए कहा—आ सकते हो।

लड़का कमरेके भीतर आया। अनाथ पैरकी आहट सुनकर दर्पण-से मुँह फेरकर उसकी तरफ देखने लगा। आगंतुक लड़केने थोड़ी देर अनाथकी ओर देखकर खड़े होकर पूछा:

—क्षमा करना, साथी? तू कहीं चचा मुरादका पुत्र अनाथ तो नहीं है!

अनाथ एकाएक अपने और अपने बापके नामसे परिचित व्यक्ति-के मुँहसे प्रश्न सुनकर आश्चर्यमें आ गया—इतने आश्चर्यमें आ गया कि जवाब देना ही भूल गया और प्रश्नकर्ताकी ओर विस्मित दृष्टिसे कुछ देर देखता रहा। फिर "एय् तू मेरा कुर्बान भाई! क्यों, तू मेरा अकाजान (बड़ा भैया) क्यों" कहते हुए उसकी ओर दौड़ा। दोनों नव-तरुण एक दूसरेसे आलिंगन-चुम्बन करने और मिलनेके बाद कुशल-मङ्गल पूछने लगे। सबसे पहले कुर्बानने कहा:

—पहले बता, कहाँ रहा, तेरी माँ तो स्वस्थ-प्रसन्न है? यहाँ क्या काम कर रहा है?

—मुझपर क्या बीती, इसे मत पूछ। उसे बताने के लिए रातों की जरूरत है, या दिनोंकी, सूर्यास्त होनेतक। जिस वक्त मैंने माँको छोड़ा, वह ठीक थी, जिन्दा थी, लेकिन जिन्दा होते हुए भी कब्रके अन्दर थी। मैं इसी बालशालामें आकर ठहरा हूँ—अनाथने जवाब देकर फिर पूछा—अपनी बतला, तेरा क्या हाल है? माँ-बाप सलामत

तो हैं ? विशलव (गाँव) का क्या हाल है ? तू यहाँ क्या काम करता फिर रहा है ?

—मेरे शिरपर बडी बडी बलायें आयी हैं। बासमचियोने माँ बाप-को मार डाला, गाँवको भी जला डाला। उन घटनाओंके बारे मे क्या कहूँ ?

अवश्य रात चाहूँ तुझसे दिल की कहूँ।
मैं रोऊँ और तू हँसे अकेला तू और अकेला मैं होऊँ।

फिर कुर्बानने आगे कहा—मैं इसी बालशालामे परवरिश पाकर, लिख पढकर कम्सामोल (तरुणसभाई) बना हूँ। यह बालशाला सीमान्तपाल कम्सोमालोंके अधीन है। मैं यहाँ उसीकी ओरसे कुछ कामो की जाँचके लिए आया हूँ—फिर कुर्बानने अपने हाथको अनाथकी ओर बढाते और उसके हाथको मजबूतीसे पकडे हुए कहा—खैर अभी तू सलामतसे रह, यहाँ खातिरजमा होकर रह। मैं अभी कम्सोमोल-सस्थाके कामसे जा रहा हूँ। फिर खूब देरतक बैठकर आपबीती और अपने दिलके दर्दकी बातें कहे-सुनेंगे।

कुर्बान चला गया। अनाथ सोचने लगा—यह कैसा स्थान है ? कम्सोमोल लोग कैसे होते हैं, कि कुर्बान उनमे शामिल हुआ है, और इस स्वतन्त्र और बडी बालशालाकी देखभाल वह कैसे करते हैं ?

२

कुर्बानके पिता रूजीमुरादका क्या हुआ ? रूजीमुराद बुखाराकी ओर मजदूरी करता था। जब भी पाँच छ तका बचा पाता, गाँवमे आकर अपने बीवी-बच्चाको देकर उनके खान पीनेका इन्तजाम करता और फिर कामपर चला जाता।

वह इसी तरह एक बार बुखारासे अपने गाँव आ रहा था कि उसे पानीसे बहके आयी मुरादकी लाश देखनेको मिली। उसने लाशको पहचान

लिया और यह भी जान लिया कि मुराद नदीमे गिरकर नही मरा, बल्कि गोली मारकर उसे पानीमे डाल दिया गया, क्योंकि वहाँ बगल-से गोलीके निकल जानेका छेद मौजूद था। इस खबरको वह अपने गाँवमे ले गया और बहुत पूछताछके बाद उसे निश्चय हो गया कि मुरादको एशानकुल बायकी आज्ञासे शाकुलने मारकर नदीमे फेंक दिया, लेकिन उस समय वह अपराधियोके विरुद्ध कुछ नही कर सका, क्योंकि अरमीकी सरकार और उसके अमलदार बायोकी हिमायत करते थे और गरीबोंके उनके विरुद्ध कुछ भी कहनेपर जमीन-आसमान एक कर देते थे, लेकिन जब अमीर भाग गया और बाय भी भागनेके लिए तैयार हुए उस समय उसने गाँवके गरीबोमे उनके विरुद्ध भाषण दिया और अपराधियोका नाम साफ खोलकर कह दिया।

जब बुखारा और तिर्मिजके बीच रेलकी सड़क बन रही थी, उस समय रूजीमुराद सड़क बनानेवाले मजदूरोमे काम करता था। जब रेल तैयार हो गयी और ट्रेन चलने लगी तो तिर्मिजके डिपोमे वह शारीरिक श्रमका काम करता था। कुछ समय इसी तरह काम करता रहा, फिर डिपोके मिस्त्री-लोहारका अन्तेवासी बना और अतमे स्वय मिस्त्री बन गया।

फरवरी और अक्तूबर (१९१७) की क्रान्तियोमे रूजीमुराद तिर्मिज के रेलवे मजदूरो और उनके साथियोके साथ हो गया। वहाँ उसे राज नीतिक शिक्षा मिली वर्ग चेतना जगी और वह आगे बढा। इसी समय उसने एशानकुल बाय और शाकुल द्वारा मुरादकी हत्याको वर्ग स्वार्थके कारण समझा और हत्याके असली अभिप्रायको गरीबोको समझाते हुए कहा कि क्यो हम बायोके आधीन है, उनके हुकुमको बजाते हैं और बाय जो कुछ माँगते हैं यहाँ तक कि स्त्रीतक से भी इन्कार नही कर सकते। यदि बायोकी बात नही स्वीकार करते, तो हम दुनियामे जी नही सकते और हमारी दुर्दशा वही होती है, जो मुरादकी।

जिस समय रूजीमुराद तिर्मिजके डिपोमे काम कर रहा था, उसी

समय बुखारामे कोलिसोफ-काड हुआ। इस घटनामे जदीदो (नवीनतावादियो) ने दुसाहस, विश्वासघात और झूठसे काम लिया। एक तरफ हम 'क्रान्तिकारी है" कहते हुए जनान्दोलनका नेतृत्व अपने हाथ मे ले लिया, और दूसरी ओर अमीरसे समझौता और मेल-जोलकी बात चलाकर जनक्रान्तिके रास्तेको रोक दिया। अमीरने इस सुलह-समझौतेकी बातसे लाभ उठाकर अपनी ताकत बढाई, अपने विरोधी मेहनतकशोंका नाश किया और उन मेहनतकशोंको घर-घरसे एक एककर पकड़ लिया जो अभी सगठित नहीं हो पाए थे, क्योंकि वह अमीर और शोषकोंके प्रति शत्रुताका भाव रखते थे। जब बुखाराकी जनताकी सहायताकेलिए महान् रूसी जाति और उसकी लालसेना आनेको हुई, तो अमीरने क्रान्तिका विरोध करते हुए अपने राज्यके भीतरकी सभी रेलवे लाइनोको बर्बाद करा दिया और बड़ी बर्बरतासे रेलवे मजदूरो और उनके बीबी बच्चोको मरवाया। इसी समय बुखारा तिर्मिजके रेलवे मजूरो और उनके बीबी बच्चोके खूनसे अमीरके आदमियोंने हाथ रंगे।

इस खूनी काडसे जीवित बचे रेलवे मजदूरोमे रजीमुराद भी था। उसने रूसी मजदूरो और बोलशेविक पार्टीसे सम्बन्ध जोड़कर बुखाराके इलाके मे मेहनतकश जनताको अमीरके विरुद्ध भडकाया और आदोलनका काम किया। बुखारा क्रातिमे उसने हथियार लेकर भाग लिया। पूर्वी-बुखारा (आधुनिक ताजिकिस्तान) मे लाल-गोरिल्लोंमें होकर लालसेनाके साथ अमीर और उसके आदमियोंके विरुद्ध लड़ता रहा। जब अमीर भाग गया, तो बायो और मुल्लोंके षड्यत्रसे लोगोको सजग करते हुए गाँव-गाँव घूमता रहा। इस कामके खतम हो जानेपर वह अपने गाँवमें गया, गाँव अफगानिस्तानकी सीमाके पास था और उसने वहाँ भी मेहनतकशोंमें बायोंके प्रभावको हटानेका काम किया।

रजीमुरादने मेहनतकशोंको सिर्फ बायोंके प्रभावसे मुक्त करनेका ही काम नहीं किया, बल्कि वह गाँवसे भाग गए बायोंकी धरती-पानी और घेरोंके सामानको गरीबोंमें बाँटकर गाँवको आबाद करनेके लिए भी

काम करने लगा, लेकिन वह इस कामको अधिक समय तक नहीं कर सका। जल्दी ही अमीर उसके अमलदार बाय और जदीदोंने बास मचीगरी (जहादी डकैती) का संगठन किया और व [illegible] विरुद्ध, गरीबोंके विरुद्ध सारे मेहनतकशोंके विरुद्ध हाथ [illegible] बनकर गाँवको आबाद करने के लिए कोशिश करनेवाला [illegible] बहाने लगे। एशानकुल बाय और शाकुल भी अफगानिस्तानसे [illegible] वहाँसे हथियार जमाकर बासमचियोंको देते। उन्होंने [illegible] बासमचियोंको अपने गाँवपर— जहाँ कि रजीमुराद [illegible] गरीब काम कर रहे थे—भेजा लेकिन रजीमुराद [illegible] चाप बैठा नहीं रहा। उसने रायन् (तहमीन) [illegible] (रेवोल्युशनरी कमेटी—क्रान्तिसमिति) [illegible] गाँवके गरीब किसानों और मजूरोंका एक [illegible]।

सुस्तानेकी छुट्टी दे दी और स्वयं भी अपने घरमें आकर आगके सामने बैठकर पैरोंको गर्माने और कपड़ोंको सुखाने लगा। इसके बाद वह लेट गया।

दूरसे बन्दूककी आवाज आयी, जिसने हज्जीमुरादको जगा दिया। कपड़ेको उतारा नहीं था, इसलिए वह जागनेके साथही बन्दूकको हाथमें लेकर घरसे बाहर निकलकर बिजलीकी तरह दौड़ पड़ा।

चौरस्तेपर पहुँचा। गाँवके बाहर नियुक्त पहरेदारोंमेंसे एक घोड़ा दौड़ाता हज्जीमुरादके पास आकर बोला—हम अपने नियत स्थानमें पहरेदारी कर रहे थे। इसी समय बागियोंने एकाएक आक्रमण कर बन्दूक चलाना शुरू कर दिया। मेरा साथी पहली ही गोलीसे गिर पड़ा और मैं खबर देनेके लिए यहाँ दौड़ आया।

इस समय तक गाँवके चारों ओरसे बन्दूककी आवाजें सुनायी देने लगीं। स्वयंरक्षाके लिए एक-एक घरमें आवाज देनेकी जरूरत न पड़ी। सभी बन्दूककी पहली आवाज सुनते ही जाग उठे और पहरेदार अपनी बातको हज्जीमुरादसे पूरी तरह कह भी नहीं पाया कि सब वहाँ जमा होकर हज्जीमुरादकी आज्ञाकी प्रतीक्षामें खड़े हो गए। हज्जीमुरादने उन्हें कुछ टुकड़ियोंमें बाँट, हर एक टुकड़ीपर बहादुर जवानको नेता बना, गाँवके एक एक तरफ भेजा और स्वयं भी एक टुकड़ी लेकर उस तरफ गया, जिधर बागियोंने पहरेदारको मारा था।

हज्जीमुराद अभी गाँवसे बाहर नहीं निकला था कि बागियों दिखायी पड़े। वह गाँवकी छतपर किनारेवाले घरोंपर आक्रमण कर रहे थे और 'अल्ले दिन मामाशा सावर दे' कहकर चिल्लाते, बन्दूकें कुन्दे या तलवारोंसे पीटते मार रहे थे। हज्जीमुराद शेरकी तरह गरजते हुए उनपर आक्रमण किया और कुछ मिनटोंके अन्दर उन्हें भागनेके लिए मजबूर कर दिया। मैदानमें उनके दो आदमी और एक घोड़ा मरा पड़ा था, लेकिन कितने लोग घायल हुए, यह नहीं मालूम हो सका। हज्जीमुरादकी टुकड़ी। फिर गाँवको हमला वापस हुआ।

रूजीमुरादने अपने सवारोको गाँवकी दूसरी ओर खबर लेनेके लिए भेजा और स्वय अपने पियादा साथियोके साथ भागते हुए बासमचियोका पीछा किया। बासमची घोडेपर सवार थे। पियादा भला उन्हे कैसे पा सकते थे, और देरमे वे आँखोसे ओझल हो गए।

रूजीमुरादने एक ऊँची सी जगहके ऊपर जाकर मोर्चा जमाया और खुद गाँवकी चारो ओरकी खबर आनेकी प्रतीक्षामे ठहरा रहा।

अब हिम वर्ष बद हो गयी थी, आकाश खुल गया था, अभ्र चले गए थे, सितारे मैसकी बत्तियोकी तरह चमक रहे थे, लेकिन सर्दी बहुत अधिक न होनेपर भी काफी थी। विशेषकर ठडी हवाका झोका बर्फके टुकडोकी तरह मुँहपर लगकर फडफडाहट पैदा कर रहा था। तो भी सर्दी इतनी नही थी कि कीचड जमकर बर्फ बन जाती। हाँ, पतले कपडेवालो का शरीर अवश्य काँप रहा था।

बहुत समय नही बीता कि गाँवकी चारो ओरकी खबर लानेके लिए भेजे गए स्वयरक्षक आने लगे और उनके कथनानुसार सब जगह शाति थी। बासमचियोका कही पता नही था। उन्होने और किसी जगह के आदमी पर आक्रमण नही किया। खबर देनेवालोने यह भी कहा.

—जान कि पडता है बासमचियोने हमे धोखा देनेके लिए हमारी शक्तिको बिखेर देनेके लिए गाँवके चारो ओरसे हमला किया, नही तो उनका सारा बल इसी ओर लगा रहता।

सवार दूर-दूरतक गए, लेकिन उन्होने एक भी बासमचीको नही देखा।

रूजीमुरादने इस खबरको सुनकर कुछ सन्तोष प्राप्त किया, लेकिन तो भी वह निश्चिन्त नही हुआ, बल्कि उसने अवसरसे फायदा उठाकर आगेके आक्रमणका अच्छी तरह मुकाबिला करनेके लिए तैयारी शुरू कर दी। उसने गाँवके चारो ओरके रक्षियोके पास आज्ञा भेजी कि महत्वपूर्ण स्थानोपर डीठा रखकर स्वय गाँवके केन्द्रमे जमा हो जायें। रूजीमुरादने

अपने स्थानपर देखभाल रखनेके लिए भी आदमीको रख अपने आदमियो के साथ गाँवकी ओर लौट गया।

× × ×

रूजीमुरादने गाँवकी मस्जिदके सामने बूढे-जवान, हथियारबन्द एव निहत्थे—सभी गाँववासियोको जमा किया। फिर उनके सामने बोलते हुए कहा :

—दुश्मन अभी जिन्दा है, सख्या और शक्तिमे भी बडा है। उसके एक बार हारकर भागनेसे निश्चिन्त होना धोखा और बचपना है, इसलिए जो भी हथियार उठा सकते हैं, उन्हे सैनिक शिक्षा लेनी चाहिए।

—सबके लिए हथियार कहाँ हैं कि सैनिक शिक्षाका अभ्यास करें ?—बीचमे टोककर एक आदमीने कहा।

—ठहर जा, मैं स्वय बतला रहा हूँ कि हम कैसे शिक्षा ले सकते है—रूजीमुरादने कहा—जिन साथियोके पास बन्दूक हैं और जिन्होंने बन्दूक चलना अच्छी तरह सीख लिया है, वे अपनी बन्दूकें उनके हाथमे दे दें, जिन्होने अभी बन्दूक चलाना सीखा नही है। इसके बाद वे खुद फावडा और बेलचा लेकर गाँवके चारो ओर मोर्चाबन्दीके लिए खदक खोदें। इसी बीच हम रायन्मे आदमी भेजकर हथियार माँगते है और सबको हथियारबन्द करते हैं।

रूजीमुरादके बाद एरगश बेदाँतने उसका समर्थन किया और उसके बाद एक और आदमीने भी यही कहा। अन्तमे ग्रामवासियोमे करतल-ध्वनिके साथ रूजीमुरादकी बात स्वीकार की गयी। इस निश्चयके अनुसार जिन्होने इस लडाईमे भाग लिया था, वे खदक खोदनेमे लग गए और दूसरे बन्दूक चलाना सीखने लगे।

१२ घण्टोमे काफी काम हुआ। कितनी ही खदकें खोदी गयी। उनके सामने मिट्टीका ढेर खडा हो गया।

अब बन्दूक-न-छुए लोगोंके हाथ भी बन्दूककी आवाजसे नही काँपते और वे कितने ही निशाने लगा लेते ।

रूजी इस कामसे बहुत खुश हुआ । उसने लोगोको खाना खाने और आराम करनेके लिये दो घंटेकी छुट्टी दे दी, और स्वय भी खाना खाने चला गया ।

× × ×

रूजीमुराद अभी खाना पूरी तरह खा भी नही पाया था कि एक पियादेने उसके पास आकर गुप्त खबर दी । मालूम हुआ कि इस गाँवसे २० मील दूर एक दूसरे गाँवमे बासमची छिपकर कूच करनेवाले हैं । वे उस गाँवके अकसक्कालके घरमे गुप्त सभाये करते हैं—अकसक्काल मुँहपर पर्दा डालकर अपनेको सोवियत सरकारका शुभचिंतक बतलाता था । बासमचियोने अपने आदमियोको हथियारबन्द करके सीधी कूच करनेका निश्चय किया है ?

—बासमचियोंने हथियार कहाँ से पाये—रूजीमुरादने पूछा ।

पियादाके उत्तरके अनुसार बासमचियोको सबसे अच्छे हथियार पड़ोसी देश (अफगानिस्तान) से मिले हैं, जो हथियार उनके पास भेजे गये, उनमेसे कुछ सीमान्तपालोके हाथमे भी पड़े, लेकिन, तब भी भगोड़ोके भेजे बहुत-से हथियार उन्हे मिले है । इधर उन्होने अपने आदमियोके अपने यहाँसे हथियारबन्द होनेके लिये बहुत कोशिश की । कहते हैं—"चाहे हमे किसी चीजसे हाथरोकना पड़े, लेकिन हथियार जमा करनेसे हाथ नही रोकना है ।"

पियादाने बतलाया कि उस गाँवके गरीबोने बासमचियोकी तैयारीकी खबर पाकर पासके गाँवमे खबर भेजी और इस तरह वह उसके गाँवमे पहुँची, जहाँसे आदमीने आकर रूजीमुरादको खबर दी ।

रूजीमुरादने इस खबरको सुनकर एक ओर तैयारी करनेमे शीघ्रता

कर दी और दूसरी तरफ रायन् (तहसील) की रेव्-कमके पास हथियार लानेके लिये आदमी भेजा।

दूसरे दिनके कामके बाद गाँवके चारो ओर खदक और मोर्चाबन्दी हो गयी। खदक बनानेमे पुराने गड्ढोने भी काम दिया। एक लम्बा चौडा गड्ढा था जो ऊँची जमीन और सरकडोसे चारो ओर घिरे जल पूर्ण कूलकी तरहका था और गाँवको प्राय चारो ओरसे घेरे हुए था। इस गड्ढेको थोडी मेहनत से खोदकर पानी भर दिया गया।

बदूकका अभ्यास भी इच्छानुकूल हुआ। गाँवके जितने लोग बदूक उठा सकते थे सबने बारी बारीसे बदूक चलाना और निशाना लगाना सीख लिया। गाँवके लोगोके अपनी रक्षा करनेमे यदि कोई कमी थी तो सिर्फ बदूक और गोलियोकी जिसकी रायन्से आनेकी आशा थी लेकिन रायनसे निराशाजनक खबर आयी। वहाँ भेजे हुये आदमी खाली हाथ लौट आये। उन्हे रेव् कम (क्रान्ति समिति) के अध्यक्षने बतलाया

गाँवपर बासमचियोके एकाएक आक्रमणकी खबर निर्मूल और झूठी है। इस तरहकी खबरोको स्वय बासमची फैला रहे हैं। उनके ऐसा करनेका उद्देश्य यह यह है कि गाववाले डरकर रायन्से बन्दूकें मांगे, रायन्की बन्दूकें गावोमे बिखर जाँय और रायन् बेहथियार या कम हथियारका हो जाय, जिससे व आसानीसे रायन्पर अधिकार कर सकें। अध्यक्षने और भी कहा—जब रायन् बासमचियोके हाथमे चला जायगा, तो गाँव स्वय उनके अधीन हो जायँगे। इसीलिए रायनके हथियारोको गाँवमे बिखेरना ठीक नही है। यदि किसी गाँवपर सचमुच आक्रमण होनेकी सभावना हो, तो रेव्-कम्को खबर दें। वह सिर्फ हथियारसे ही मदद नही देगी, बल्कि हथियारबन्द दलोको भी भेजनेके लिए तैयार मिलेगी।

रूजीमुराद रेव्-कम्के अध्यक्षके उत्तरको सुन सदेह मे अवश्य

पड़ा, लेकिन निराश नही हुआ। उल्टे, गाँवके गरीबोंकी शक्तिपर भरोसा करके रक्षाकी तैयारी और जोरसे करने लगा।

४

मोर्चाबंदी तैयार थी। हथियारबंद जवान खाइयोमे बैठे थे। नए-नए बंदूकची अपने हाथोंमें कुदाल-बेलचा-फरसा आदि किसानोके हथियारोको लिए सुरक्षित दल बनाकर बैठे थे। रूजीमुरादने घोड़ेपर चढ़कर खाइयों और उनमें बैठे जवानोंको घूमकर देखा और फिर ऊँची जगहपर अवस्थित केन्द्रीय मोर्चेपर जा बैठा।

वह रात शान्तिसे बीत गयी। नीरवताको भग करनेके लिए जब-तक घोड़ोंके खुरोंकी ध्वनि "और जागो, होशियार रहो" की आवाज सुनायी देती रही।

लेकिन, सूर्योदयसे दो घटे पूर्व गाँवके छोरोसे जगह-जगह एक्का-दुक्का दगती बंदूकोंकी आवाज सुनाई देने लगी। इसके बाद दूतोने आकर रूजीमुरादको खबर दी, कि गाँवसे दूर बासमचियोंकी कालिमा दिखायी पड़ रही है और वह इक्का-दुक्का बन्दूक भी चला रहे है। अब रूजी-मुरादके सामने भी दूर बासमची दिखलायी पड़े। वह धीरे-धीरे उसके मोर्चोंकी ओर आ रहे थे।

रूजीमुरादने अपने आदमियोंको बंदूकें साधकर दागनेके लिए तैयार रहने का हुक्म दिया। जब बासमची उचासके पास आकर गाँवकी ओर घूमनेको हुए तो उसने बन्दूक चलानेकी आज्ञा दे दी।

स्वयंरक्षकोंमेंसे अगली पाँतीवालोने एक बार ही बंदूकें सलामी देने की तरह दाग दीं। एक बासमची घोड़ेपरसे गिरा। उसका घोड़ा गाँवकी ओर भगा, और दूसरे घोड़ोंको मोड़कर पीछेकी ओर भगे।

उचासके किनारे बैठे स्वयंरक्षकोने रूजीमुरादकी आज्ञासे भागते हुए बासमचियोंपर गोली चलायी, लेकिन बासमची गोली की मारसे दूर

हो गए थे। इसके बाद रूजीमुरादने गोली मारना बन्द करा दिया।

सूर्योदयके बाद बासमचियोंके एक बड़े दलने भिड़के नजदीक आकर गोली चलाना शुरू कर दिया। स्वयरक्षकोंने भी जवाब देना शुरू किया, लेकिन गोलियाँ एक-दूसरेके पास नहीं पहुँचती थी।

कारतूस कम हो रहे थे और गोली चलाते रहनेसे डर था कि कहीं सारे कारतूस खत्म न हो जायें, इसलिए स्वयरक्षकोंको रूजीमुरादने बासमचियोंके नजदीक आनेतक गोली न चलानेका हुक्म दिया। साथही उसने गांवके ऊपर आक्रमण होनेकी खबर देकर हथियारबंद आदमियोंको लानेके लिए एक विश्वस्त और होशियार आदमीके तौर पर एरगश् बेदौतको भेजा।

सूर्योदयके बाद बासमचियोंने कई बार आक्रमण किया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। जब भी वह नजदीक पहुँचते, मैदानमें दो-तीन लोगोंको मारकर भागनेके लिए मजबूर हो जाते।

धीरे-धीरे रूजीमुरादके पास कारतूस बहुत कम रह गए और इसका अनुमान बासमचियोंको भी होने लगा। उन्होंने कारतूसोंको और भी जल्दी खर्च करानेके लिए लगातार एकके बाद एक चढ़ाईकी और गाँवके दूसरे भागोंपर भी आक्रमण किया, जिसमें वहाँके रक्षी भी अपने कारतूस खर्च करें। बहुत देर नहीं हुई कि वहाँसे भी कारतूस माँगनेके लिए आदमी रूजीमुरादके पास आने लगे। रूजीमुराद रायन् से कारतूस आनेकी बात कहकर विश्वास दिलाता रहा। कुछ समय बाद गाँवके उस तरफके स्वयंरक्षक, जिनके कारतूस खतम हो गए थे—एकके पीछे एक आकर—रूजीमुरादके सामने जमा हुए।

उचासपर लड़नेवाले हाथ बहुत थे, लेकिन कारतूस नहीं थे, कि इन हाथोंसे फायदा उठाया जा सके।

बासमचियोंने बे-कारतूसवाली जमातको चारों ओरसे घेर लिया और बड़े जोरसे आक्रमण करना शुरू किया। स्वयंरक्षकोंकी गोलियाँ सुस्त पड़ने लगीं। बहुतसे मोर्चोंपर स्वयंरक्षकोंने बंदूकके कुन्दों, बेलचों

और फरसोंसे दुश्मनोंको पीछे हटाया। रूजोमुरादने जल्दी कुमक आनेकी बात कहकर दांत और नाखूनसे भी लड़ते रहनेकी आज्ञा भेजी।

× × ×

आशा बेकार गयी, रायन्से कोई हथियार या हथियारबंद आदमी नहीं आया। एरगश् वेदांत सरकंडोंके बीचसे होता गड्ढेके पानीके पार हो बड़ी निराशाजनक खबर लाया। एरगश्ने बतलाया कि रेव्कम्के अध्यक्षने हथियारबंद आदमीके न करनेकी बात कहते हुए जवाब दिया।

—बासमची रायन्पर भी आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहे हैं, इसलिए हथियारबंद आदमीकी बात तो अलग, एक कारतूस भी गाँवमें भेजना असंभव है।

जिस समय एरगश् अपनी माँगको फिर दोहरा रहा था, उसी समय अध्यक्षके नौकरने आकर कहा—केन्द्रसे बुखारा-जन-पंचायती-प्रजातंत्रके वकील-मुख्तार (अध्यक्ष) का आदमी आया है, वह आपसे एकांतमें बात करना चाहता है।

अध्यक्षने एरगश् वेदांतको बाहर बैठनेके लिए कहा और वकील-मुख्तारके आदमीको लानेके लिए कहा। आदमी आया और दो-तीन मिनट बात करके दोनों हवेलीके बाहर आए। वहाँ अध्यक्षने अपने आदमियोंसे "सब सवार हो जाओ और हमारे साथ चलो, यहाँ निहत्ये दो स्थानीय पियादा पहरेके लिए रहेंगे" कहते हुए स्वयं भी घोड़ेपर सवार हो गया। एरगश्ने उसके पास जाकर पूछा—क्या करूँ? मुझे क्या जवाब देते हो?

—तू यही ठहर, मैं एक घंटा बाद आ रहा हूँ, फिर तेरे कामके बारेमें बात करूँगा—कहकर घोड़ा हाकते हुए वह रेव्-कम्-खानेसे बाहर चला गया। उसके पीछे उसके आदमी भी घोड़ों पर सवार होकर रवाना हो गये। अध्यक्षके चले जानेके आध घंटे बाद पियादा, सवार, निहत्ये

और हथियारबंद वासमचियोंने एक भारी दलने आकर रेव्-रम्-खाने को घेर लिया। वासमचियोंका कूरबाशी (सरदार) चबूतरेपर आया, और कालीन तथा गद्दा बिछवाकर उसपर अमीरके हाकिमोंकी तरह पालथी मारकर बैठ गया। उसके अनुचर चबूतरेके नीचेकी ओर उसी तरह हाथोंको छातीपर रख कर खड़े हुए, जिस तरह अमीरके हाकिमोंके नौकर रहा करते थे।

—सभी चीजोंको जमा करो—कहकर कूरबाशीने अपने आदमियों को हुक्म दिया।

वासमची मानो अपनी छिपाई चीजोंको ही ला रहे थे। उन्होंने जाकर घास फूस और लकड़ीको हटाकर उसके नीचेसे सदूकों, पेटारियों, बँधे गट्ठरों और दूसरी चीजोंको एक-एक करके लाकर कूरबाशीके सामने रखा।

कूरबाशीने अपने खीसेसे कुंजियों का गुच्छा निकालकर अपने आदमीको दे गोदामके दरवाजेको खोलनेके लिए कहा—हर चाभीको तालेमें लगाना जिसमें ताले खराब न हों।

कूरबाशीने अपने सामनेके आदमीको सदूकों और दूसरे गट्ठरों-को खोलनेके लिए कहा। उनके भीतर से जो बंदूकें, तमंचे, कारतूस और तलवारें निकलीं, उन्हें देखते हुए उसने हाथके कागजपर नजर दौड़ायी।

एरगश बेदाँत चकित होकर देख रहा था। इसी समय कूरबाशीकी नजर उसपर पड़ी और उसने उससे पूछा—तू कौन है? यहाँ क्या काम करता है।

एरगश्ने जवाब गढ़कर कहा—मैं रेव्-कम्के अध्यक्षका आदमी हूँ। वह मुझसे "बेगके आनेतक तू यहीं रखवाली करता रह" कहकर गये हैं।

बहुत अच्छा-कूरबाशीने कहा—बेग आ गए। अब यहाँ रेव् कम्के अध्यक्षके आदमीकी पहरेदारीकी बिलकुल आवश्यकता नहीं है।

अपने हाथकी बंदूक और कारतूसोंको इधर ला और खुद अपने स्वामीके पीछे सही सलामत चला जा।

एरगश्‌ने बंदूक और कारतूसको सौंपकर घोडेके पास जाकर उसे खोलना चाहा। इसपर कुरबाशीने कहा—घोडा हमें चाहिए तू पियादा, अपने अध्यक्षके पास चला जा।

× × ×

एरगश् बेदींतने रेव्-कम् खानेसे निकलकर रास्ता लिया। वह जल्दी से जल्दी गाँव जाकर इस भयानक खबरको रूजीमुरादको देना चाहता था, लेकिन बिना घोडा वह अपनी इच्छाको कार्यरूपमें परिणित नहीं कर सकता था। तो भी सारी ताकत लगाकर वह दौडने लगा और यदि शीघ्रगामी अश्वकी तरह नहीं तो राह चलते साधारण घोडेकी गतिसे तो वह अवश्य ही चला। अभी वह आधा रास्ता भी नहीं तै कर पाया था कि थक गया और एक चश्मेके किनारे बैठकर पानी पीकर आराम करने लगा। चश्मा बह रहा था और उसके नीचेकी ओर हरियाली थी। एरगश् वहाँ बैठे-बैठे अपने पैरोंको मल रहा था कि इसी समय न जाने कहाँ से एक स्त्री आ गयी। स्त्री जवान थी। उसकी आँखें-भौंहे काली, केश लम्बे और मुँह बहुत सुन्दर था। उसके हाथमे एक कूजा (सुराही) था, जिससे मालूम पडता था कि वह पानी लेने आयी है।

स्त्री चश्मेके नजदीक पहुँची तो उसकी नजर एरगश्‌पर पड़ी। वह जरा ठमक गयी और शिरपर बँधे रूमालको मुँहके ऊपर खीचकर उसके एक कोनेसे झाँककर एरगश्‌की ओर जल्दी-जल्दी देखने लगी। एरगश स्त्रीकी लज्जाको देख, अपनी आँख को उधरसे हटा, अनजान बनकर अपने पैर मलने लगा। स्त्री उसकी शिष्टताको देख हिम्मत करके चश्मेके पास आयी और कूजेको जमीनपर रखकर उसने एरगश्से

पूछा—चचा ! इधर आसपास किसी बासमचीको तो नहीं देखा ?

यहाँ नजदीक तो नही देखा लेकिन रायनूको उन्होंने ले लिया। —खुदा जल्दी इनको तबाह करे और इनके घरोंको जलाए । ये लोगोंके घरोंको जलाते हैं—कहकर स्त्रीने चश्मेपर जाकर कूजा भरा और फिर अँजुलीसे पानी पिया ।

—तुम्हारे गाँवमें बासमचियोंने क्या किया ?—एरगशने पूछा ।

स्त्रीने भरे कूजेको चश्मेसे बाहर करके किनारेपर रखा और स्वयं खड़ी होकर जवाब दिया—हमारे चल धन और चारपायोंको लूटा स्त्रियों लड़कियोंको बरबाद किया, विरोध करनेवाले दो आदमियोंको मार डाला और तीन आदमियोंको बन्दी बनाकर कूरबाशाके पास ले गए । गाँवके दूसरे मर्द पहाड़की ओर भाग गए हैं ।

स्त्रीने बात रोककर कूजेको उठा अपने कंधेपर रखा और एक हाथसे कूजेके हत्थे को पकड़कर फिर कहना शुरू किया—एक रात दिन हो गया । बच्चोंने पानी नही पिया उनके मुँहको सूखा देखकर हजार तरहका भय खाती पानी लेने आयी हूँ ।

—लेकिन बहन ? क्या घरमे कोई मर्द नही है कि ऐसे भयानक दिन पानी लेने आयी हो तुम—एरगशने पूछा ।

—मर्द है लेकिन वह मुझे और बच्चोंको एक गुफामे छिपाकर स्वयं पहाड़की चोटीपर भाग गया है । हमारे पास एक भेडी और एक बकरी थी । उन्हे भी भगोडे बासमचियो के हाथसे बचानेके लिए अपने साथ ले गया—कहते हुए स्त्री चश्मेके किनारेसे घाटकी ओर होकर बड़े रास्तेपर चल पड़ी ।

इसी समय दूर एक सवार दिखायी पडा । वह एक प्रौढवयस्क आदमी था । उसका पेट मोटा कमरमे तलवार और पीठपर बंदूक थी । उसने अपने माथे पर लत्ता बाँध रखा था जोकि बासमचीपनका चिह्न था ।

स्त्रीने सवारको देखकर कदम तेज किया, लेकिन सवारने दो-तीन चाबुक जमाकर घोड़े को दौड़ाते हुए उसके पास पहुँचकर कहा—'ठहर !'

स्त्री पानी भरे कूँजेको फेंककर झाडियोंकी ओर भगी । बासमची भी घोडेसे उतरकर उसे एक वृक्षकी डालसे बाँधकर स्त्रीके पीछे दौड़ा ।

स्त्री जंगलके भीतर हवाकी तरह भागी जा रही थी । सवारके हाथ मुँह छिल गए, पैर थक गए, वस्त्र फट गए तो भी वह दौड़ता ही गया, लेकिन वृक्षों और झाडियोंके बोचसे वह बहुत दूर जा नहीं सका ।

बासमचीने देखा कि स्त्रीके पास नहीं पहुँच सकता और वह बंदूककी मारसे दूर निकली जा रही है । उसने बन्दूकका निशाना लेकर हुकुम दिया—'ठहर !" बासमचीकी आवाज सुनकर स्त्री और जोरसे भगी । बासमचीने बन्दूक दाग दी । स्त्रीने बन्दूककी आवाज सुनकर समझा कि गोली उसे लग गयी और वह चिल्लाकर मुह के बल गिर पड़ी । बासमची शिकारके हाथ आनेकी आशासे इतमीनानके साथ कदम रखने लगा ।

एरगश्ने चश्मेसे उठकर राह चलते हुए इस दृश्यको देखा । उसे बहुत क्रोध आया, लेकिन उसके पास हथियार नहीं था कि बासमचीपर आक्रमण कर स्त्रीको छुडाता । उसके देखते-देखते बेचारी स्त्री बासमचीके पजेमे पडने जा रही थी, जैसे कि मुर्गा सियारके पजेमे पड़े, लेकिन सिवाय गुस्सेसे दाँतोंसे ओठ चबानेके वह और कुछ कर नहीं सकता था । इसी समय एरगश्के दिलमे एक विचार आकाशवाणीकी तरह आया । उसकी आँखें चमक उठी और वह "कितना अच्छा हो कि एक जादूसे दो काम बने" कहते हुए घोडेकी तरफ लपका और उसे डाली से खोल, उसपर सवार होकर, उसे कोड़ा लगाकर चिल्लाया—ओ दोपाए भेंडिये, खबरदार ! तेरा घोड़ा हाथसे जा रहा है ।

बासमचीने एरगश्की आवाजके साथ घोडेकी टापोकी पटपटाहट सुनी । उसने घूमकर देखा कि सचमुच ही उसका घोडा जा रहा है । वह

स्त्रीको वही छोडकर रास्तेकी ओर दौडा, लेकिन जबतक फाटों और झाडियोंके बीचसे वह अपने मोटे शरीरको निकाले-निकाले तबतक एरगश् बहुत दूर चला गया था। बासमची चिल्लाया "ठहर, नही तो गोली मारता हूँ।"

एरगश्‌ने उसके जवाबमे घोडेको दो कोडे और लगाए और वह पहले से भी ज्यादा दौडने लगा। बासमचीने एकके बाद एक गोलियाँ छोडी, जिसने घोडेके वेगको और बढानेमे सहायता की।

एरगश्‌ने बदूककी मारसे दूर निकल जानेपर ,एक टकरीपर पहुँच घोडेको रोककर पीछेकी ओर देखा। बासमची अब भी बदूक चला रहा था और स्त्री झाडियोसे निकलकर पहाडकी ओर भागी जा रही थी।

एरगश्‌ने गाँवको चारो ओरसे बासमचियोसे घिरा देखा। सिर्फ सरकडेवाले कूलकी ओर रास्ता खुला था। उसने घोडेको वही छोडकर सरकडोके भीतर और कूलके पानीके बीच गाँवका रास्ता लिया और रूजीमुरादके पास पहुँच गया।

५

एरगश् रायन् पहुँचने और रेव्-कम्के अध्यक्षके साथ बातचीत करने के अलावा दूसरी बातें रूजीमुरादसे कर ही रहा था कि इसी समय कूलकी ओरसे एक दूसरा पियादा दौडता हुआ रूजीमुरादके पास आया। यह पियादा और भी बुरी खबर लेकर आया था। उसने बतलाया कि बुखारा-जनपचायती प्रजातत्रके वकील-मुख्तारने सोवियत-सरकारके साथ विश्वास घात किया है और वह सोवियत-सरकारके सभी हथियारो, तको और अशर्फियो (तिल्लो) को बासमचियो, सादिक्, अन्वरपाशा और इब्राहीम बेकके हाथमे देकर चला गया है। रूजीमुरादको यह खबर सुनकर आग लग गयी और उसने कहा—वकील-मुख्तार कौन है ?

थोडी देर ठहरकर फिर उसने अपने ही प्रश्नका जवाब दिया

—वकील मुख्तार तगाय-बच्चा बुखाराका करोडपति है। वह बुखाराके जदीदोका सरदार था और धोखाधडीसे उसने बुखारा जन-सरकारका अधिकार अपने हाथमे ले लिया। मालूम होता है, यह देशघाती पूर्वी बुखाराको हाथमे लेकर वहाँ बासमचियोको सगठित और शक्ति-संपन्न करनेके लिए वकील मुख्तार बनकर आया था।

रूजीमुराद थोडी देर चुप रहकर रेव्-कमके अध्यक्षके बारेमे कहने लगा—हमारे रायन्के रेव् कम (क्रान्ति समिति) का अध्यक्ष भी बुखाराका एक बाय बच्चा तथा इन्ही देशद्रोहियोका आज्ञाकारी अनुचर सग-बच्चा (कुत्तेका पुत्र) है।

विशेषकर इन विश्वासघातियोके बारेमे सोचते-सोचते रूजीमुरादका गुस्सा और बढा। उसने मुट्ठी बाँधकर हाथको दोनो तरफ हिलाते हुए अपने-आपसे कहना शुरू किया

—इन विश्वासघातियोसे इसके सिवा और किसी चीजकी आशा नही हो सकती थी। यदि भेडिया भेडका मित्र बन सकता है, सियार मुर्गका मित्र बन सकता है, और बिल्ली कबूतरकी मित्र बन सकती है, तो ये भी सोवियत सरकारके दोस्त बन सकते है। अफसोस कि जिन्दगीमे ऐसा होता नही।

रूजीमुरादने अपने-आपसे बात करना छोडकर ऊँची आवाजमे लोगो-से कहा —

—साथियो! हमारा कर्तव्य यह है कि इन विश्वासघातियोसे सहायताकी बिलकुल आशा न रखकर महान् लेनिन और स्तालिनकी पार्टी बोलशेविक पार्टी सोवियत सरकार और महान् रूसी जनताके कमकरो-पर भरोसा करें, जनताके दुश्मनो यानी इन बासमचियो और उनके सहायकोंसे लडें और अपने खूनकी आखिरी बूँदतक लडें। यदि हथियार न हो तो मुँह और नाखूनसे लडें। यदि हम इस रास्तेमें अपनी जान दे दें, तो हमारे बच्चे, हमारा वर्ग महान् रूसी जनताके कमकरोंकी सहा-यतासे अपने मनोरथमे अवश्य सफल होगा। साथियो! जब तक जान

है, लड़ते चलो, बढ़ते चलो।

—लड़ेंगे, खूनकी आखिरी बूँदतक लड़ेंगे, हथियार न होनेपर दाँत और नाखूनसे लड़ेंगे—लोगोंने एक आवाजसे कहा।

रूजीमुराद जन-साधारण बल पाकर पहलेसे भी अधिक बहादुरी और मजबूतीके साथ लड़ाईके काममें दत्तचित्त हुआ।

कारतूसोंकी बहुत कमीके कारण स्वयंरक्षक-दलकी हालत बहुत खराब थी। बासमचियोंने मोर्चेको चारों ओरसे घेर रखा था। वे खाइयोंकी तरफ गोलियोंकी वर्षा कर रहे थे, लेकिन स्वयं-रक्षक उनकी सौ गोलीपर एक गोली चलाते और वह भी उस समय जबकि बासमची खाईके पास पहुँच जाते।

हथियार या हथियारबंद आदमियोंके आनेसे निराश होकर स्वयं-रक्षकोंकी हालत और भी बुरी थी। अंतमें सारे ही कारतूस खतम हो गए और रूजीमुरादके कथनानुसार दाँतों और नाखूनोंसे लड़नेकी नौबत आयी। बासमचियोंमें जो नजदीक आते, उन्हें वे बंदूकके कुन्दोंसे मारते और जो कोई उनके हाथमें आता उसे पंजोंसे पकड़कर दाँतोंसेचीरते या कुदाल-कुल्हाड़ीका इस्तेमाल करते। धीरे-धीरे रूजीमुरादके साथियोंकी संख्या भी कम हो गयी। मुट्ठीभर आदमी रह जानेपर वह और भी बहादुरीसे लड़ते रहे। अन्तमें खंदकमें रूजीमुरादके साथ एरगश् बेदाँत रह गया, लेकिन दोनों शेरकी तरह लड़ते एक-दूसरेकी सहायता करते, जो भी बासमची सामने आता उसे जीता न छोड़ते।

इसी समय बासमचियोंके सरदारने अपने यिगितों (बहादुरों) को ललकारकर कहा—बाकी बचे आदमियोंको जिन्दा पकड़ लाओ। कूबकारी (बकरी-नोच घोड़दौड़) करेंगे।

बासमची हुकुमको सुनते ही रूजीमुराद और एरगशपर चारों ओरसे तीरकी तरह टूट पड़े, लेकिन रूजीमुराद "बोलशेविक जिन्दा, दुश्मनके हाथमें नहीं पड़ता" कहते एरगश्के साथ पीठ-से-पीठ मिलाए

आनेवाले बासमचीकी खोपडी से खोपडी लडाता और शेरकी भाँति मुर्दे-को अपनेसे दूर फेंक देता । बासमचियोंने देखा कि उन्हे जिन्दा नही पकडा जा सकता, इसलिए उन्होंने चारो ओरसे गोली चलायी । पहिली गोली एरगश्की छातीमे लगी और वह गिर पडा।

अब रूजीमुराद अकेला था और कुछ गोलियोके लगनेसे सुस्त हो गया था, लेकिन दीवारसे पीठ लगाए वह अभी खडा था और उसके शरीरसे खून निकलकर कपडेको रँग रहा था । बासमचीकी तलवारने उसके शिरको फाड दिया । वह जमीनपर गिर पडा । जमीनपर गिरनेके बाद भी गोलियाँ चलती रही और रूजीमुरादके शरीरमे सिरसे पैरतक छेद ही छेद हो गए । खदकमे जो भी घायल सरक्षक मिला, सबको बास-मचियोने गोली मार-मारकर खतम कर दिया।

× × ×

बासमची अस्थायी रूपसे विजयी हुए और विजयमदसे उन्मत्त होकर पागल बन गए। उन्होंने गाँवमें पहरेदार रखे बिना लूट शुरू की । गाँवके जानदार या बेजान सारे माल लूट लिए। बीमार-बूढे, स्त्री बच्चे जो युद्धमे शामिल न होकर घरमे थे, उन्हे भी लाकर मैदानमे जमा किया और पहरा बैठा दिया । गाँवमे न कोई आदमी रह गया, न कोई माल । बासमचियोने घरमे आग लगा दी । सारा गाँव जलने लगा और निरपराधोकी आहके साथ आगकी ज्वाला और धुँआ आसमानतक पहुँचने लगा।

बासमची गाँवके कामसे छुट्टी पाकर बंदियोके पास जमा हुए । उन्होंने सुन्दर स्त्रियो और लडकियोको अलग करके एक तरफ रखा और बूढे-बूढ़ियो और अपने लिए बेकारकी औरतोको खडा करके गोली मार दी । बाकी कितने को ही बकरीकी तरह कूबकारी करनेके लिए अलग कर दिया ।

बासमचियोंने कूबकारी करनेके लिए एक आदमीको बीचमे रखा

और उसे खींच ले जानेके लिए घोड़-दौड़ शुरू करना चाहते थे, कि दूरसे सवारोंका झुंड आता दिखायी पड़ा। बासमचियोंने आगन्तुकोंको अपने दलका समझा और उन्हें अपनी विजयका परिचय देनेके लिए बड़े शौकसे कूदकारी शुरू की। अधमरे बदीके ऊपर सवार टूट पड़े। एकने पैर, दूसरेने हाथ, तीसरेने गर्दन और चौथेने कमर पकड़कर अपनी-अपनी तरफ खींचना शुरू किया। जो दूर थे वह भी घोड़ेको कोड़ा लगा कर सिरके पास आकर पकड़कर खींचने लगे। हर आदमी बदीके शरीरको झुण्डसे बाहर लेजाकर आनेवाले बासमचियोंके सामने भेंटके तौरपर पेश करना चाहता था। इसी समय मुर्देपर कौवोंकी तरह भिड़े बासमचियोंको मशीनगनकी तड़-तड़-तड़की आवाज सुनायी दी और भागनेसे पहले ही वे सब डाली हिलाये तूतकी तरह जमीनपर गिर पड़े।

जिन्दा बचे बासमचियोंको आनेवालोंके बासमची न होनेका पता तब लगा, जबकि उनके भागनेका कोई रास्ता न रह गया।

आगन्तुकोंने दौड़ा-दौड़ा उन्हें चारों ओरसे घेरकर उनपर मशीनगनों और बन्दूकोंसे गोली बरसानी शुरू की। अन्तमें बासमची अपने घोड़ोंको छोड़कर रूजीमुराद की बनायी खाइयोंमें जा छिपे और वहाँसे लड़ने लगे, लेकिन आगन्तुक खाइयोंके पास न जाकर दूरसे हथगोले फेंकने लगे। धूल और धुँआ बवंडरकी तरह जगह-जगह उठने लगा, जिसमें जहाँ-तहाँ बासमचियोंके हाथ और पैर आकाशमें उड़कर गिर रहे थे।

एक घंटेकी लड़ाईके बाद बहुतही कम बासमची भागकर जान बचानेमें सफल हुए। अधिकांशको उनके किए की सजा मिली।

आगन्तुक सीमान्तरक्षक कम्सोमोलोंमेंसे थे। जब उन्हें गाँवमें बासमचियोंके आक्रमणका पता लगा, तो वे तेमूरोव तेमूरोविच नामक कम्सोमोलके नेतृत्वमें एक दल बनाकर गाँवके लोगोंकी सहायताके लिए दौड़ पड़े।

कम्सोमोल-अधिकारियोंने बासमचियोंको सफा करनेके बाद बीमारों और घायलोंको सीमान्तके अस्पतालमें भेजा। बासमचियोंके हाथसे सही सलामत छूटी स्त्रियों-लड़कियोंके लिए सीमान्तपर गद्दा तकिया-सिलाई का एक अतेल (सहयोगी कारखाना) खोला और बूढ़ों-बूढ़ियोंके लिए रहने, खाने-पीनेका इन्तजाम किया, अल्पवयस्क बच्चोंकी परवरिश और शिक्षा-दीक्षाके लिये कम्सोमोलसस्थाके आधीन एक बालशाला भी खोली।

उसी दिन जो बच्चे बासमचियोंके हाथसे छुड़ाकर नव-स्थापित बालशालामें रखे गए, इनमें रूजीमुरादका पुत्र कुर्बान भी था, जिसे अनाथ "अका कुर्बान" (भाई कुर्बान) कहता था। अब इसी बालशालामें अनाथ भी भरती हुआ।

५

यह बालशाला एक अन्तर्जातीय बालाश्रम थी, जिसमें जहाँ ताजिक, उज्बेक, क़ज़ाक तुर्कमान-जैसी स्थानीय जातियोंके बच्चे थे, वहीं साथ ही रूसी, उक्रइनी, पोल और लतिश जैसी यूरोपीय जातियोंके भी बच्चे रहते थे। अधिकाश बच्चे स्थानीय जातिके थे और इनमें भी अधिकतर वे बच्चे थे, जिनके माँ-बापको बासमचियोंने मार डाला था।

स्थानीय बच्चोंमें नारबीबिश नामकी लड़कीका अनाथके साथ विशेष स्नेह था। वह आयुमें अनाथके बराबर होते हुए भी कदमें अधिक छोटी और शरीरमें अधिक दुर्बल थी। वह अपने काले कटे घुंघराले बाला, कुलथाकी भाँति गोल गेहुएँ रगके मुख और चमकीली काली आँखोंसे हर किसीकी दृष्टिको अपनी तरफ आकृष्ट करती थी। उसके मुँहपर दो-तीन तिल थे, जिनमें उसकी सुन्दरताकी कोई हानि नहीं हुई थी, बल्कि वह स्वच्छ सुवर्णके ऊपर खुदे फूलकारीके दागकी तरह और भी शोभावर्द्धक थे। लड़कीके और दूसरे खास चिह्नोंमें उसके कधेके बीच, बालोंके नीचे एक मटमैले रगकी रेखा थी। गर्दनके पीछे और बालोंके नीचे होनेसे यह

रेखा हर किसीको दिखलाई नहीं पड़ती थी। अगर यह रेखा किसीको दिखलायी पड़ती, तो लड़कीका सौन्दर्य उसकी दृष्टिमे और बढ़ जाता, क्योंकि यह सफेद गर्दनके ऊपर खींची काली रेखा रौप्य स्तभपर अंकित अजन-रेखा-सी प्रतीत होती थी।

लड़की बालशालामे बड़ोंसे छोटों, अध्यापिकाओंसे नौकरानियोंतक और वहाँ के सभी बच्चोंमे सर्वप्रिय थी। क्या खेलनेकी और क्या खाने की सभी जगह लोग उसका विशेष ध्यान रखते थे।

उसके इतना सर्वप्रिय होनेका कारण केवल उसका सौन्दर्य नहीं था, बल्कि उसकी जीवन घटना थी। उस बच्चीकी जीवन-घटना ऐसी मार्मिक थी कि हर सुननेवाला रोने लगता। उसी जीवन-घटनाके कारण वह बहुत मितभाषिणी, विनम्र और गभीर रहा करती थी। वह किसीको अपनी जीवन-घटना नहीं सुनाती, लेकिन बालशालामे उसे सभीने एक रूसी अध्यापिकाके मुँहसे सुना, और एक मुँहसे दूसरे मुँह होते-करते उसे सभी जान गए।

नारवीविशका स्नेह सब बच्चोंसे अधिक अनाथके साथ था। बाल-शालामें उसका कमरा अनाथके कमरेसे दूर था, तो भी खेलनेके वक्त वह अधिकतर अनाथके साथ खेला करती, खानेकी मेजपर अनाथकी बगलमें बैठा करती और विद्या-सबधी पर्यटनोमे उसके साथ चलती।

वह अनाथसे कुछ साल पहले बालशालामे आयी थी, इसलिए लिखना-पढ़ना अधिक जानती थी और अनाथको भी पढ़नेमे सहायता देती थी। पढ़ाई खतम होते ही अनाथ नारवीविशके पास दौड़ता और न-समझे पाठोंको उससे समझता।

नारवीविशको अनाथकी जीवनीने बहुत प्रभावित किया था। उसने उसीके मुखसे सब सुना था।

जिस समय अनाथने माँसे अलग होनेके दृश्यका वर्णन किया, नारवी-विशने एक लम्बी आह खींचकर कहा—अफसोस, मेरी माँ नहीं है, और मेरी माँ कौन थी, मैं यह भी नहीं जानती।

—बाप तो है ?—अनाथने पूछा।

—न, बाप भी नहीं है और बाप कैसा था, यह भी नहीं जानती।

उसने नारबीबिशके मुँहसे जो दो-चार बातें सुनीं, उन्होंने भुक्तभोगी अनाथके दिलको बहुत आर्द्र कर दिया। वह रोने-रोनेसा हो गया, लेकिन बालशालामें जो सुख और सौभाग्य उसे देखनेको मिल रहा था, उसके कारण उसने अपने ऊपर संयम किया और आगे चलकर इसीने उसे पुराने दुःखपूर्ण जीवनको धीरे-धीरे भुलानेमें सहायता दी।

इतना होनेपर भी अनाथ नारबीबिशकी जीवन-घटनाके जाननेके लोभका संवरण न कर सका और कितनी ही बातें उसने जान लीं। अनाथकी जीवन-घटनाके सुननेके बाद नारबीबिशने भी अपना मुँह खोला।

× × ×

बुखारा-तिर्मिज़की रेलवे लाइनपर तिर्मिज़के नजदीक एक स्टेशनपर इवान इवानोविच समर्स्की नामक एक पहरेदार रहता था। उसके परिवारमें बीवी, दो आठ और दस सालके लड़के और एक छः सालकी लड़की थी। इवानकी जिन्दगी अच्छी चल रही थी। उसने अपने कराबुलखाने (पुलिस-चौकी) के सामने एक फुलवाड़ी लगा रखी थी, जिसमें वह आलू, करम टमाटर-जैसी तरकारियाँ तथा मक्का और सूर्यमुखी-जैसी अनाज और तेलवाली फसलें बोया करता था। इसके अतिरिक्त उसके पास एक अच्छी दुधार गाय थी, जो परिवारके खानेके लिए घी-दूध जरूरतसे अधिक देती थी।

लेकिन इवानका सुखी जीवन बहुत दिनोंतक नहीं चल पाया। १९१८ में अमीरी प्रतिक्रियावादियोंने उसके परिवारको नष्ट कर दिया। १९१८ में कोलिसोफके नेतृत्वमें जब बुखाराकी जनताकी मददके लिए बोलशेविक

आए, उस समय अमीर बुखाराने अपने राज्यकी सभी रेल-सड़कोंको नष्ट कर दिया और जो भी रेलवे-कमकर हाथ आया, उसीको बाल-बच्चोंके साथ मार डाला।

इन्हीं दिनों अमीरके बर्बर आदमियोंने इवानके करावुलखानेपर आक्रमण किया, करावुलखानेको जला दिया, इवानको बंदी बनाया और उसे बीवी-बच्चोंके साथ दूसरे करावुलखानेमें,ले गए। वहाँ दूसरी जगहों से भी बहुतसे कमकर पकड़कर लाये गए थे, जिनमें रूसी, ताजिक, उज्बेक तातार कज़ाक और तुर्कमान भी थे। इन कमकरोंके साथ उनके बीवी-बच्चे भी थे।

अमीरके आदमियोंने रेलमार्ग नष्ट करने, रेलके लोहोंको दूर फेंकने और गोमटियों और चौकियोंके जलानेके बाद बंदियोंको मारना शुरू किया। उन्होंने कमकरों और उनके स्त्री-बच्चोंको एक जगह जमाकर शमशीरों, खंजरों, छुरों और भालोंसे मार डाला। वहाँ जो लोग मारे नहीं गए थे, उनमेंसे एक इवानकी स्त्री मरिया भी थी। जिस समय इन बर्बर सैनिकोंने करावुलखानेको घेरा, उस समय मरिया अपनी गायको लिए करावुलखानसे दूर चराने गयी थी। उसने एक चरवाहे लड़केसे रेल-पथके नष्ट होनेकी बात दोपहरको सुनी और अपनी गायको वहाँ चरनेके लिए छोड़कर करावुलखाने गयी, लेकिन न वहाँ करावुलखाना था, न उसका अपना घर, सभी चीजें जल चुकी थीं और अब भी धुआँ और ज्वाला निकल रही थी। मरिया इस दृश्यको देखकर पागल-सी हो गयी। वह अपने पति और बच्चोंको ढूँढने लगी, किन्तु उनका कोई पता नहीं लगा। उसने लकड़ी लेकर आगको खोदकर देखा; लेकिन उनमें से जले आदमीकी हड्डी या कोई दूसरी चीज नहीं मिली। मरिया वहाँसे दूसरे करावुलखानेकी ओर गयी, जहाँसे धुआँ और आगकी ज्वाला निकलती दिखलाई पड़ रही थी। करावुलखानेके पास जानेपर उसे बड़ा ही हृदय द्रावक दृश्य देखनेको मिला। वहाँ कमकरों और उनके बीबी-बच्चों के ढेर के-ढेर मुर्दे पड़े हुए थे। यह देखकर उसका होश उड़

गया। फिर कुछ धीरज धरकर उसने मुर्दोंको हटाकर देखना शुरू किया कि शायद पति या बच्चोंके बारेमे कुछ मालूम हो सके। दुर्भाग्य! वहाँ उसने अपने पति और बच्चोके तलवारसे कटे शव देखे।

मरिया यह दृश्य देखकर बेहोश हो गयी। होशमे आनेपर उसने अपने पति और बच्चोके मुर्दोको खीचकर अलग करके दफनानेके बारेमे कुछ करना चाहा। बच्चोके शवोमे एक लडकी का शरीर मिला, जो अभी भी जिन्दा थी। लडकी की उमर तीन सालके करीब थी। उसकी गर्दनके पीछे तलवार लगी थी और अब भी घावसे खून बह रहा था। लेकिन बच्ची जिन्दा थी, बेहोश थी, किन्तु कभी-कभी हिलती-डुलती थी। मरियाने अपने बच्चोके भीतर इस बच्चीको देखकर सोचा कि पति और बच्चोंके मुर्दोको दफनानेसे इस बच्चीके जीवनकी रक्षा अधिक आवश्यक है। वह अपने आपसे बोली

—वे मर गए, और खतम हो गए। उन्हें आज या एक दिन बाद दफनानेमे कोई अन्तर नही, लेकिन यदि जल्दी कोई उपाय न किया, तो यह बच्ची मर जाएगी।

यही विचार कर मरियाने बच्चीको मुर्देके भीतरसे उठा लिया और अपने सिरके रूमालसे उसकी गर्दन पर पट्टी बाँध दी, लेकिन यह तात्कालिक सहायता थी। बच्चीकी जान बचानेके लिए किसी डाक्टरकी आवश्यकता थी। यदि यह भी नही तो तात्कालिक मरहम पट्टी वाले स्थान मे ले जाने की जरूरत तो थी, लेकिन डाक्टर या मरहम-पट्टी करनेवाले तिर्मिज स्टेशनपर ही मिल सकते थे। उसे यह भी नही मालूम था कि तिर्मिजकी अवस्था क्या है। शायद वहाँ भी अमीरी सैनिकोने अपनी राक्षसी लीला दिखायी दी। मरियाने सोचा—'तिर्मिज-की हालत जाने बिना वहाँ जाना अपने और बच्ची, दोनोके लिए अच्छा नहीं है," लेकिन वह यह भी सोचती थी कि लडकीके घावको ठीक करनेके लिए कही न कही तो जाना ही चाहिए।-

इसी समय मरियाके दिलमे किसी आदमीका ख्याल आया और वह घायल बच्चीको उठाये गाँवकी ओर दौडी। वह गाँव रेलसे बहुत दूर नही था। उस गाँवमे उसकी एक परिचित स्त्री थी जिसका पति मरियाके पतिकी तरह रेलवे पुलिसमे काम करता था। वह पहले भी कई बार उस स्त्रीके पास जा चुकी थी। स्त्रीका पति दो साल पहले मर चुका था लेकिन मरियाका आना-जाना अभी बंद नही हुआ था।

मरिया बच्चीको उठाए दौडी-दौडी उस स्त्रीके घर गयी।

स्त्रीने स्थानीय (देशी) ढगसे बच्चीकी चिकित्सा की और नम्देको जलाकर उसकी राखको घावमे भरकर लत्तेसे बाँध दिया। उसके बाद लई पकाकर उसे थोडा थोडा बच्चीके गलेसे नीचे उतारा। एक घडी बाद बच्चीने आँखें खोली और बात करने लगी। उसने पहला शब्द आचा!" (माँ) कहा, जो कि स्थानीय (उज्बेक) भाषाका शब्द था, उससे पता लगा कि वह किसी स्थानीय कमकरकी पुत्री है।

लडकीने अपने आसपास माँको न देखकर रोना शुरू किया। मरिया और उसकी परिचिताने बच्चीको बहुत चुप करनेकी कोशिश की, लेकिन सफल न हुई। बच्चीके शरीरसे बहुत खून निकल गया था, इसलिए थोडी देर रोनेके बाद कमजोरीने उसे फिर बेहोश कर दिया। रोनेके कारण घावका मुँह फिर खुल गया था इसलिए फिर खून निकलने लगा। स्त्रीने दुबारा नम्देको जलाकर, राख भरकर पट्टी बाँधी और फिर बिस्तरेपर सुला दिया। अबकी बच्ची आरामसे सो गयी।

× × ×

बच्चीको सुलाकर स्त्री तिर्मिजकी खबर लेनेके लिए गाँवमे गयी और कुछ देर बाद लौटकर उसने बतलाया कि तिर्मिज स्टशन सही-सलामत है। आज ही अडे बेचनेके लिए वहाँ गए एक किसानसे यह पता

लगा। यह किसान तिर्मिजमे ही था, जबकि अमीरके आदमियोंने स्टेशन बर्बाद करनेके लिए आक्रमण किया, लेकिन हथियारबंद कमकरोने मुकाबिला किया और आक्रमणकारियोंको अपने कुछ आदमियोको मरवाकर भागनेके सिवा और कुछ हाथ न लगा।

मरियाको यह खबर सूर्यास्तके समय मिली। उस समय जाना उसने ठीक नही समझा। रातका समय अपने पति और बच्चोंके शोकमे जैसे-तैसे बिताकर प्रातःकाल सूर्योदयसे पहले ही वह तिर्मिजकी ओर दौडी।

मरिया जब तिर्मिज पहुँची, उस समय वहाँ के हथियारबंद कमकर मुर्दोंको दफनाने जा रहे थे। वह भी उनके साथ हो गयी और उसके पति और बच्चोकी लाशें भी दफना दी गयी।

रेलवे कमकरोंकी सहायतासे मरियाको रहने का स्थान और काम भी मिल गया और वह बच्चीको लाने गाँव गयी। अभी बच्ची खतरेसे बाहर नही थी लेकिन आरामसे सोती थी। उसे भूख भी लगती थी और वह धीरे धीरे चलती तथा खेलनेकी इच्छा प्रकट करती थी। जबतक बच्चीमें बल नही आ गया और वह खतरेसे बाहर नही हो गयी जबतक मरिया गाँवमे रही। जब घावका मुँह बन्द हो गया और लत्ता भी हटा दिया गया, तब मरिया बच्चीको तिर्मिज ले आयी। जिस वक्त मरिया विदा होने लगी, उसने अपनी परिचिता स्त्रीसे बच्चीके लिए एक स्थानीय भाषाका नाम चुनने को कहा

—मेरी भी एक बच्ची थी। उसके मुँहपर एक लाल दाग था। इसलिए मैंने उसका नाम नारबीबिश रख दिया था। वह बच्ची बापके सामने ही मर गयी। अब मैं उसीकी स्मृतिमे इस बच्चीका नाम नार-बीबिश रखना चाहती हूँ।

मरियाने उस नाम को पसन्द किया।

+ + +

जबतक बुखारा तिर्मिजकी रेलवे लाइन तैयार न हो गयी, तबतक

मरिया तिर्मिजमे रहकर बच्चीका पालन पोषण करती रही। बुखारा-क्रान्ति और अमीरके भागनेके बाद वह उसी चौकीमे काम करने लगी, जिसमे उसका पति रहता था।

नारबीबिश आठ सालकी हो गयी। पति और बच्चोका वियोग मरियाको बहुत सताने लगा और उसने अपने बन्धुओके साथ समारा (कुयबिशेफ) जाना चाहा, लेकिन नारबीबिशको शिक्षा-दीक्षाकी दिक्कत समझकर उसने उसे अपने साथ ले जाना ठीक नही समझा और आमू-तटपर अवस्थित बालशालामे भर्ती कराकर अपना रास्ता लिया।

नारबीबिशकी गर्दनपर जो काली रेखा दिखलायी पडती थी, वह उसी नम्देकी राखके कारण थी, जिसे तलवारके घावमे भरा गया था।

७

अनायने चार साल बालशालामे शिक्षा पायी, और लिखने-पढने-में सात वर्षकी पढायी जितनी योग्यता प्राप्त की। कक्षामे पढाये-जाने-वाले विषयोंके अतिरिक्त वह विशेष तौरसे और कुछ भी जाननेकी कोशिश करता रहा।

लिखना पढना सीख जानेके बाद पाठ्य पुस्तकोके बाहरकी चीजो-के पढनेमे नारबीबिश उसकी सहायता करती थी। उसके ज्ञानकी सीमा और बढानेमे कुर्बानने भी मदद की। कुर्बान एक कम्सोमोल दलका नायक था—वही कम्सोमोल दल जिसने कुर्बान-जैसे बच्चोको बास-मचियोंके हाथसे मुक्त किया था।

इस समय सेम्योन् सेम्योनाविच् पार्टी मेम्बर होनेवाला था। वह सीमान्तपालोके भीतर कम्सोमोल सगठनका नेतृत्व करता था, और बालशालाके बच्चोको अन्तर्राष्ट्रीयता तथा साम्यवादकी शिक्षा देकर कम्सोमोल बनने लायक बनाता था।

सेम्योन् सेम्योनोविच् एक पीले रङ्गका जवान था। उसकी आँखें सुनहली थीं। वह बहुत मधुर भाषी लेकिन एकबोला था। अपनी सारी शक्ति और सहायतासे जनहितके कार्योंको करता और वैयक्तिक कामोको भी उसी दृष्टि से पूरा करता था। वह कोशिश करता था कि हर जवान सच्चे कम्युनिस्टोका उत्तराधिकारी बने।

सेम्योन् सेम्योनोविच्को उसके समवयस्क तथा बडे-छोटे सभी "सीना" कहते थे, स्थानीय भाषामें जिसका अर्थ छाती है। उसके बारेमें कहा करते थे, "वस्तुत यह जवान आदमीका सीना है, जिसके भीतर दिल अवस्थित है या वह स्तनाग्र है जोकि अल्प वयस्कोको "क्षीर" देकर उन्हे बढाता है।"

अनाथने अपना साधारण ज्ञान और राजनीतिक शिक्षा अधिकतर बना दिया था।

\+ \+ \+

लिखना पढ़ना और राजनीतिक शिक्षा-जैसी बौद्धिक और आत्मिक शिक्षाओके साथ-साथ अनाथ व्यायाम और खेलोमे भी बडी रुचि रखता था। नाव चलाना और गुप्सर-सवारी उसने पहले ही सीख ली थी। उसने अब ऐसे कामोमे और भी अभ्यास बढाया, जिसमे एक था पानीके भीतर मछलीकी तरह चलना। वह नाव और गुप्सर अक्सर नदीमे चला सकता और धारके विरुद्ध भी तैर सकता था। साथ ही बहती धाराके भीतर डूबकर हर तरफ चल सकता था।

अनाथने जलक्रीडाके अतिरिक्त सैनिक शिक्षा भी प्राप्तकी और बदूक चलाना, घोडा दौडाना तलवार चलाना और हथबम फेंकना अच्छी तरह सीखा। सैनिक शिक्षा मे उसे यूरी सेंचिकोफ नामक जवानने सहायता दी। यूरी सेंचिकोफ़ एक घोडसवार कम्पनीका कमां-

डर था और साथ ही कम्पनीके कम्सोमोल-सङ्गठन का सेक्रेटरी भी उसकी बहादुरी, चतुराई और समाजवादी भूमिके प्रेमके कारण लोग उससे बहुत प्रेम करते थे। देश-रक्षा और समाजवादी निर्माणमे लगे लोगोकी जीवन रक्षाके लिए वह सदा अपना जीवन अर्पण करनेके लिए तैयार रहता था।

वह सदा बडे लडकोको अपने साथ लेकर उन्हे सैनिक शिक्षा देता और कोशिश करता कि उसके सारे सुगुण उनके भीतर भी आ जायें।

यूरी सेंचिकोफ़ बासमचियोंकी लडाइयोमे सदा आगे आगे रहता। जब देशमे शान्ति स्थापित हो गयी, तो वह अपना समय सीमान्तपालोमे बिताने लगा और सीमान्त रक्षाके काममे उनकी सहायता करने लगा। इसी समय वह बालशालाके सयाने लडकोको सैनिक शिक्षा भी देता। अनाथने भी उसीसे सैनिक शिक्षा पायी और व्यवहारकी कितनी ही सूक्ष्म बातें सीखी।

+ + +

अनाथ अठारह सालका हुआ। उसने कम्सोमोल बननेके लिए आवेदन-पत्र दिया। उस समय सीमान्तपाल कम्सोमोल-समिति का सेक्रेटरी "सीना" था। अनाथ का आवेदन-पत्र कम्सोमोल-समितिके ब्यूरोके सामने पेश हुआ। सीनाने उससे पूछा ·

—तू क्यों कम्सोमोल बनना चाहता है?

—कम्सोमोल बननेका मेरा अभिप्राय यह है कि समाजवादी निर्माणमे और भी दृढ़ताके साथ काम करूँ, देशको साम्यवादकी ओर ले चलूँ, इस काममे बाधा डालनेवाले जनताके शत्रुओका मुकाबिला करूँ और इस तरह लेनिन-स्तालिनका पुत्र बनकर कम्युनिस्टोंका सच्चा उत्तराधिकारी होनेकी योग्यता प्राप्त करूँ—अनाथने कुछ और भी

कहा—मैं सबसे पहले सीमान्तपाल बनना चाहता हूँ और बाहरी गुप्तचरों, बासमचियों—जोकि बाहरी और भीतरी दुश्मन हैं—तथा इनके हामियों से हाथमे बदूक लेकर लडना चाहता हूँ।

बासमचियो और जासूसोंसे लडनेकी इच्छा अनार्यकी पूरी हुई। उस समय बासमचियोंके बडे गिरोह देशके भीतर नही रह गए थे। उनकी छोटी-छोटी टोलियाँ थीं, जो भगोडे बासमचियो, अमीर तथा विदेशी जासूसोंसे सम्बन्ध जोडकर सोवियत भूमिमे ध्वसका काम कर रही थी। इनके नाश करनेमें सीमान्तपालोंने बहुत काम किया।

अनाथ इस तरह कमसोमोल बना और साथ ही सीमान्तपाल भी।

८

१९३१ का बसन्त था। बासमचियोका कूरबाशी इब्राहीम बेक अफगानिस्तान भाग गया था। वह फिर छिपकर सरहद पार हो सोवियत ताजिकिस्तानमे लूटपाट करने लगा। लाल सेना और लाल गोरिल्लोके साथ सम्मुख लडनेकी हिम्मत नही रखता था, लेकिन अकेले-दुकेले जो गरीब-किसान हाथ लगता, उसे मार डालता, स्त्रियो-लडकियोको बेआबरू करता, कलखोजोंके गोदामो और कोआपरेटिव दूकानो तथा उनके पहरेदारोको मारता।

लेकिन सारे मेहनतकश उसके विरुद्ध खडे हुए थे। ताजिकिस्तान तथा पडोसी उज्बेकिस्तानके रायनोंमे मेहनतकशो तथा कलखोजियो ने लालभालेदार-दल कायम किए थे। वे इब्राहीम बेकके पीछे पडे हुए थे, लेकिन इब्राहीम बेक साँप-बिच्छूकी तरह सदा पर्वत छिद्रो और ऊँची चोटियोंमे भागता फिर रहा था। उसका सोवियत देशके भीतर कोई सहारा नही था, लेकिन उसके विदेश-स्थित मालिक छिपकर उसके पास हथियार और सहायक भेजा करते थे।

इसी वजहसे उस साल सीमान्तपालोका काम ज्यादा और अधिक

अवाबदेह बन गया था। वे हर वक्त नींद छोड़कर रोम-रोमको आँख बनाए सीमान्तकी देखभाल करते थे। इस काममें अनाथ, कुर्बान, निकितिन और नवरोज भी लगे थे। उनके दलका नेता सेम्योन् सेम्योनोविच था। ये लोग रात-दिन बिना सोचे एक शर-वनसे दूसरे शर-वन, एक दलदलसे दूसरे दलदलकी ओर दौड़ते रहते और कानून-विरुद्ध सीमा पार करनेवालों तथा बासमचियोंसे लड़ते।

यूरी सँचिकोफ कभी-कभी रायनोंमें आकर बासमचियोंसे लड़ता और कभी सीमान्तरपर आकर अनाथ और सीमाके कामोंमें मदद करता, जहाँ-कहीं भी समाजवादी मातृ-भूमिकी रक्षाकी बात आती, वहाँ यूरी मौजूद रहता।

× × ×

इधर सेम्योन्के दलमें एक लड़की शामिल हुई। लड़कीकी उम्र १८ सालकी थी, लेकिन वीरता और चतुराईमें २५ साला बहादुरोंका मुकाबिला कर सकती थी। उसकी आँखें मेष-जैसी, चेहरा सफेद, बाल भूरे कद, मझोला और बदन भरा हुआ था। उसके भूरे बाल काली भौंहोंके ऊपर पड़े दर्शकके नेत्रों और हृदयको बाँध लेते थे। हर आदमी उस लड़कीसे बात और हँसी-मजाक करना चाहता था, लेकिन वह हर तरहके मजाक और किसी तरहके खेलको पसन्द नहीं करती थी। न जाने क्यों, सदा उसके दिलमें एक करुणा-वेदना दिखलायी पड़ती थी, जोकि किसी सोवियतजवानमें दिखलायी नहीं पड़ती थी। उसके साथी उसे सदा प्रसन्न रखनेकी कोशिश करते, वेदनाभिभूत होनेके समय उसके दिलबहलाव का प्रबन्ध करते और चित्र-विचित्र कहानियाँ कहते-सुनते, लेकिन इनका उसपर कोई असर नहीं पड़ता। वह मदमस्त आदमीकी तरह हर चीजको बेपरवाहीसे देखती, लेकिन जिस वक्त सीमान्त-पालन सम्बन्धी कोई काम होता,

वह सबसे पहले मैदानमें कूदती और सबसे अधिक खतरेकी जगह जा-खड़ी होती। इस काममें वह कमांडरकी आज्ञाकी भी प्रतीक्षा नहीं करती। उसे इसके लिए सावधान किया गया, सैनिक दंड भी दिया गया, लेकिन जैसे ही वैसा अवसर फिर आया, वह फिर सारी बातोंको भूल गयी।

यह लड़की १५ अप्रैल १९३१ को ताशकन्द से बिना छुट्टी लिए ही अपने स्कूलको छोड़कर सीमापर चली आयी और सीमान्तपालका काम करने लगी।

स्कूल छोड़नेकी बात इस तरह हुई, ताशकन्दके टेक्निकल स्कूलमें पढ़ाईके बाद १२ बजे बीस मिनटके लिए क्लाससे छुट्टी मिली। लड़के जल्दी पहुँचकर चाय पीनेके लिए एक दूसरेको धक्का देते लघु भोजनशाला (बूफेत्) की ओर दौड़े। इसी समय स्कूलकी विश्रामशालामें डाकिया आया। ताशकन्दसे दूर जिनके बन्धु-बांधव रहते थे, वे बूफेत् छोड़कर डाकियेकी तरफ दौड़े। विद्यार्थियोंने डाकियेको चिट्ठीका पता पढ़-पढ़ने देनेका भी मौका नहीं दिया और उसे चारों ओर घेरकर पूछने लगे 'मेरा पत्र है? क्या आज भी मेरे लिए पत्र नहीं लाए? बहुत समयसे घरसे कोई पत्र नहीं मिला।"

विद्यार्थियोंके बीच एक लड़की थी, जो बिना बोले-चाले कुछ सोचती हुई चुप खड़ी थी। डाकियेने चिट्ठीका पता पढ़कर पूछा—नताशा संचिकोवा कौन है?

'मैं हूं'—कहते हुए लड़कीने डाकियेके पास जाकर अपने सुन्दर मांसल हाथको बढ़ाया।

मांसल और बलिष्ठ होते हुए भी लड़कीका हाथ तब तक काँपता रहा, जबतक कि लिफाफा उसके हाथ में नहीं आ गया और उसने उसे पढ़ना नहीं शुरू किया। लड़कीने लिफाफेको पढ़ा। शरीरको आराम हुआ। उसके कलिका-सदृश अधर अर्धमुकुलित हो गए। उसने जरा-सी संतोषकी सांस लेकर अपने आपसे कहा :

—धन्यवाद, अच्छा हुआ, पत्र अपने ही नामका आया—और किनारे

एक बेंचपर जाकर उसने लिफाफा खोलकर पत्र पढना शुरू किया।

लिफाफेके एक कोनेमें तिकोनी सैनिक मुहर थी, जिसके कारण पत्र बिना टिकटके आया था। लड़कीने एक बार फिर लिफाफेपर नजर दौडायी और फाड़कर उसने भीतर से पत्र निकाला। पत्र पेंसिलसे जल्दी-जल्दी लिखा गया था, इसलिए पढ़नेमें दिक्कत हो रही थी। लड़कीको इस तरहके अक्षरोंको देखकर कुछ चिन्ता हुई। इसलिए उसने पहिले पत्रके अंतिम अंशको पढ़कर सन्तोषके साथ कहा—"अपना ही हस्ताक्षर"—फिर उसने पत्र पढ़ना शुरू किया। पत्र रूसी भाषामे था। जिनमे लिखा था :

मेरी प्यारी नताशा !

मैं जानता हूँ कि इस पत्रको पढकर तुझे बड़ा दुःख और चिन्ता होगी, लेकिन मुझे आशा है, तू हर दुःख को एक बोल-शेविककी तरह सहन करेगी।

मैं इस पत्रको ऐसे समय लिख रहा हूँ, जबकि मुझे चारो तरफसे भेड़ियोके एक बड़े झुड अर्थात् बासमचियोकी बड़ी संख्याने घेर लिया है। मेरा जीवन कुछ मिनटोसे अधिकका नही है और मैं अपने कर्तव्यका पालन करने के लिए अपने जीवनको न्यौछावर कर रहा हूँ। यदि वह सलामत रहता, तो समाजवादी मातृभूमि और समाजवादी निर्माणके काममें लगता; लेकिन मेरे विनाशसे देशरक्षा और समाज-वादी निर्माण करनेवालोंकीपक्तिमेसे सिर्फ एक व्यक्ति लुप्त होगा। जिन्दावाद समाजवादी मातृभूमि ! जिन्दावाद बोल-शेविक पार्टी ! जिन्दावाद लेनिन-स्तालिनकी पार्टीके सच्चे उत्तराधिकारी, लेनिन-स्तालिनके कम्सोमोल ! प्रिय नताशा ! तुझसे दुबारा धैर्य धरनेकी प्रार्थना करता हूँ। अपनेको संभाल ! इस समाचारको माँके पास न पहुंचाना ! मेरी ओरसे पत्र लिखकर उसे तसल्ली देती रहना।

[illegible] अंतिम अभिनन्दन और विदाके साथ तेरा प्राणप्रिय
सुहृद भाई युपरी नियाजगुलोफ ८४३१।

नताशा इस पत्रको पढकर बेंचपर गडी-सी निश्चल बैठी रही। उसकी आँखोंके सामने एक काला पर्दा पड गया था, और वह किसी चीजको देख नही रही थी लेकिन वह होश मे रही। इसीलिए बेंचसे नही गिरी। तो भी बदहवासकी तरह किसी बातको समझ नही सकी और न यही जान सकी कि शालामे क्या-क्या चीजें है। एक बार आँख खोलकर देखा तो शालामे कोई नही था। डाकिया चला गया था। कुन्त् भी खाली था। विद्यार्थी अपनी अपनी कक्षाओमे जाकर पढने लगे थ।

उसने खडी होकर एक बार फिर पत्रके ऊपर नजर दौडायी। उसका शरीर कॉप उठा लेकिन यह कंपन भयके कारण नही, बल्कि अत्यन्त क्रोध और घृणाके कारण था। उसकी मैपी आँखें अपनी नर्मीको छोड़कर लडनेके लिए तैयार शेरकी तरह ज्वाला रसा रही थीं। उसन अपने प्राणप्रिय भाईको अपनी मानस-आँखोके सामने अंकित करके कहा

तूने अपने प्राणोंकी बलि उचित स्थान पर दी। शाबाश मेरे वीर भाई लेकिन तूने अपने पत्रम एक स्थान पर ठीक नही लिखा। तूने लिखा कि मेरे नष्ट होनेसे मातृभूमिके रक्षकोंकी पंक्तिमेसे केवल एक व्यक्ति लुप्त हो जाएगा यह ठीक नही है। तेरी बलि सैकडो-हजारो बहादुर जवानोंको देश रक्षकोंकी पाँतीम खीच लाएगी। तरी बलिके बाद देश रक्षकोंकी पंक्तिम सबसे पहले जो तेरी जगहको पूरा करेगी, वह मैं हू तेरी बहिन।

इसके बाद नताशाने न किसीसे बात की न स्कूलके मुख्याध्यापकके पास जाकर छुट्टी मॉगी और न अपने सहपाठियोसे विदाई ली। वह स्कूलके दरवाजेसे निकलकर सीधे स्टेशन पहुँची। उसने वहाँसे मॉके लिए सिर्फ एक पत्र लिखा

'भाईका बार-पाकर मैं उसके पास जा रही हूँ। समय नहीं था

कि तुमसे मिलकर विदा लेती। क्षमा कर, मैया! यहाँसे एक सविस्तार पत्र लिखूँगी।' पत्रको डाकमे डालकर नताशा ट्रेनमें बैठी और उसी सरहदकी ओर चली, जिसके पास उसका भाई बलि हुआ था।

९

८ अप्रैल १९३१ को यूरी सेंचिकोफ बासमचियोंसे मुकाबिला करनेके लिए अपने दलके साथ रायनूम गया हुआ था। सेंचिकोफके सभी सैनिक कम्सोमोल थे और वह स्वयं कम्पनीकी कम्सोमोल समितिका सेक्रेटरी था।

दगरा रायनके न्याजगुलोफ गाँवमे अकस्मात सेंचिकोफके दलका बासमचियोंके एक बड़े गिरोहसे मुकाबिला हुआ। बासमची बीसगुने थे। सेंचिकोफको समय नहीं मिला कि मोर्चाबन्दी करके बासमचियोंसे लड़े। उसे खुले मैदानमे लड़नेके लिए मजबूर होना पड़ा। यद्यपि युद्धमे पहले बदूक और मशीनगनें चली लेकिन बासमचियोंको अपने विरोधियोंकी अल्प सख्याका पता चल गया। उन्होंने अपनी बहुसख्याका लाभ उठाकर कम्पनीके नजदीक पहुँचकर लड़ना शुरू किया। लड़ाईमे गोलीकी जगह बदूकके कुन्दे सगीनें और तलवारो से काम लिया जाने लगा। सेंचिकोफ हर आक्रमणमे अपने दलसे आगे बढ़कर कुछ बासमचियोंका सिर तनसे अलग करने लगा।

सेंचिकोफ लड़ाई जारी रखते हुए कोशिश कर रहा था कि युद्ध क्षेत्रको किसी अनुकूल स्थानमें ले जाय, जिससे मोर्चाबन्दी करके बासमचियोंसे डटकर लड़े लेकिन घड़ी-पर-घड़ी बासमचियोंके पास सहायता पहुँच रही थी और ज्यों ज्यों बासमचियोंको नयी सहायता मिलती, यूरीके दलकी हालत और बुरी होती जाती। सेंचिकोफका मनोरथ सफल नही हुआ। अपनी नयी कुमकके साथ बासमचियोंने यूरीके दलको घेर लिया और मुक्तिकी कोई आशा न रह गयी। सेंचिकोफ अपने दलकी

मुक्तिके लिए बहुत चिंतित था। उसने हुकुम दिया कि दल उचासपर चला जाय, लेकिन वहाँ पहुँचनेका रास्ता न था। सेंचिकोफ़ने हुकुम देने के बाद खुद उचासकी ओर घोडा दौडाया। रास्ता रोकनेके लिए नियुक्त बासमची सेंचिकोफ़ को थाम नहीं सके। सेंचिकोफ़ घेरेको तोडता-ताडता एक ओर पहुँच गया।

बासमचियोंने सेंचिकोफ़को भागते देखकर उसके पीछे घोडा दौडाया, लेकिन जब भी बासमची उसके नजदीक पहुँचते, वह अपने घोडेका मुँह फेरकर उनके रास्तेको रोक आक्रमण करके एक-दोको घोडेसे गिरा देता। बासमची लौटकर भागते।

अबकी बार बासमचियाकी बडी जमात सेंचिकोफ़के पीछे पडी। इससे उसके दलका घिरावा पतला होगया और दल उसे चीरकर कमाडरका हुकुम बजाता उचासपर पहुँच गया। दल उचासपर मोर्चाबन्दी करके वहाँसे बन्दूकों और मशीनगनोंसे बासमचियोंपर गोली वर्षा करने लगा। गोलियाँ बहुत कम बेकार जा रही थीं और बासमची ढेर-के-ढेर जमीनपर लुढक रहे थे। लडाईमें बासमची बहुत मारे गए और अन्तमें भागनेके लिए मजबूर हुए लेकिन भागते हुए भी उनमेंसे कितने ही जान न बचा पाए। बासमचियोंपर विजय हुई, लेकिन कमाडर सेंचिकोफ़का पता नहीं चला।

सूर्य अस्त हो गया और तारा और अंधकार फैल गया। सैनिकोंने मुर्दों और घायलोंके बीच बहुत ढूँढा, किन्तु सेंचिकोफ़ नहीं मिला।

दूसरे दिन सबेरा हुआ। सैनिकोंने फिर अपने कमाडरको खोजना शुरू किया। वे ढूँढते-ढूँढते एक मील तक निकल गए और वहाँ एक नालेके किनारे उन्होंने उसके मृत शरीरको पाया। आस-पास बासमचिया-के तीन मुर्दे पडे थे, जिनमेंसे कुछ तमचेसे मारे गए थे और कुछ तलवार-से काटे गए थे। सेंचिकोफ़ने मरनेसे पहले इन्हें मौतके घाट उतारा था। सैनिक अपने कमांडरके मुर्देको उठा लाए। जाँच-पड़ताल करने पर

उसकी जेबमे एक पत्र निकला। इसी पत्रको पाकर पाकर यूरी सेंचिकोफकी बहिन नताशा सेंचिकोवा देश-रक्षकोकी पाँतीमे सम्मिलित होनेके लिए दौड पडी।

१०

१९३१ के जूनका अन्त था। रातको आकाश निरभ्र था और सितारे चमक रहे थे, जिनके प्रतिबिम्ब कूलके स्वच्छ जलमे दीपककी तरह चमक रहे थे। आमू नदीका जल तरंगित हो रहा था और लहरें एक-एक गज ऊँची सीढी-सी बना रहीं थीं। पीली मिट्टी मिले आमूके जलमें सितारोके प्रतिबिम्ब नही दीख रहे थे, किन्तु पीले पानीकी सीढियाँ सोने-की तरह चमक रही थीं।

कूल और आमू-तटके बीच एक बडा शर-वन दिखलायी पड रहा था, जिसमे हरे सरकडे मरकत-खड्ग-सदृश पत्ते फैलाए खडे थे।

अनाथ, कुर्बान, निकितिन, नवरोज और नताशा, सेम्योन्-सम्योनो-विच्के नेतृत्वमे अपनी देख-भालमे लगे हुए थे। अनाथ और नवरोज एक जगह कुर्बान और निकितिन दूसरी जगह, और नताशा अलग खडी नदीकी ओर देख रही थी। कभी उनकी नजर बयाबानकी तरफ जाती और कभी शर-वनकी ओर। कोई भी गतिशील चीज चाहे उडता चम-गादड़ हो, या पानीमे कूद रही मछली, उनकी नजरसे छूट नहीं सकती थी। सीना (सेम्योन्) बार-बार आदमियोके पास जाता और उन्हें होशियार करता रहता।

अनाथ और नवरोज शर-वनकी उत्तर तरफ थे, जहाँ मे एक तरफ कूल और दूसरी तरफ नदी-तट दिखलाई पडता था।

रात दो घण्टा बीत गयी थी। इसी समय कूलके किनारे अनाथने कोई कालिमा देखी। कालिमा किनारे-किनारे शर-वनकी ओर आ रही थी। अनाथ नवरोजको होशियार रहनेके लिये कहकर अँधेरेमे

लेटकर कूलकी ओर सरकने लगा। अभी वह शर-वनके किनारे कूल-तटपर पहुँचा भी नही था कि कालिमा कूलके उस कोनेपर पहुँच गयी, जहाँ यह शर-वनसे मिलता था और जहाँ जानवरोंके पानी पीनेका घाट था। वहाँ जाकर वह अनाथ की दृष्टिसे अन्तर्धान हो गयी। वह अब जान गया कि कालिमा कोई आदमी है। वह आदमी पानी या शर-वनमे गायब होकर कही भाग न जाये, इसलिए अनाथ उठकर तीरकी तरह पनघटकी ओर दौडा। जब वह वहाँ पहुँचा तो आदमी पानीके किनारे बैठा हाथ मुँह धो रहा था। आदमीको सजग हुए बिना वह उसपर टूट पडा और उसके दोनो हाथोंको अपने हाथोंमे जोरसे कसकर अनाथने उससे पूछा

—तू कौन है? यहाँ क्या काम करता है?

एकाएक पकडे जानेसे आदमी त्रस्त और कपित था लेकिन अनाथकी आवाजको सुनते ही वह हँससर बोला—मैं चर हू और तेरे हाथमे पडनेके लिए आया हू।

यह स्वर सुनकर अनाथका मानसिक तनाव कुछ ढीला हुआ और अपनी ओर पीठ किये आदमीको सामने करके पानीके किनारेसे ऊपर ले गया। फिर उससे पूछा

—तेरा यह काम भयकर है रातको यहाँ आकर तूने ठीक नही किया।

यह आदमी नारबीबिश थी और उसने अनाथके अंतिम प्रश्नका जवाब देते हुए कहा—आदमी किसीसे प्रेम करता है और उसे एक मास नही देखता तो वह उसे देखनेके लिये किसी खतरेकी परवाह नहीं करता।

—अगर दिनमे आती तो उतना खतरा नहीं था। सीमान्तपालोमेसे अधिकाश लोग तुझे जानते हैं, किन्तु इस समय रातमे आना बहुत भयानक बात है। मैं भी तेरी आवाज सुननेसे पहले तुझे नहीं पहिचान पाया।

यदि आगे बढ़कर तेरे पास नहीं आता और तुझे भागता समझती तो आश्चर्य नहीं कि गोली चला बैठती।

—यह हाथ और इनमे सधी बंदूक मुझपर गोली नहीं चला सकती —नारवीबिशने कहते हुए और अनायके हाथोंको मलते हुए और आगे कहा—यह हाथ समाजवादी जन्मभूमिके एथानकुल बेग और शाकुन जैसे दुश्मनोंको पकड़ने और गोली चलानेके लिए हैं।

—अच्छा, तू दिनमें क्यों नही आयी ?

—कामका समय है, मैं इस साल सरकारी परीक्षा देकर तेख्नीकुम् (टेक्निकल हाईस्कूल) समाप्त करना चाहती हूँ।

—आ ! इस साल तेनीख्कुम् समाप्त कर रही है ?

—निष्ठुर ! नारवीबिशने अनायके हाथोंको हिलाते हुए कहा—क्या तू जानता नही कि मैं इस साल तेख्नीकुम् खतम कर रही हूँ। जान करके भी अनजान बन रहा है।

—सचमुच नही जानता—हँसते हुए अनाय ने कहा, लेकिन उसके स्वरसे मालूम होता था कि वह जानता है। इसलिए बातको सुधारते हुये फिर कहा—ठीक है जानता हूँ, किन्तु सीमान्तपर काम बहुत अधिक है और मेरा सारा ध्यान इधर लगा है। इसलिए भूल गया, नहीं तो जान-बूझ कर अनजान क्यो बनता।

—झूठ बोल रहा है—जान-बूझ कर अनजान बननेपर नारवीबिशने कुछ गम होकर कहा।

—क्यों झूठ बोलूँगा। जान-बूझ कर अनजान बननेसे क्या फायदा कि झूठ बोलूँगा !—अनायने हँसते हुए कहा।

—मुझे तो तूने तेख्नीकुम् समाप्त करनेके बादके लिए कुछ वचन दिया था। कहीं ऐसा न हो कि तू किसी नवागन्तुकको दिल दे बैठे और वचन भूल जाये। फिर तो कम्सोमोली और बोलशेविकी कर्तव्यके लिए शाबाश—कहना होगा—नारवीबिशने कहा।

अनायने हँसते हुए कहा—सुन नारवीबिश ! अरे, मैंने जो वचन

मुझे दिया है, उसे भूला नहीं हूँ, लेकिन उस वक्त मैंने सोचा था, कि जबतक तू तेरलीकुम् समाप्त करेगी, तबतक मैं भी अपने दिलके कुछ महत्वपूर्ण कामोंको पूरा कर लूगा और संतोषके साथ हम दोनों रजिस्ट्री करके सुखसे जीवन व्यतीत करेंगे, लेकिन मेरा वह सोचना और अनुमान ठीक नहीं उतरा। अब भी मैं अपने मनके लायक कोई महत्व पूर्ण काम नहीं कर पाया। इसलिए मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि जबतक मैं कोई महत्वपूर्ण काम पूरा न कर लू तबतक के लिए मुझे छुट्टी दे दे—अनाथने नारबीबिशके हाथोंमे अपने हाथको देकर बोलते हुए अपनी निगाह नदीकी ओर डाली और फिर कहना शुरू किया—मैं अपने वचनसे नहीं फिरा, न किसीको दिल दिया और न दूंगा। दुनियामे मेरे दो ही दिलदार (प्रिय) हैं। एक तेरी भी दिलदार है, हमारी समाजवादी जन्म भूमि और दूसरी स्वय तू है ! बस सलाम्। अब विश्वास कर और चाहे न कर।

नारबीबिशने उत्तर देते हुए कहा— विश्वास करती हूँ लेकिन वह महत्वपूर्ण काम क्या है ? क्या मैं उसे जान सकती हूँ ?

—जान सकती है—अनाथने नदीकी ओरसे आँखको हटाए बिना कहा—मैंने प्रतिज्ञा की है कि जबतक अपने बापके हत्यारों और माँके ऊपर आफत ढानेवालों तथा अपनी समाजवादी मातृभूमिके दुश्मनों और अशुभचिन्तकोंको गिरफ्तार या भ्रष्ट न कर लूंगा, तबतक इस कामको स्थगित रखूँगा।

नारबीबिश कुछ बोलना चाहती थी, लेकिन अनाथने एकाएक नदीकी ओर आँख गड़ाकर 'ठहर" कहते हुए उसे बोलनेसे रोक दिया और उसके हाथसे अपने हाथको निकालकर नदीकी ओर सरकते हुए फुसफुसाती आवाजमे कहा—तू यहीं जमीनपर लम्बी पड जा ने, अच्छा है, तू भी मेरी तरह जमीनपर सरकती पीछे-पीछे आ, लेकिन ध्यान रखना कि आस पासका कोई आदमी तुझे न देखे—कहते हुए अनाथ सरकने लगा।

११

अनाथने नारवीविशसे बात करते वक्त नदीके किनारे एक बड़ी कालिमा देखी। वह कालिमा थोड़ी देर खड़ी रह कर फिर अन्तर्द्धान हो गयी। उसके थोड़ी देर बाद कितनी ही कालिमायें प्रकट होकर लुप्त हो गयी। अनाथने नारवीविशसे बात करते यह देखा। फिर उसने पानीके भीतर एक कालिमाको देखा, जो कभी लुप्त होती और कभी प्रकट होती तटके नजदीक आ रही थी।

यही कारण था जो अनाथने जल्दीमे बात काटकर नदीकी ओर सरकना शुरू किया। जब अनाथ नवरोजके पास आया तो कालिमा बहुत नजदीक आ गयी और मालूम हुआ कि एक डोंगी आ रही है। वह कभी लहरके ऊपर आती दिखलायी देती और कभी ढंक जाती। डोंगी धारको काटती किनारेकी ओर शर-वनके पास आकर ठहरी और उसे एक सबल अभ्यस्त हाथने खींचकर बाहर निकाला।

अनाथने देखा कि नवरोज पिनक ले रहा है। उसने जगाकर नावकी ओर इशारा किया और नदी-तटकी ओर सरकना चाहा। नवरोजने आँख खोलकर नावकी ओर देखा, लेकिन सीमान्तपालोंके नियमको भूलकर सिगरेट मुँहमे दबा कर उसने दियासलाई जलायी, जिसमें कि सिगरेटके धुएँसे नींद बिलकुल दूर हो जाय। अनाथ नवरोजकी इस चेष्टाको देखकर मुँहसे आवाज न निकाल सरककर पीछे लौटा और आगको अपनी आड़में लेकर सिगरेटको मुँहमेंसे छीनकर जमीनपर फेंककर उसे पैरोंसे मसल दिया। फिर फुसफुसाती आवाजमें "तू सीमान्तपालोंके नियमोंको कब याद करेगा?" कहते हुए नदीकी ओर सरकने लगा।

लेकिन नाववालोंने नवरोजके दियासलाई जलानेसे शायद समझ लिया, कि यहाँ आदमी हैं, इसलिए वह नावको मोड़कर दूसरे (अफ़ग़ानिस्तानी) तटकी ओर बढ़ने लगे। अनाथ नवरोजके काम पर अप-

सोस करके उसे गाली देता बिजलीकी तरह दौड़कर नदी-तटपर पहुँचा। वहाँसे वह नावके ठहरनेकी जगहकी ओर चला। सीना, निकितिन और मताशा वहाँ पहुँच गये थे। उन्होंने सरकडोंके बीच खड़े होकर सलाह की।

—गोली मारकर नावको डुबानेके सिवा और कोई उपाय नहीं—निकितिनने कहा।

—अगर जिन्दा पकड़ते तो और अच्छा था, क्योंकि तब हम भेद लेनेमें सफल होते—सीनाने कहा।

—पकड़ना ठीक था—निकितिनने कहा—अब जब कि पकड़ नहीं सके तो उन्हें मार डालना ही उचित है।

पकड़ेंगे—अनाथने आकर कहा, जब कि निकितिन अपनी बात समाप्त कर रहा था। उसने शर-वनके भीतर कपड़ेको उतारकर सीनासे पूछा—आज्ञा?

—हाँ, किन्तु सावधानी से पकड़ना—सीनाने कहा।

अनाथके शरीरपर जाँघिएके सिवा और कुछ नहीं था। वह शर-वनके निकलकर नदी-तटपर गया और उसने पानीमें जरा भी आवाज किए बिना धीरेसे नदीमें डुबकी मारी। उसने ५०-६० गजका फासला पानीके भीतर-भीतर मछलीकी तरह तै किया, और फिर ऊपर उठकर जरा देर तक सांसें लेकर डुबकी लगायी। अनाथ इसी तरह नावके पास पहुँचा। मल्लाहने सीमान्तपालोंसे अत्यन्त डरकर भाग निकलनेके लिए बड़ी शक्ति लगायी थी। इसके कारण उसके हाथ-पैर बहुत थक गए थे और कोशिश के बावजूद नाव धारकी ओर बढ़ रही थी।

अनाथने नावके मांगेके पास पहुँचकर रस्सीको बड़ी सावधानीसे हाथ में लेकर पानीके भीतर खींचा और डूबकर रस्सीके छोरको अपनी कमरमें बाँध कर पानीकी तहमें बैठा, फिर नावको किनारेकी ओर खींचने लगा, लेकिन नाववालोंको मालूम न होने देनेके लिए उसने दस गज किनारेकी ओर खींचकर बीस गज धारके साथ जाने दिया।

मल्लाहने देखा कि नाव सिर्फ धारकी तरफ नही बढ़ रही है, बल्कि सोवियत-तटके भी नजदीक होती जा रही है। उसने इसका कारण आमू-नदीकी तीक्ष्ण धारको समझा और पूरी कोशिश करने लगा कि नावको दूसरे किनारेकी ओर ले जाय, लेकिन उसका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया और नाव सोवियत-तटके और नजदीक होती गयी। अब मल्लाहने समझा कि नावको कोई खीच रहा है। उसने "रस्सीको काटो" कहकर नावमे बैठे लोगोको आवाज दी और स्वय घबडाकर डाँड और-जोरसे चलाने लगा।

—किस चीजसे काटे ?—एक नौकारोहीने कहा।

—नावमे छुरा है। उसीसे काटो।—बहुत ढूंढ़-ढाँढ करनेपर छुरा मिला, लेकिन वह बहुत भोथा और मोर्चा खाए-हुए था। उससे रस्सी नही कट सकी। आदमीने हताश होकर कहा—"छुरा नही काटता।"

—ऐसा है तो रस्सी को खोल दो। नाविकने कहा।

लेकिन रस्सीकी गाँठ बहुत दृढ थी, जो पानीसे भीगकर और मजबूत हो गयी थी। उसे भयसे काँपती अंगुलियाँ नही खोल सकी।

नाव तटके बिल्कुल नजदीक आ गयी। नाविकने "कल्तबान" (लठ) कहकर गाली देते हुए डाँड नावमे फेंक दी और स्वय रस्सी खोलने लगा लेकिन अधिक डाँड चलानेसे उसके हाथ फूलकर कड़े हो गए थे और वह रस्सीको खोल नही सका। "कल्तबानो" कहते नावमे बैठे आदमियोको गाली देकर बन्दूक हाथमे लेकर नावके किनारेसे अपने को छिपाकर रस्सी खीचनेवालेके ऊपर आनेकी प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही अनाथ साँस लेनेके लिए ऊपर आया, उसने गोली दागी, लेकिन गोली दागनेसे पहले ही अनाथ पानीके भीतर पहुँच गया। गोलीकी आवाज सुनते ही तीरसे भी बन्दूककी गोलियाँ छूटने लगीं। सीमान्त वालोकी इच्छा मारनेकी नही, बल्कि वे डराकर उन्हें घबड़ा देना चाहते थे, इसीलिए उनकी गोलियाँ नावसे एक पोरसा ऊपरसे निकलीं।

—उधर नाव फिर पहलेकी तरह किनारेकी तरफ खींची जा रही थी। गुप्सरमे हवा भरो, कल्तबानो (लठो)! पागलकी तरह नाविकने कहा और फिर बन्दूकको नाव खींचनेवालेकी तरह करके उसके ऊपर आनेकी प्रतीक्षा करने लगा।

नौकारोहियोमेसे एकने गुप्सरको भरकर चढकर भागनेके लिए उसे पानीमे डाला, लेकिन इसी समय किनारेसे एक गोलीने आकर गुप्सरको फाड दिया और उसकी हवा निकल गयी।

नाविकने— कल्तवान! मैंने तुझे गुप्सरको इसलिए तैयार करनेके लिए नही कहा कि तू उसपर चढ़कर भाग जाये। मैंने तो उसे अपने लिए तैयार करनेको कहा'—कहते अपने सारे कपडेको उतार नगा हो उसने पानीमे कूदना चाहा।

लेकिन अभी पानीमे कूद नही पाया था कि उसके हाथ-पैरोको रस्सीमे फँसाकर शक्तिशाली हाथोने किनारेकी तरफ खीचना शुरू किया। ये मजबूत हाथ कुर्बान और निकितिन के थे। अब नाव किनारेके बहुत नजदीक आ गयी थी और ऊपरसे लगातार गोलियाँ चल रही थी। नौकारोहियोने किनारा पास देखकर अपने कपडोको उतारकर पानीमे कूदना चाहा, लेकिन इसी समय किनारेसे आवाज़ आयी 'हिलना नही; नही तो गोलीसे मार दिये जाओगे।' वे रुक गए। यह आवाज सीनाकी थी। आवाजके साथ तीन गोलियाँ भी सनसनाती हुई नौकारोहियोके कानोके पाससे निकल गयी। वे मुर्दो की तरह नावके भीतर गिर गये। इन गोलियोको सीनाके हुकुमसे नवरोज, नताशा और नारबीबिशने छोडा था। नाव नदी किनारेकी कीचडमे फँसकर सूखी जमीनके पास पहुँचनेसे कुछ गज पहिले ही ठहर गयी।

सीना, नताशा और नवरोज कीचडमे कूदते फाँदते नावके पास पहुँचे। उनके हाथोंमें तमचा था जिसको उन्होंने नौकारोहियोकी तरफ तान रखा था। सीनाने नौकारोहियो से कहा—हाथ ऊपर उठाओ और नावसे बाहर आओ।

लेकिन नौकारोहियोंने पानीमे कूदनेके लिए अपने सारे कपडोको उतार दिया था। इसलिए दोनो हाथोंको उठानेकी जगह वह एक हाथको गुह्य स्थानपर रख, दूसरेको ऊपर उठाके नावके बाहर निकल आये। सीना उनकी इस हालतको देखकर हँसने लगा और दोनो हाथोको उठानेके लिए मजबूर न करके "आगे आगे चलो" कहते हुए उन्हे आगे बढ़ाया। उधर सूखे स्थानपर निकितिनने नाविकका भी एक हाथ आगे और एक हाथ पीछे कर पकड रखा था। सीना, नताशा और नवरोजने भी तीनो नौकारोहियोको ले जाकर नाविकके पास खडा किया।

अनाथ एक कोनेमे बैठा था। उसके शिरमे नारबीबिश और कुर्बान पट्टी बाँध रहे थे। सीनाने उसे देखकर कहा—एय, तुझे क्या हुआ ?—और चिन्तित होकर उसके पास गया।

—कुछ नही हुआ, नाविककी एक गोली सिरके चमडेको छूती चली गयी है। उसी जख्मको बँधवा रहा हूँ।

—गोली एक जगह नही, बल्कि सिरमे कई जगह लगी है और काफी घाव है—कुर्बानने कहा।

—घाव लगा है, लेकिन खतरा नही है—अनाथने कहा—कोई भय नही है, यह इसीसे मालूम होता है कि घायल होनेपर भी मुझे उसका पता नही लगा है, जबतक कि मैंने जमीनपर आकर सिरसे खून निकलते नही देखा है।

—कामकी गभीरताके कारण घावकी गभीरताको जानते हुए भी तूने अनजाना कर दिया होगा—सीनाने कहा—कम्सोमोली वीरोकी यह एक विशेषता है ? शाबाश।

अनाथके घावके बंध जाने पर सीनाने कुर्बानसे कहा—तू नताशाके साथ जाकर नावकी चीजें उठाकर ले आ। मैं नारबीबिसके साथ अनाथ की देखभाल करता हूँ—और फिर उसने किनारे किनारे जाकर अनाथके सूखे कपडेको उसके सामने रखते हुए कहा—भीगा जाँघिया उतार

और सूखे कपड़े पहिन। तुझे बहुत सर्दी लग गयी है—कहकर वह सरकंडों की आड़में चला गया।

अनाथको कपड़ा पहनने में नारबीविशने सहायता दी। इसी समय सीनाने वहाँ रखे अपने सैनिक थैलेको लाकर अनाथके पास बैठकर खोला और उसके भीतरसे एक लाल-लाल बोतल और एक प्याला निकाला। बोतलको खोलकर उसमेंसे लाल ब्रांडी प्यालेमें डाली। फिर उसके ऊपर दूसरे बर्तनसे गरम काफी डालकर उसे अनाथको पिलाया। पीते ही अनाथने शरीरमें गर्मी महसूस की, और कहा—'एक प्याला और दे।" सीनाने दूसरा प्याला भरकर दिया। अनाथने अपनेमें पूरी शक्ति अनुभव की और सीनाकी ओर देखकर बोला—बंदियोंकी तलाशी लेनी चाहिए उनसे पूछ-ताछ करनी चाहिए।

—पूछ-ताछ करेंगे—सीनाने अपनी जगहपर खड़े होकर कहा—लेकिन पूछ-ताछ करनेसे पहले देखना चाहिए कि वे साथ क्या लाए हैं।

× × ×

नावमें दो बहुत भारी बस्ते, चार चमड़ेके थैले, भारी भारी चीजोंसे भरा एक पुराने कपड़ेका थैला, एक भोथा छुरा, एक बंदूक, एक तार सूतोंसे भारी पेटी तथा बंदियोंके कपड़े मिले।

सीनाने सबसे पहले भारी बस्तेको खोला। उसमें ग्यारह-गोलियाँ पचास बंदूकें मिलीं। दूसरे थैलेमें तरह-तरहकी बनावट के तमंचे थे और चमड़ेके थैलोंमें बंदूकों और तमंचों के कारतूस भरे हुए थे। एक थैलेमें एक पत्र मिला, जिसे कुर्बानने टार्चकी रोशनीमें पढ़कर रूसी अनुवाद करके सीनाको सुनाया। पत्रमें हथियारोंके बारेमें लिखनेके बाद लिखा हुआ था

" • ••••••इस वक्त तुम्हारे पास इतने हथियार भेज रहा हूँ। पीछे और भी भेजूँगा। बड़ी सावधानीसे रहो और

—इस भगोड़ेने अपनेको छिपानेका अच्छा ढग निकाला है—निकितिनने कहा।

—मैं भगोड़ी नही हूँ, मैं इस आदमी (एशानकुल बायकी ओर इशारा करके) के हाथसे भागकर बोलेशेविकोंकी शरणमे आयी हूँ।

आवाजको सुनते ही अनाथने—"मेरी मैया, मादर जानम्! तुझे देखे कितने दिन हो गए!" कहते हुए दौड़कर उसने उसे अपने अकमे भर लिया।

इसी समय आकाशमे बहुत नीचेसे उड़ते विमान की घरघराहट सुनायी दी। सबकी आँखें उधर ही गड़ गयी। विमानने लोगोके शिरके ऊपर आकर कुछ कागज फेंके। सीनाने एक कागज उठाकर ऊँची आवाजसे पढ़ा। उसमे लिखा था:

> "बासमचियोका कूरबाशी इब्राहीम बेक जो बाबाताग-की ओर भागता फिर रहा था, कल काफिरनिहाँ नदीके किनारे लाल-भालादारोके हाथों पकड़ा गया।"

सीमान्तपालोंने फिर हर्ष-ध्वनि, करतल-ध्वनि और "उर्रा" घोष किया। नताशा आज तक न हँसी थी, और न उसने हँसी-मजाकमें भाग लिया था, किन्तु, इस समय, "मेरे प्यारे भाईका हत्यारा पकड़ा गया" कह कर निकितिनके हाथोको पकड़कर नाचने लगी। अनाथ भी माँके बँधे शिर और चेहरेको खोलकर उसके साथ नाचने लगा। नारबीबिश भी नाचके अखाड़ेमे उतरी और अनाथ माँको छोड़कर उसके साथ नाचने लगा। बाकी सभी साथी ताली बजाकर ताल देने लगे।

बोझा ढोनेवाली लारी भी पहुँच गयी और बंदियोंके साथ हथियारो को भी उसके ऊपर लाद दिया गया।

भुवनभास्कर ने ऊँचे पर्वतोंके पीछेसे अपने मुखको ऊपर उठाया और उसकी किरणें भूमि और वायु नदीपर बरसने लगीं।

